RNI NO.: MAHHIM/2010/41894

मुंबई, पुणे और नाशिक से एक साथ प्रकाशित

हमारा महानगर

नवरात्रि के पांचवें दिन
मां दुर्गा के स्कंदमाता की पूजा पेज-8

https://www.hamaramahanagar.net

वर्ष 14 ■ अंक 136 ■ पुणे, गुरुवार 3 अप्रैल 2025 ■ पेज 10 ■ मूल्य : ₹ 5.00

संरक्षक : आरएन सिंह

चीन-बांग्लादेश-पाकिस्तान की तिकड़मों से सीखे भारत
पेज-4

प्रदेश के अंदर इन्फ्रास्ट्रक्चर का हो रहा डेवलपमेंट : सीएम योगी
पेज-6

पाकिस्तान की पुरुष हॉकी टीम एशिया कप खेलने आएगी भारत
पेज-9

होश उड़ाने आ रहा अक्षय की केसरी चैप्टर 2 का ट्रेलर
पेज-10

Short News एक नजर

कुणाल कामरा को तीसरा नोटिस जारी

मुंबई। स्टैंडअप कॉमेडियन कुणाल कामरा इस समय अपने शो में पॉलिटिकल जोक करने के चलते सुर्खियों में बने हुए हैं। उन्हें हाल ही में पुलिस ने पूछताछ के लिए पेश होने के लिए तीसरी बार नोटिस जारी किया है, उन्हें 5 अप्रैल को पेश होने और अपना बयान दर्ज करवाने के लिए कहा गया है। हालांकि,मुंबई पुलिस ने कहा कि इससे पहले भी कुणाल कामरा को दो बार पूछताछ के लिए बुलाया गया था, लेकिन वो दोनों ही बार पेश नहीं हुए। कुणाल कामरा ने हाल ही में अपने एक शो का सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर एक वीडियो पोस्ट किया।

राजद अध्यक्ष लालू की तबियत बिगड़ी

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की तबियत बिगड़ गई है। डॉक्टरों ने उन्हें फौरन दिल्ली जाने की सलाह दी। लेकिन, दिल्ली जाने से पहले वह दोपहर में पटना के पारस अस्पताल पहुंचे। यहां पर उनके साथ नेता प्रतिपक्ष उनके साथ हैं। यहां डॉक्टरों की टीम ने जांच किया। थोड़ी देर बाद वह यहां से राबड़ी आवास चले गए। शाम सात बजे दिल्ली जाएंगे। तेजस्वी यादव ने बताया कि हमारे नेता बुधवार शाम सात बजे की फ्लाइट से दिल्ली जा रहे हैं। दिल्ली के एम्स में उनका इलाज होगा।

गुजरात में फाइटर जेट क्रैश, एक पायलट की मौत

जामनगर। गुजरात के जामनगर में बुधवार रात करीब 9 .30 बजे एयरफोर्स का जगुआर फाइटर क्रैश हो गया। प्लेन ने जामनगर एयरफोर्स स्टेशन से उड़ान भरी थी। हादसे में एक पायलट की मौत हो गई। एक गंभीर घायल है। उसका नाम मनोज कुमार सिंह है। पायलट को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। प्रैक्टिस मिशन के दौरान स्टेशन से उड़ान भरने के बाद जामनगर सिटी से करीब 12 KM दूर सुवरदा गांव के एक खुले मैदान में क्रैश हुआ। इस दौरान एक पायलट इजेक्ट होने से कामयाब रहा था, लेकिन दूसरा नहीं निकल सका। क्रैश के बाद प्लेन के कई टुकड़े हो गई।

LoC पर सेना ने पांच घुसपैठिए मार गिराए

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा (LoC) पर सेना ने 4-5 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार गिराया। हालांकि, इसे लेकर सेना का आधिकारिक बयान नहीं आया है। घटना मंगलवार शाम को पुंछ में नियंत्रण रेखा (LoC) पर कृष्णा घाटी सेक्टर के फॉरवर्ड एरिया में हुई। LoC से सटे इलाके में 3 माइन ब्लास्ट हुए और पाकिस्तान की ओर से फायरिंग भी हुई थी। दावा है कि इसी समय आतंकियों ने घुसपैठ की कोशिश की थी, भारतीय सेना ने जवाबी फायरिंग की थी। जिसमें 4 से 5 घुसपैठियों मारे गए। सेना ने कहा- एक अप्रैल को LoC के उस पार से पाकिस्तानी सेना ने घुसपैठ की कोशिश की।

लोकसभा में वक्फ संशोधन बिल पेश

संसद का कानून सबको मानना पड़ेगा : अमित शाह

संसद में वक्फ बिल पर चर्चा के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक-एक कर विपक्ष के सभी सवालों का जवाब दिया। उन्होंने कहा कि वक्फ को चैरिटेबल ट्रस्ट के रूप में परिभाषित किया गया है, जहां लोग वक्फ के लिए जमीन दान देते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकारी संपत्ति का दान नहीं हो सकता है और दान केवल उस जमीन का किया जा सकता है जो व्यक्ति की अपनी हो। अमित शाह ने कहा कि विपक्षी दल देश तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। वक्फ में गड़बड़ी करने वालों को पकड़ा जाएगा। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि वक्फ में पैसे की चोरी हो रही है और इसके कई उदाहरण भी हैं। उन्होंने बताया कि 2014 में चुनाव के दौरान रेलवे की भूमि को वक्फ के नाम पर घोषित कर दिया गया था और गांवों पर भी वक्फ ने कब्जा कर लिया था। इसके अलावा, तमिलनाडु में 1500 साल पुराने मंदिर की जमीन पर भी वक्फ ने कब्जा कर लिया था।

कोई भी गैर-मुस्लिम वक्फ में नहीं आएगा

गृह मंत्री ने कहा कि वक्फ अधिनियम और बोर्ड 1995 में लागू हुआ। वहीं गैर-मुस्लिमों को शामिल करने के बारे में उन्होंने कहा कि धार्मिक मामलों में गैर-मुस्लिमों की कोई भूमिका नहीं होगी। कोई भी गैर-मुस्लिम वक्फ में नहीं आएगा। धार्मिक संस्थानों का प्रबंधन करने वालों में किसी भी गैर-मुस्लिम को शामिल करने का कोई प्रावधान नहीं है। हम ऐसा नहीं करना चाहते हैं। यह एक बहुत गलत धारणा है कि यह अधिनियम मुसलमानों के धार्मिक आचरण में हस्तक्षेप करेगा और उनके द्वारा दान की गई संपत्ति में हस्तक्षेप करेगा।

सरकार को मिला साथियों का साथ

वक्फ बोर्ड में क्या-क्या होगा?

1. बोर्ड में 10 सदस्य मुस्लिम समुदाय से होंगे।
2. 10 सदस्यों में 2 महिलाएं अनिवार्य।
3. वक्फ बोर्ड में 3 सांसद होंगे।
4. 1 सदस्य बार काउंसिल से होगा।
5. दो प्रोफेशनल्स होंगे।
6. बोर्ड में मुसलमानों के हर वर्ग के सदस्य होंगे।
7. 4 गैर मुस्लिम से ज्यादा सदस्य नहीं हो सकते।

विपक्ष के तर्क बिल्कुल बेबुनियाद : रविशंकर प्रसाद

बीजेपी सांसद रविशंकर प्रसाद ने कहा कि विपक्ष के तर्क सुनकर कठनाई हो रही है कि संशोधन होना चाहिए और नहीं भी होना चाहिए। जब भी संविधान की बात होती है तो रोज लाल किताब खूब घूमती है। महिलाओं के हक में कानून लाया जा रहा है तो गैर कानूनी कैसे हो गया।

वक्फ बिल पर बोले गौरव गोगोई

गौरव गोगोई ने कहा कि संधिवान को कमजोर करना, भ्रम फैलाना, मायनॉरिटी के बीच में भारतीय समाज को बांटने का उद्देश्य है कि अल्पसंख्यकों को अलग-थलग करना है। ये तो ईद पर नमाज नहीं पढ़ने दे रहे हैं, ये बात करेंगे, कितने एमपी अल्पसंख्यक हैं। वक्फ संशोधन विधेयक भारत के संविधान के खिलाफ है। सरकार धर्म के आधार पर बांट रहे हैं।

वक्फ बिल लाना बीजेपी का सियासी हठ : अखिलेश

अखिलेश यादव ने कहा कि सरकार कह रही है कि वक्फ बिल से कारोबार होगा, लेकिन धर्म से कारोबार नहीं होता है। रेलवे और डिफेंस की जमीन बेंची जा रही हैं, जोकि सरकार की है। चीन हमारे जमीन पर गांव बसा लिए हैं। कोई सवाल न करे इसके लिए वक्फ बिल लाया गया है। देश के लोगों से उनके घर और दुकान छीनने की साजिश है। वक्फ बिल लाना बीजेपी की सियासी हठ है।

रिजिजू ने पेश किया वक्फ बिल

अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को वक्फ (संशोधन) बिल 2025 पेश किया। इस पर चर्चा की शुरूआत करते हुए रिजिजू ने इस बिल की खूबियां गिनाई। उन्होंने कहा कि इस बिल का मकसद किसी धर्म में हस्तक्षेप करने का नहीं बल्कि वक्फ की संपत्तियों का प्रबंधन है। वहीं विपक्ष के सदस्यों ने बिल की खामियों की ओर सरकार का ध्यान दिलाया। वक्फ बिल पर हो रही चर्चा के दौरान दोनों तरफ के सदस्यों ने सबसे अधिक चर्चा वक्फ कानून की धारा-40 को लेकर की। रिजिजू ने वक्फ कानून के इस प्रावधान को सबसे कठोर प्रावधान बताया है। आइए जानते हैं कि वक्फ कानून की धारा-40 है क्या, जिसकी चर्चा पक्ष-विपक्ष दोनों कर रहा है। मौजूदा वक्फ कानून की धारा-40 वक्फ बोर्ड और ट्रिब्यूनल को किसी संपत्ति को अपनी जमीन घोषित करने की ताकत देता है। लेकिन सरकार ने जो बिल संसद में पेश किया है, उसके पास होने के बाद वक्फ कानून की धारा-40 इतिहास बन जाएगी। इसके बाद किसी भी जमीन को वक्फ संपत्ति घोषित नहीं किया जा सकेगा। बिल पेश करते हुए रिजिजू ने कहा, ₹वक्फ एक्ट में सबसे कठोर प्रावधान धारा 40 थी। इसके तहत वक्फ बोर्ड किसी भी जमीन को वक्फ संपत्ति घोषित कर सकता था। हमने उस प्रावधान को हटा दिया है। उन्होंने कहा कि वक्फ बिल से मुस्लिम समुदाय की जमीन नहीं छीनी जाएगी। उन्होंने कहा कि कुछ विपक्षी नेता लोगों को गुमराह कर रहे हैं। मौजूदा वक्फ अधिनियम की धारा 40 का कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए दुरुपयोग कर रहे हैं। इसी कारण वक्फ संपत्ति में लाखों की बढोतरी हुई है।

निशिकांत दुबे बोले- नेहरू ने पहली बार गीता पर हाथ रखकर शपथ ली थी

भाजपा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे ने कहा- अमेरिका ने राष्ट्रपति बाइबिल पर हाथ रखकर शपथ लेता है। इस्लामिक कंट्री के हेड ऑफ द स्टेट कुरान पर हाथ रखकर शपथ लेते हैं। भारत में गीता पर हाथ रखकर शपथ लेने से प्रॉब्लम है। नेहरू जी जब पहली बार प्रधानमंत्री बने थे, तब संविधान नहीं था। नेहरू जी ने तब गीता पर हाथ रखकर प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी। निशिकांत दुबे ने पूछा कि क्या आप नेहरू को सेक्युलर मानते हो या नहीं।

मुसलमानों को हाशिए पर धकेलने का हथियार, वक्फ बिल पर राहुल गांधी का कड़ा विरोध

वक्फ बिल पर लोकसभा में जारी बहस के बीच नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कड़ा विरोध जताया है। उन्होंने कहा है कि वक्फ (संशोधन) विधेयक मुसलमानों को हाशिए पर धकेलने और उनके निजी कानूनों और संपत्ति के अधिकारों को हड़पने के उद्देश्य से बनाया गया एक हथियार है। राहुल गांधी ने आगे कहा कि आरएसएस, भाजपा और उनके सहयोगियों द्वारा संविधान पर यह हमला आज मुसलमानों पर लक्षित है।कांग्रेस पार्टी इस कानून का कड़ा विरोध करती है क्योंकि यह भारत के मूल विचार पर हमला करता है और अनुच्छेद 25, धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन करता है। इससे पहले, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी वक्फ बिल का विरोध किया। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार का वक्फ (संशोधन) विधेयक पूरी तरह से असंवैधानिक है, जो धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार को कमजोर करता है और व्यक्तिगत कानूनों को राज्य के नियंत्रण में लाने का प्रयास करता है।

शांति वार्ता को तैयार नक्सली

गृहमंत्री विजय बोले-सरकार बातचीत के लिए तैयार

▸▸सेंट्रल कमेटी बोली-सरकार ऑपरेशन रोके

महानगर नेटवर्क

नई दिल्ली

जगदलपुर। बस्तर में सुरक्षाबलों की लगातार कार्रवाई के बाद आखिरकार नक्सली संगठन अब संघर्ष विराम की मांग की है। जारी बयान में कहा कि सरकार यदि ऑपरेशन बंद करने का घोषणा करती है तो नक्सली भी युद्ध विराम को तैयार है। उल्लेखनीय है कि बीते कुछ महीनों से सुरक्षाबलों की टीम लगातार ऑपरेशन चला रही है, जिसमें कई बड़े खूंखार नक्सली लीडर्स को जवानों ने ढेर कर दिया है। वहीं अब केंद्रीय मंत्री के बस्तर आने से पहले नक्सलियों ने युद्ध विराम की मांग की है। सीपीआई (माओवादी) केंद्रीय समिति का हालिया बयान उनके प्रवक्ता अभय द्वारा जारी किया। बयान में तत्काल युद्ध विराम और शांति वार्ता की मांग की गई है, जिसमें भारत सरकार से ऑपरेशन को रोकने का आग्रह किया गया है। उनका दावा है कि इसके कारण आदिवासी समुदायों के खिलाफ काफी हिंसा हुई है। वे सुरक्षा बलों की वापसी और आतंकवाद विरोधी अभियानों को रोकने की मांग की है। साथ ही इन शर्तों के पूरा होने पर बातचीत के लिए तैयार हैं।

युद्ध विराम और शांति वार्ता की अपील

सीपीआई (माओवादी) केंद्रीय समिति ने मध्य भारत में युद्ध को तत्काल रोकने का आह्वान किया है। वे शांति वार्ता को सुगम बनाने के लिए भारत सरकार और सीपीआई (माओवादी) दोनों से बिना शर्त युद्ध विराम की मांग करते हैं।

चार अप्रैल को आ रहे केंद्रीय मंत्री शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बस्तर में नक्सल उन्मूलन नीति, बस्तर पंडुम महोत्सव में शामिल होने छत्तीसगढ़ दौरे पर आ रहे हैं। वे 4 अप्रैल को रायपुर पहुंचेंगे। रायपुर में विश्राम के बाद दूसरे दिन बस्तर पहुंचेंगे। यहां मां दंतेश्वरी के दर्शन करेंगे और बस्तर पंडुम महोत्सव के समापन समारोह में शामिल होंगे। इस अवसर पर वे बस्तर के स्थानीय जनप्रतिनिधियों, सुरक्षा बलों के कमांडरों और अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक करेंगे।

दिल्ली में 'आप' के सात विधायक निलंबित

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के बजट सत्र के आखिरी दिन बुधवार को सदन में काफी हंगामा हुआ। बुधवार को विधानसभा में आम आदमी पार्टी (AAP) के विधायकों ने दिल्ली के न्याय मंत्री कपिल मिश्रा के इस्तीफे की मांग को लेकर जोरदार प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन एक दिन पहले दिल्ली के एक अदालत द्वारा 2020 के दिल्ली दंगों में कपिल मिश्रा की कथित भूमिका को लेकर उनके खिलाफ FIR दर्ज करने के आदेश दिए जाने के बाद हुआ। AAP विधायकों का आरोप था कि कपिल मिश्रा की भूमिका दिल्ली दंगों में संदेहास्पद रही है। इसलिए उनसे इस्तीफा लिया जाए। इस विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने किया। आम आदमी पार्टी के विधायक हाथों में तख्तियां और नारेबाजी करते हुए विधानसभा वेल में घुस आए। इस हंगामे के बीच विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कार्रवाई करते हुए सात AAP विधायकों को निलंबित कर दिया।

ड्रोन के जरिए होगा ऊंची इमारतों का सर्वे

पीडब्ल्यूडी विभाग करेगा ड्रोन तकनीकी का उपयोग

100 करोड़ से अधिक की परियोजनाओं पर रखेगा नजर

महानगर संवाददाता

मुंबई

महाराष्ट्र सरकार के लोक निर्माण विभाग(पीडब्ल्यूडी) ने अपने क्षेत्रीय और संभागीय कार्यालयों को ड्रोन प्रौद्योगिकी अपनाने का निर्देश दिया है। विभाग पहली बार ड्रोन तकनीक का उपयोग कर रहा है। ड्रोन तकनीक का उपयोग कर सभी सूचनाओं को एकत्र कर एक डाटाबेस बनाया जाएगा। पीडब्ल्यूडी विभाग की तरफ से जारी परिपत्र में ड्रोन उपयोग के लिए व्यापक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। परिपत्र में कहा गया है कि जिन पुलों या पुल के हिस्सों की प्रत्यक्ष जांच करना संभव नहीं होगा, ऐसे पुलों का मानसून पूर्व या मानसून के बाद निरीक्षण में ड्रोन का उपयोग किया जाना चाहिए।

परिपत्र में कहा गया है कि 18 मीटर से ऊंची हाईराइज इमारतों का बाहरी निरीक्षण तथा प्रत्यक्ष

रूप से छत की जांच संभव नहीं होने पर उनका परीक्षण ड्रोन के जरिए किया जाएगा। पीडब्ल्यूडी विभाग विभिन्न परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण करता है। भूमि अधिग्रहण की अधिसूचना प्रकाशित करते समय ड्रोन इमेजिंग की जानी चाहिए, ताकि भूमि अधिग्रहण की बाद की प्रक्रिया में इसका उपयोग किया जा सके। यदि 10 एकड़ जमीन से अधिक क्षेत्रफल का ट्रॉपोग्राफिक सर्वे आवश्यक है तो ऐसी जमीन का ट्रॉपोग्राफिक सर्वे में ड्रोन का उपयोग किया जाना चाहिए। अब सरकारी की खाली जमीन, भूखंडों का सर्वेक्षण ड्रोन के जरिए किया जाएगा और जगह का नक्शा, सातबारा उतारा, प्रापर्टी कार्ड इत्यादि को तैयार कर लैंड बैंक बनाया जाएगा। खतरनाक स्थिति में पहुंची इमारतों, पुल और सड़कों की जांच ड्रोन के जरिए की जाएगी। मानसून के दौरान बड़े पैमान पर होने वाले भूस्खलन, पुल बहने, सड़कों के बड़े हिस्से जलमग्न होने के मामले में जहां प्रत्यक्ष रूप से जाना संभव नहीं होगा, वहां ड्रोन के जरिए क्षति की निगरानी की जाएगी। 100 करोड़ रुपए से अधिक लागत की परियोजनाओं की वास्तविक प्रगति की जांच के लिए ड्रोन तकनीक का उपयोग कर समय पर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी। क्षेत्रीय कार्यकारी अभियंता को ड्रोन सर्वेक्षण के लिए अन्य विभागों से आवश्यक अनुमति प्राप्त करनी होगी।

MP-छत्तीसगढ़ समेत पांच राज्यों में ओले गिरेंगे

राजस्थान-गुजरात में हीटवेव | ओडिशा में आंधी का अलर्ट | 50kmph होगी हवा की रफ्तार

महानगर नेटवर्क

भुवेश्वर/नई दिल्ली

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना में बुधवार को तेज बारिश की संभावना है। साथ ही ओले भी गिर सकते हैं। गुजरात के सौराष्ट्र, आंध्र प्रदेश के 30 मंडलों, नॉर्थ ईस्ट के मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और नगालैंड में हीटवेव चल सकती है। राजस्थान में कई जिलों में पारा 35 से 40 डिग्री के बीच पहुंच सकता है। महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान के कुछ हिस्सों में हल्की बारिश भी हो सकती है। केरल में भारी बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग ने ओडिशा के 15 जिलों में आंधी-तूफान का यलो अलर्ट जारी किया है। इस दौरान 50-60 kmph की रफ्तार से हवा चलेगी। 7 अप्रैल तक राज्य में ऐसा ही मौसम बना रहेगा। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को जोड़ने वाला श्रीनगर-लेह NH1 दोबारा खुल गया है।

ओडिशा के लिए IMD अलर्ट

ओडिशा में 50-60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने से बागान, बागवानी, खड़ी फसलें, कमजोर ढांचे, कच्चे घर, दीवारें और झोपड़ियां क्षतिग्रस्त हो सकती हैं। IMD ने घर के अंदर रहने, आंधी के समय खिड़कियां और दरवाजे बंद रखने को कहा है। साथ ही कहा कि इस दौरान संभव हो तो यात्रा करने से बचें।

ऑर्गन डोनेशन पर सरकारी कर्मचारियों को 42 दिन की छुट्टी

गवर्नमेंट डॉक्टर की मंजूरी लेनी होगी

अंगदान को बढ़ावा देने के लिए केंद्र का फैसला

महानगर नेटवर्क

नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के लिए ऑर्गन डोनेशन (अंगदान) पर 42 दिन की स्पेशल कैजुअल लीव देने का प्रावधान किया है। लोकसभा में केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने इस संबंध में जानकारी दी। यह छुट्टी सर्जरी के टाइप पर निर्भर नहीं करेगी और इसे सरकारी डॉक्टर की सिफारिश पर अधिकतम 42 दिनों तक लिया जा सकता है। यह आमतौर पर अस्पताल में भर्ती होने के दिन से शुरू होगी, लेकिन जरूरत पड़ने पर सर्जरी से एक सप्ताह पहले भी ली जा सकती है। यह प्रावधान 2023 में कार्मिक मंत्रालय के आदेश के तहत लागू किया गया था, जिससे ऑर्गन डोनेशन को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

सीजीएचएस के तहत सरकारी कर्मचारियों और उनके परिवार को सस्ते दरों पर इलाज, दवाएं और अस्पताल में भर्ती की सुविधा मिलती है। रिटायरमेंट के बाद भी सीजीएचएस की सुविधा का लाभ उठाया जा सकता है।

महिलाओं को 6 महीने की मैटरनिटी लीव और पुरुषों को 15 दिन की पैटरनिटी लीव दी जाती है। गंभीर बीमारी या दुर्घटना की स्थिति में लंबी मेडिकल लीव की सुविधा सरकारी कर्मचारियों को रिटायरमेंट के बाद पेंशन, ग्रेच्युटी और पीएफ की सुविधा। न्यू पेंशन स्कीम के तहत हर महीने वेतन से कुछ पैसे कटते है, जिसे रिटायरमेंट के बाद पेंशन के रूप में दिया जाता है।

सरकारी कर्मचारियों को एलटीसी के तहत हर 4 साल में एक बार हवाई/रेल यात्रा पर रियायत मिलती है। सरकारी क्वार्टर या हाउस रेंट अलाउंस की सुविधा दी जाती है।

सालियान के मौत का मामला

याचिका को उचित पीठ के समक्ष रखने का निर्देश

महानगर संवाददाता

मुंबई

बॉम्बे हाईकोर्ट ने बुधवार को दिशा सालियान के मौत मामले पर सुनवाई की। हाईकोर्ट ने अपने रजिस्ट्री विभाग को पूर्व सेलिब्रिटी मैनेजर दिशा सालियान के पिता सतीश सालियान द्वारा दायर याचिका को उचित पीठ के समक्ष रखने का निर्देश दिया, जिसमें उनकी बेटी की मौत की सीबीआई जांच और विधायक आदित्य ठाकरे के खिलाफ एफआईआर की मांग की गई है। याचिका न्यायमूर्ति रेवती मोहिते डेरे और नीला गोखले की खंडपीठ के समक्ष सुनवाई के लिए आई। सालियान के वकीलों ने बताया कि याचिका महिलाओं के खिलाफ अपराध से संबंधित है और यह असाइनमेंट न्यायमूर्ति सारंग कोतवाल की अध्यक्षता वाली खंडपीठ से संबंधित है। इसके बाद अदालत ने हाईकोर्ट के रजिस्ट्री विभाग को निर्देश दिया कि वह याचिका को उस पीठ के समक्ष रखने के लिए कदम उठाए।

अंधेरी में लोगों को अगले 45 दिनों तक करना होगा ट्रैफिक का सामना

गोखले ब्रिज का काम अंतिम चरण में पंहुचा

महानगर संवाददाता
मुंबई

अंधेरी के लोगों को एक बार फिर भारी ट्रैफिक का सामना करना पड़ेगा। गोखले ब्रिज का काम अपने अंतिम चरण में पहुंच गया है। गोखले ब्रिज से तेली गली ब्रिज तक जाने वाली सड़क का काम शुरू होने के कारण ट्रैफिक पुलिस ने 1 अप्रैल से 15 मई (45 दिनों) तक कई मार्गों में बदलाव किए हैं।

मनपा की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार गोल्ड स्पॉट जंक्शन से गोखले ब्रिज (पश्चिम दिशा) और गोखले ब्रिज से गोल्ड स्पॉट जंक्शन (पूर्व दिशा) तक वाहनों की नो-एंट्री होगी। इसके बजाय गोल्ड स्पॉट जंक्शन से अंधेरी वेस्ट की ओर जाने वाले वाहन तेली गली ब्रिज के पूर्वी मार्ग से होकर गोखले ब्रिज के जरिए आगे बढ़ेंगे। वहीं गोखले ब्रिज से गोल्ड स्पॉट जंक्शन की ओर जाने वाले वाहन तेली गली स्लिप रोड के जरिए अपना रास्ता तय करेंगे। यह जानकारी ट्रैफिक पुलिस द्वारा जारी नोटिस में दी गई है। मनपा के एक अधिकारी ने बताया कि पहले यह सड़क डामर की थी, जिसे अब कंक्रीट किया जा रहा है। फिलहाल गोखले ब्रिज का केवल एक हिस्सा खुला है,जिस पर दोनों दिशाओं में ट्रैफिक चल रहा है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि वैकल्पिक मार्ग भारी ट्रैफिक को संभालने में सक्षम नहीं होंगे जिससे भीड़भाड़ की समस्या और बढ़ेगी।

ब्रिज को मई तक खोलने की योजना है

पूरा गोखले ब्रिज मई 2025 तक खोलने की योजना है। यह ब्रिज लगभग तीन साल बंद रहने के बाद अब पूरी तरह खोलने को तैयार हुआ है। अंधेरी के निवासी सुहेल मर्चेंट ने कहा कि "जो लोग गोखले ब्रिज और तेली गली ब्रिज का रोजाना इस्तेमाल करते हैं, उन्हें ट्रैफिक जाम का सामना करना पड़ेगा,क्योंकि अब एक ही लेन पर दोनों दिशाओं की गाड़ियां चलेंगी। अंधेरी पूर्व के एक अन्य स्थानीय निवासी ने बताया कि जब तक गोखले ब्रिज पूरी तरह नहीं खुलेगा, तब तक वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे के पश्चिमी हिस्से में रहने वाले लोगों के लिए इस ब्रिज तक पहुंचना संभव नहीं होगा। यह ब्रिज अप्रैल की शुरुआत में खुलना था लेकिन अब ऐसा लग रहा है कि इसे मई के दूसरे सप्ताह में खोला जाएगा ।

ठाणे महापालिका में 175 करोड़ का घोटाला!

ठाणे। ठाणे महानगरपालिका के मलनिःसारण विभाग में बड़े पैमाने पर फर्जी दस्तावेज़ों के ज़रिए ठेकेदारों को ठेके दिलाने का बड़ा घोटाला सामने आया है। मनसे नेता स्वप्नील महिंद्रकर ने इस घोटाले का पर्दाफाश करते हुए दावा किया है कि 175 करोड़ रुपये की नाले निर्माण परियोजना में व्यापक भ्रष्टाचार हुआ है। चौंकाने वाली बात यह है कि महापालिका के अधिकारी सबकुछ जानते हुए भी कार्रवाई करने से बचते रहे। सितंबर और अक्टूबर में विधानसभा चुनाव की पृष्ठभूमि पर ठाणे महानगरपालिका ने नाले निर्माण के लिए 175 करोड़ रुपए की निविदाएं जारी की थीं। लेकिन पारदर्शिता की अनदेखी कर कुछ ठेकेदारों ने फर्जी दस्तावेज़ जमा कर ठेके हासिल कर लिए। माजीवाड़ा-मानपाड़ा, वर्तक नगर, वागले, कलवा, दिवा और मुंब्रा जैसे इलाकों में जारी इन निविदाओं में 'फोर्स कंस्ट्रक्शन' नाम की कंपनी का नाम सामने आया है।

कानून तोड़ने वाले के खिलाफ की जाएगी कार्रवाई : फडणवीस

मनसे पदाधिकारी के सिक्युरिटी गार्ड के पिटाई पर बोले मुख्यमंत्री

राज्य में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति मराठी भाषा बोले,यह सरकार की भूमिका

महानगर संवाददाता
मुंबई

मराठी भाषा न बोलने पर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं द्वारा की गई सिक्युरिटी गार्ड की पिटाई पर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने जवाब दिया है। बुधवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए फडणवीस ने कहा कि मराठी भाषा का सम्मान हो राज्य में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति मराठी भाषा बोले यह सरकार की भूमिका है,लेकिन अगर भाषा के नाम पर कोई कानून तोड़ने का काम करता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य कानून से चलता है। अगर किसी पार्टी का नेता और पदाधिकारी कानून हाथ में लेता है तो उसके खिलाफ कड़क कार्रवाई की जाएगी। देवेंद्र फडणवीस ने बिना नाम लिए मनसे को चेतावनी दी है। बता दें कि बीते दो दिन से सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है,जिसमे मराठी भाषा न बोलने पर मनसे के पदाधिकारी सिक्युरिटी गार्ड की पिटाई करते दिखाई दे रहे है। सोशल मीडिया पर वायरल इस वीडियो पर लोग राज्य के कानून -व्यवस्था पर सवाल उठा रहे है। फडणवीस ने इस मुद्दे पर जवाब दिया है।

तलाशी में पुलिस को मिली डायरी

एकतरफा प्यार में युवती ने की आत्महत्या

महानगर संवाददाता
मुंबई

माटुंगा इलाके में एकतरफा प्यार से परेशान एक युवती द्वारा आत्महत्या के मामला सामने आया है। फिलहाल पुलिस ने मामले में एडीआर दर्ज किया गया है, जिसकी अधिक जांच जारी है। पुलिस को उसकी एक डायरी भी मिली है, जिसमें उसने लिखा है कि निराशा से उसने आत्महत्या का कदम उठाया है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक जिस युवती ने आत्महत्या की है,वो जय हिंद कॉलेज में पढ़ाई करती है। माटुंगा के 14 महले कि बिल्डिंग में आठवें महले पर वह अपने परिवार के साथ रहती थी। वह एक लड़के से प्यार करती थी,लेकिन लड़का उससे प्यार नहीं करता था। इसलिए वह निराश रहती थी। घटना वाले दिन उसके दो दोस्त एक लड़का और एक लड़की उसे समझाने गए। लेकिन उनके साथ वह टेरेस पर गई। जहां इनके बीच बातचीत शुरू हुई। लेकिन उसने छलांग लगा दी और एक टेरेस पर आकर अटक गई। मामले की जानकारी पुलिस को दी गई पुलिस मौके पर पहुंची और उसे अस्ताल में पहुंचाया लेकिन उसकी मृत्यु हो गई। संबंधित मामले में पुलिस ने एडीआर दर्ज किया है। जिसकी जांच चल रही है। फिलहाल पुलिस ने दोनों युवक युवती का स्टेटमेंट दर्ज किया है। जिसमें नाराजगी की बात सामने आयी है। तलाशी में पुलिस को एक डायरी मिली है,जिसमें उसके निराश होने के बात लिखी गई है। फिलहाल पुलिस इसकी जांच कर रही है और यह भी मैच करेगी कि लिखी गई हैंडराइटिंग उसी की है या किसी और की है।

सिद्धिविनायक मंदिर ट्रस्ट ने शुरू किया सिद्धिविनायक भाग्यलक्ष्मी योजना

योजना के तहत नवजात बच्चियों की मदद की जाएगी, श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर ट्रस्ट की बढ़ी वार्षिक आय

मुंबई। सोमवार को प्रभादेवी स्थित श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर ट्रस्ट ने 'श्री सिद्धिविनायक भाग्यलक्ष्मी योजना' शुरू करने की महत्वपूर्ण घोषणा की। इस योजना के तहत अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर सरकारी अस्पताल में जन्म लेने वाली बच्चियों की शिक्षा और उनको सशक्तिकरण बनाने के लिए आर्थिक मदद की जाएगी। श्री सिद्धिविनायक मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष आचार्य पवन त्रिपाठी ने यह जानकारी दी। त्रिपाठी ने बताया कि योजना के तहत नवजात बच्चियों के माँ के बैंक खाता में आर्थिक मदद के रूप में 10 हजार रुपए जमा की जाएगी। आचार्य त्रिपाठी ने बताया कि श्री सिद्धिविनायक मंदिर न्यास ट्रस्ट के अध्यक्ष सदानंद सरवणकर (राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त) की उपस्थिति में 'श्री सिद्धिविनायक भाग्यलक्ष्मी योजना' लागू करने का प्रस्ताव रखा गया है, जिसे सर्वसम्मति से पास कर अंतिम मंजूरी के लिए सरकार के पास भेजा गया है। सरकार की मंजूरी मिलने के बाद इस योजना के मानदंड घोषित कर दिए जाएंगे।

आचार्य पवन त्रिपाठी ने कहा कि इस योजना को लागू करने का मकसद नवजात बच्चियों के जन्म के बाद माता-पिता को प्रोत्साहित करना उनकी शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने और लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए प्रयास करने के उद्देश्य है.इस योजना के तहत बच्चियों के माता -पिता की आर्थिक मदद के रूप में एक फिक्स रकम माता के बैंक खाते में जमा की जाएगी ताकि लड़कियों के बड़ा होने पर उसे अच्छी शिक्षा मिल सके।

अनुमान से अधिक हुई कमाई

श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर ट्रस्ट को एक साल में करीब 133 करोड़ रुपये की आय हुई है। अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 के बीच ट्रस्ट को करीब 114 करोड़ रुपए की कमाई की उम्मीद थी। लेकिन ट्रस्ट ने अपने अनुमान से करीब 16 फीसदी ज्यादा कमाई की है,वित्तीय वर्ष 2023-24 में ट्रस्ट की आय करीब 106 करोड़ रुपए रही। इस प्रकार, वार्षिक आधार पर, श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर ट्रस्ट को 31 मार्च को समाप्त वित्तीय वर्ष के लिए लगभग 25 प्रतिशत आय राजस्व प्राप्त हुआ है। मंदिर ट्रस्ट की आय में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 2024-25 में 114 करोड़ आय होने की उम्मीद थी लेकिन 133 करोड़ रुपये की आय हुई है। वहीं एक अप्रैल 2025 से शुरू हुए आर्थिक वर्ष में श्री सिद्धिविनायक मंदिर को 154 करोड़ रुपए की आय होने की उम्मीद है। मंदिर ट्रस्ट को यह आय श्रद्धालुओं द्वारा दिये जाने वाले दान लड्डू की बिक्री और नारलवड़ी की बिक्री सहित अन्य साधनों से होती है।

भिवंडी पालिका की केवल 10% टैक्स वसूली

वित्तीय वर्ष में 88 करोड़ 78 लाख संपत्ति कर वसूला

भिवंडी। मुंबई महानगर क्षेत्र के नगर निगमों की संपत्ति कर की करोड़ों रुपये की वसूली के आंकड़े सामने आ रहे हैं, वहीं भिवंडी महानगर पालिका संपत्ति कर वसूली में एक बार फिर पिछड़ गई है। साल भर में केवल 10% यानी 88 करोड़ 78 लाख संपत्ति कर वसूला गया है। पालिका रिकॉर्ड में 802 करोड़ 79 लाख 98 हजार 620 रुपये की कुल बकाया संपत्ति कर राशि थी। जिसमें 45 हजार 740 विवादित संपत्तियों के 229 करोड़ 52 लाख 95 हजार 755 रुपये और 286 मोबाइल टावरों के अदालती प्रक्रिया में फंसे 36 करोड़ 60 लाख 26 हजार 928 रुपये शामिल हैं। इसके अलावा, 2 लाख 28 हजार 737 संपत्तियों के 536 करोड़ 66 लाख 75 हजार 936 रुपये की संपत्ति कर वसूली राशि है, जिसमें 111 करोड़ रुपये ब्याज और जुर्माना राशि शामिल है। यानी, मूल संपत्ति कर वसूली राशि 425 करोड़ रुपये है, जिसमें 311 करोड़ रुपये पुरानी कर निर्धारण राशि और चालू वित्तीय वर्ष की नई कर निर्धारण राशि 114 करोड़ रुपये है।कर विभाग के उपायुक्त बाळकृष्ण क्षीरसागर ने जानकारी दी है कि इसमें से 88 करोड़ 78 लाख रुपये की वसूली की गई है।

दत्तक बस्ती में भारतीय सद् विचार मंच निराधार पेंशन योजना का शुभारंभ

मुंबई। गुढी पाडवा के पावन अवसर पर समाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था द्वारा ली गई दत्तक बस्ती काजूपाढा.(घोडबंदर रोड, वरदान लोक आश्रम के सामने, ठाणे) में रहने वाले निराश्रित, निराधार,अकेलेपन का दंश झेल रहे, बुजुर्गों और दिव्यांगों के जीवन को आसान,सहज ,सरल जीवन व्यतीत करने के लिए सामाजिक ,साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था भारतीय सद् विचार मंच द्वारा निराधार पेंशन योजना का शुभारंभ (लांचिंग) किया गया। इस योजना के अंतर्गत लाभार्थी को प्रति माह 750/-(सात सौ पचास रुपए) ससम्मान प्रदान किया जायेगा। काजूपाढ़ा निवासी बुजुर्ग महिला,चन्द्रकला सालुंखे इस योजना की पहली लाभार्थी बनीं। इस योजना के अंतर्गत उन्हें अप्रैल,मई और जून -2025 के लिए एक साथ 2250/-(रुपए दो हजार दो सो पचास) की धनराशि प्रदान की गई। काजूपाढ़ा और आस पास की गरीब बस्तियों का संस्था द्वारा सर्वेक्षण किया जाएगा,जिनकी पात्रता होगी,उन्हें भी इस योजना का लाभ मिलेगा। इस अवसर पर बस्ती में सामूहिक आयोजनों के लिए बस्ती के लिए संस्था की ओर से 20 कुर्सियां प्रदान की गईं। इसके पहले भी 20 कुर्सियां और आयोजनों में काम आने वाले आवश्यक बर्तन भी प्रदान किये जा चुके हैं। संस्था अध्यक्ष डॉ. शिवश्याम तिवारी की अध्यक्षता और संस्था संस्थापक, मुख्य मार्गदर्शक डॉ.राधेश्याम तिवारी और वरिष्ठ पत्रकार, आरटीआई कार्यकर्ता अनिल गलगली के मुख्य आतिथ्य में संपन्न इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप में कार्यकारिणी मार्गदर्शक मंडल के सदस्य समाजसेवी श्रीकांत पाण्डेय, इंद्रमणि दुबे और हरिशंकर तिवारी के आलावा संस्था कार्यकारिणी के पदाधिकारी मनोज चतुर्वेदी,सुभाषचंद्र दुबे,शाखा प्रभारी रत्नेश दुबे, उमेश सिंह और कमलाकांत त्रिपाठी उपस्थित थे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में बस्ती के निवासी उपस्थित थे। संस्था के महामंत्री नागेन्द्र मिश्रा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया और स्थानीय कार्यकर्ता प्रमोद तिवारी ने आभार व्यक्त किया। काजूपाढ़ा के स्थानीय कार्यकर्ताओं ने अपना भरपूर सहयोग दिया।

मनपा आधिकारियों पर बनाया जा रहा है दबाव ?

मुंबई। मनपा के वर्षा जल निकासी विभाग की निविदा प्रक्रिया में अनियमितताओं का खुलासा होने के बाद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने तत्काल जांच के आदेश दिए थे, लेकिन अब नई जानकारी सामने आ रही है कि मनपा आयुक्त भूषण गगरानी और अतिरिक्त आयुक्त अभिजीत बांगर पर मूल टेंडर रद्द किए बिना उसी कंपनी का चयन करने के लिए राजनैतिक दबाव डाला जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार सत्ता में शामिल एक खेमा ने संबंधित अधिकारियों को एक विशिष्ट कंपनी को काम देने का आदेश दिया है और उनसे टेंडर की पुनः प्रक्रिया से बचने को कहा है। साथ ही वहीं अधिकारियों को मुख्यमंत्री फडणवीस को सकारात्मक रिपोर्ट सौंपने के भी निर्देश दिए गए हैं। पूरे मामले में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि टेंडर की शर्तें इस तरह से बनाई गई हैं कि जो कंपनी पिछले चार साल से एक ही स्थान पर एक ही काम सफलतापूर्वक पूरा कर रही है,उसे अब इस टेंडर से अयोग्य घोषित कर दिया गया है। यह आरोप जोर पकड़ रहे हैं कि पूरी निविदा प्रक्रिया केवल एक विशेष कंपनी को लाभ पहुंचाने के लिए तैयार की गई थी। हर साल मनपा हिंदमाता और मडकेबुवा चौक क्षेत्रों में बाढ़ को रोकने के लिए बड़ी संख्या में पंप लगाती है।

बकायेदारों पर हुई सख्त कार्रवाई

ठाणे मनपा ने वसूले 149 करोड़ के पानी बिल

ठाणे। ठाणे महानगरपालिका ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में जल उपभोक्ताओं से 148.95 करोड़ रुपए की वसूली कर बड़ी सफलता हासिल की है। यह वसूली पिछले साल की तुलना में 15 करोड़ रुपये अधिक रही। मनपा के जल आपूर्ति विभाग द्वारा किए गए सख्त अनुवर्ती कार्रवाई के चलते अंतिम दिन ही 7 करोड़ रुपये की वसूली संभव हुई।

बता दें कि मनपा ने इस वर्ष चालू बिलों के लिए 147 करोड़ और बकाया बिलों के लिए 78 करोड़ रुपये की वसूली का लक्ष्य रखा था। अब तक 94.54 करोड़ रुपये चालू बिलों और 40.41 करोड़ रुपये बकाया बिलों से वसूले गए हैं। मुख्यालय में भी 14 करोड़ रुपये के बिलों का भुगतान हुआ है, जिससे कुल वसूली 148.95 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। मनपा आयुक्त सौरभ राव के निर्देश पर सितंबर 2024 से ही जल आपूर्ति विभाग ने आक्रामक रणनीति अपनाई। अतिरिक्त आयुक्त संदीप माळवी के मार्गदर्शन में मीटर रीडर्स को साप्ताहिक लक्ष्य दिए गए और अवैध जल कनेक्शनों को तोड़ने की कार्रवाई की गई। उपनगर अभियंता (जल आपूर्ति) विनोद पवार के अनुसार, इस कड़ी निगरानी और सख्त कार्रवाई के चलते 15 करोड़ रुपये की अतिरिक्त वसूली संभव हो सकी। नगर निगम ने बिल भुगतान न करने वाले उपभोक्ताओं के खिलाफ सख्त कदम उठाए हैं। इस दौरान 13,156 जल कनेक्शन काटे गए, 13,837 उपभोक्ताओं को नोटिस भेजे गए, 2,374 मोटर पंप जब्त किए गए और 676 पंप रूम सील किए गए।

श्री नागरदास भूता हाई स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा गुढी पाडवा पर शोभा यात्रा का आयोजन

महानगर संवाददाता
मुंबई

श्री नागरदास डी.भूता हाईस्कूल में गुढी पाडवा पर्व के अवसर पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन शनिवार, 29 मार्च को किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के मार्गदर्शक एवं ट्रस्टी कमलेशजी भूता और ट्रस्टी देवांगीजी भूता उपस्थित थे। विद्यालय के शिक्षण निर्देशक और मुख्याध्यापक के मार्गदर्शन में यह शोभायात्रा आयोजित की गई थी ।

विद्यालय के माध्यमिक विभाग के शिक्षक, सभी विद्यार्थियों और शिक्षकेतर कर्मचारी इस उत्सव में बड़े उत्साह और आनंद के साथ सम्मिलित हुए। रंग-बिरंगे फूलों की मालाओं और रंगोली से विद्यालय को सजाया गया था। दीप प्रज्वलन के पश्चात इष्टदेव की पूजा-अर्चना की गई एवं इसके बाद विद्यालय की पवित्र गुढी को स्थापित कर उसकी पूजा की गई। स्कूल के ट्रस्टियों ने विद्यार्थियों को गुड़ी पाड़वा के महत्व के बारे में बताया और आशीर्वाद दिया। इसके बाद लेजिम, ढोल, बैंजो की धुन पर यह शोभायात्रा निकली।

संत, वारकरी, पोतराज, वासुदेव जैसे वेशभूषा पहन छात्र इस शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए ।

कक्षा 6 के कबीर सिंह, आयुष सिंह, दीप रावरिया ये छात्र वासुदेव की भूमिका में इस शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। कक्षा 6 के हर्ष गुप्ता ने आराध्य विट्ठल की भूमिका निभाई। कक्षा 7 वीं की छात्र सई ने माता रुक्मणि की भूमिका निभाई। कक्षा 7 वीं की छात्रा सुष्मिता ने झांसी की रानी की भूमिका निभाई।अन्य छात्राएं लड़कियां नौवारी साड़ी पहनकर पहन शोभा यात्रा में शामिल हुई। स्कूल के गणवेश में बच्चों ने गुढी पाडवा के घोषवाक्य लिए चल रहे थे। सभी के चेहरे पर एक अलग ही आनंद एवं उत्साह दिख रहा था। लेजिम, ढोल, बंजो की धुन पर यह शोभायात्रा डॉक्टर राधाकृष्ण रोड (अंधेरी पूर्व) से निकलकर पारसी पंचायत रोड, नागरदास रोड से होकर वापस स्कूल तक आई। हिन्दू नव वर्ष की शुभकामनाएं लेकर सभी आनंदित होकर घर गए।

महाप्रबंधक ने मध्य रेल के 11 कर्मचारियों को किया सम्मानित

महानगर संवाददाता
मुंबई

मध्य रेल के महाप्रबंधक धर्म वीर मीना ने दो अप्रैल को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस मुंबई में आयोजित एक समारोह में 11 मध्य रेल कर्मचारियों को संरक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया,जिनमें मुंबई मंडल के 3, भुसावल मंडल के 4, नागपुर मंडल के 2 तथा पुणे मंडल और सोलापुर मंडल के 1-1 कर्मचारी शामिल हैं। संरक्षा पुरस्कार, संबंधित कर्मचारियों की ड्यूटी के दौरान सतर्कता, अप्रिय घटनाओं को रोकने में उनके योगदान और पिछले महीनों के दौरान ट्रेन परिचालन में संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रदान किए गए। प्रत्येक पुरस्कार में एक पदक, प्रशंसा प्रमाण पत्र, अनुकरणीय संरक्षा कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र और 2000/- का नकद पुरस्कार शामिल है।

रेलवे की जमीन पर लगी 306 होर्डिंग में 103 होर्डिंग का मनपा के पास नहीं लेखा जोखा

महानगर संवाददाता
मुंबई

मध्य और पश्चिम रेलवे की जमीनों पर कुल 306 होर्डिंग लगाई गई हैं। इनमें से 179 होर्डिंग्स मध्य रेलवे की जमीन पर और 127 होर्डिंग्स पश्चिम रेलवे की जमीन पर स्थित हैं। खास बात यह है कि मध्य रेलवे की 179 होर्डिंग्स में से 68 और पश्चिम रेलवे की 127 होर्डिंग्स में से 35 होर्डिंग्स किसके द्वारा लगाई गई हैं ,इसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। यह चौंकाने वाली जानकारी आरटीआई कार्यकर्ता अनिल गलगली द्वारा सूचना के अधिकार के तहत की गई जांच में सामने आई है।

आरटीआई कार्यकर्ता ने मनपा के लाइसेंस विभाग से शहर में लगे होर्डिंग्स की विस्तृत जानकारी मांगी थी। मनपा लाइसेंस विभाग ने मध्य, पश्चिम और हार्बर रेलवे की जमीनों पर लगे होर्डिंग्स जानकारी उपलब्ध कराई। मनपा द्वारा दी गई जानकारी में पश्चिम रेलवे की जमीन पर कुल 127 होर्डिंग्स हैं,जिनमें से ए वार्ड में 3, डी वार्ड में 1, जी दक्षिण में 2, जी उत्तर में 12, के पूर्व में 2, के पश्चिम में 1, पी दक्षिण में 10 और आर दक्षिण में 4 होर्डिंग्स ऐसे हैं जिनका कोई मालिक नहीं है। इसी तरह, मध्य रेलवे की जमीन पर कुल 179 होर्डिंग्स में से ई वार्ड में 5, एफ दक्षिण वार्ड में 10, जी उत्तर वार्ड में 2,एल वार्ड में 9 और टी वॉर्ड में 42 होर्डिंग्स ऐसी हैं, जिनका कोई मालिक नहीं है।

रेलवे की जमीन पर लगी होर्डिंगों की मनपा से अनुमति लेना अनिवार्य

घाटकोपर दुर्घटना के बाद रेलवे प्रशासन के लिए पारदर्शिता बनाए रखना बहुत जरूरी है। इतना ही नहीं मनपा नियमों का पूरी तरह से पालन किया जाना चाहिए राज्य सरकार ने भी निर्देश दिया है कि रेलवे की जमीन पर लगी होर्डिंगों की मनपा से अनुमति लेना अनिवार्य है। इसके बावजूद मनपा के पास इन होर्डिंग की जानकारी नहीं होने पर यह होर्डिंग अवैध है ऐसा माना जा सकता है। होर्डिंग्स अनधिकृत हैं, तो रेलवे प्रशासन को इन्हें तुरंत हटाना चाहिए और संबंधित लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। मुंबई में होर्डिंग्स माफिया सक्रिय हैं। मनपा के नए विज्ञापन नीति में बदलाव के चलते अनुज्ञापन विभाग को प्रशासनिक अधिकारियों से हटा दिया गया था। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि बिना अनुमति के अवैध तरीके से आर्थिक लेन-देन किया जा रहा था।

पश्चिम रेलवे ने दिवंगत रेल कर्मचारियों के बच्चों को नियुक्ति पत्र दिये

मुंबई। पश्चिम रेलवे द्वारा सहानुभूति और समर्थन के संकेत के रूप में छह दिवंगत रेल कर्मचारियों के पात्र आश्रितों को अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए। मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक पंकज सिंह द्वारा लाभार्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार,पश्चिम रेलवे द्वारा अपने कर्मचारियों और उनके परिवारों की आर्थिक भलाई को सर्वोच्च स्तर की जिम्मेदारी के साथ प्राथमिकता दी गई है और उसकी रक्षा की गई है। पश्चिम रेलवे द्वारा दिवंगत रेल कर्मचारी के पात्र आश्रितों को कम से कम समय में अनुकंपा के आधार पर नियुक्तियां प्रदान करना सुनिश्चित किया गया है। पिछले साल, जरूरतमंद कर्मचारियों की सहायता के लिए अपने समर्पण का प्रदर्शन करते हुए पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल ने 100 से अधिक अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए थे। साथ ही, पिछले वर्ष के दौरान रिकॉर्ड संख्या में कर्मचारियों को उनके करियर की प्रगति और संबंधित भत्तों के साथ-साथ लाभों को ध्यान में रखते हुए पदोन्नति दी गई थी।

मुंबई सेंट्रल मंडल कर्मचारी कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के प्रति दृढ़ है तथा अपने कर्मचारियों और उनके परिवारों की भलाई को हमेशा महत्व देता है।

उद्धव ठाकरे और उनकी पार्टी से यह उम्मीद नहीं थी : फडणवीस

महानगर संवाददाता

मुंबई

बुधवार को लोकसभा में वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक पेश किया गया.विधेयक को लेकर दिल्ली से महाराष्ट्र तक सियासत गरमाई हुई है.कांग्रेस और शरद पवार की पार्टी के साथ -साथ उद्धव सेना की पार्टी यूबीटी ने संशोधन विधेयक का विरोध किया है.यूबीटी के इस निर्णय के बाद हिंदुत्व मुद्दे पर भाजपा और शिवसेना (शिंदे) ने उद्धव ठाकरे को निशाने पर लिया है.मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि लोकसभा और राज्यसभा दोनों सदनों में वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक पास होगा ऐसा मुझे विश्वास है. विधेयक का विरोध करने वाली उद्धव सेना पर हमला बोलते हुए फडणवीस ने मुझे लगा था कि हिन्दू हृदय सम्राट बालासाहेब

ठाकरे के विचार को जिंदा रखने के लिए वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक का यूबीटी समर्थन करेगी लेकिन विधेयक का विरोध कर उद्धव ठाकरे ने बालासाहेब ठाकरे की विचार को अपनी पार्टी से ख़त्म कर दिया। फडणवीस ने मुझे पूरी उम्मीद है कि वक्फ बिल पूरी तरह से पारित हो जाएगा, बिल में सेक्युलर शब्द का प्रत्यय नजर आ रहा है. वक्फ बोर्ड में मुस्लिम महिलाओं को जगह मिलेगी यह बिल किसी भी समुदाय और धार्मिक मान्यताओं के भी खिलाफ नहीं है. पिछले बिल की खराबी के कारण भूमि का कटाव हो रहा था। जिनकी अंतरात्मा जाग गई है वे इन विधेयकों का समर्थन करेंगे. वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक का विरोध कर हिंदुत्व मुद्दे पर उद्धव ठाकरे की पार्टी चौतरफा घिर गई है.सत्ताधारी पार्टी भाजपा और शिवसेना दोनों उध्दव ठाकरे कर उनकी पार्टी की जमकर खिंचाई कर रहे है. हिंदुत्व मुद्दे पर उद्धव ठाकरे को घेरने के लिए सत्ताधारी पार्टी को एक बड़ा मौका मिल गया है जिसे वो कभी नहीं छोड़ना चाहेगी।

राहुल गांधी के विचार पर चल रहे उद्धव ठाकरे : शिंदे

वक्फ बोर्ड के संशोधन विधेयक का विरोध कर उद्धव ठाकरे और उनकी पार्टी बुरी तरह फंस गई है .शिवसेना प्रमुख और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे को निशाने पर लिया। शिंदे ने कहा कि चुनाव के दौरान मुस्लिम वोटों के लिए राजनीति करने वाले स्वार्थी चेहरे आज वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक का विरोध कर बेनकाब हो गये हैं। बालासाहेब ठाकरे के विचारों को छोड़कर राहुल गांधी के विचार पर चलने वाले उबाठा गुट की दोहरी भूमिका उजागर हो गई है। बुधवार को शिंदे पत्रकारों से बातचीत कर रहे है . शिंदे ने कहा कि स्वार्थ की राजनीति करने वाले लोग जब वक्फ बोर्ड विधेयक के मुद्दे पर हिंदुत्व से संबंध नहीं है,ऐसा बोलते हैं तो उनकी भूमिका के बारे में संदिग्धता निर्माण होती है। अब वे बालासाहेब के विचारों को लेकर आगे बढ़ते हैं या राहुल गांधी जो बोलेंगे उसके अनुसार काम करेंगे, यह देखना महत्वपूर्ण होगा। एकनाथ शिंदे ने कहा कि वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक के मुद्दे पर शिवसेना ने बहुत पहले ही स्पष्ट और दो टूक भूमिका अख्तियार की है। हम कभी भी वोट के लिए स्वार्थ की राजनीति नहीं करेंगे। हिंदू हृदय सम्राट बालासाहेब ठाकरे व धर्मवीर आनंद दिघे के विचारों के साथ हम आगे बढ़ेंगे। हम सत्ता के लिए विचारों के साथ कभी भी समझौता नहीं करेंगे।

महाराष्ट्र दिवस पर नागरिकों को मिलेगा तोहफा

प्रदेश में लागू होगी वन स्टेट वन रजिस्ट्रेशन" नीति

जितेंद्र मिश्रा

मुंबई। आगामी 1 मई महाराष्ट्र दिन पर राज्य की देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली महायुति सरकार प्रदेश में प्रॉपर्टी खरीदने वाले के लिए नई नागरिकों शुरू करेगी। इस योजना के तहत राज्य में कहीं की भी संपत्ति का रजिस्ट्रेशन कहीं से ही कराया जा सकेगा। बुधवार को राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने यह जानकारी दी। बावनकुले कहा कि यह डिजिटल युग है,इसलिए प्रॉपर्टी रजिस्ट्रेशन को भी अपग्रेड करना जरूरी है। हम महाराष्ट्र दिवस यानी 1 मई से राज्य में 'वन स्टेट वन रजिस्ट्रेशन' प्रणाली शुरू करने जा रहे हैं। राजस्व विभाग के एक अधिकारी ने उदाहरण देते हुए बताया कि जैसे मुंबई में रहने वाले किसी व्यक्ति ने नागपुर में कोई प्रॉपर्टी खरीदी। उस प्रॉपर्टी का रजिस्ट्रेशन कराने के लिए नागपुर जाना पड़ता है।

नागपुर की प्रापर्टी का रजिस्ट्रेशन मुंबई में भी किया जा सकेगा

इससे उस व्यक्ति का समय और खर्च दोनों बर्बाद होता है,लेकिन एक मई से ऐसा नहीं होगा। नागपुर की प्रापर्टी का रजिस्ट्रेशन मुंबई में भी किया जा सकेगा। इसका कारण उन्होंने बताया कि इस पहल का उद्देश्य संपत्ति के लेन-देन को सरल बनाना और पंजीकरण प्रक्रिया में दक्षता में सुधार करना है। इससे लोगों का समय और पैसा दोनों बचेगा। राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले कहते हैं कि हमारी सरकार ने 100 दिन की योजना बनाई है। उसी के तहत हमने 'वन स्टेट वन रजिस्ट्रेशन' पर तेजी से काम कर रहे हैं। इस काम के लिए हम लोग अंतिम पड़ाव पर पहुंच गए हैं। एक महीने से हम लोग इसे लागू कर देंगे। इसका फायदा गिनाते हुए राजस्व मंत्री बावनकुले ने कहा कि राज्य की जनता को राजस्व विभाग की सुविधाएं आसानी से मिले इस पर बड़े स्तर पर काम किया जा रहा है। आप यह बदलाव आपको दिखाई देगी।राजस्व मंत्री ने कहा कि इस योजना के शुरू होने के बाद प्रदेश के नागरिकों की बड़ी राहत मिलेगी। प्रापर्टी रजिस्ट्रेशन को लेकर होने वाली परेशानी दूर होगी। रकार के इस नई पहल का प्रॉपर्टी विश्लेषकों ने स्वागत किया है। उनका कहना है कि इससे प्रॉपर्टी खरीदने वालों की परेशानी कम होगी और प्रॉपर्टी रजिस्ट्रेशन ऑफिस में अनावश्यक भीड़भाड़ कम होगी।

गंदगी फैलाने वालों पर लगेगा जुर्माना

मुंबई। बढ़ते प्रदूषण से निपटने के लिए मनपा ने कचरे का निपटान और गंदगी पर अंकुश लगाने के लिए नया कानून ले कर आ रही है। इस नए कानून से कचरा शुल्क लगाने की तैयारी तो है ही साथ ही गंदगी करने वालों पर दंड बढ़ाने का भी निर्णय लिया है। मनपा अब दंड की दर में दो गुना से 10 गुना तक की बढ़ोत्तरी की है। मनपा ने इसी के चलते दंडात्मक कार्रवाई करने के लिए अपने रिक्त पड़े 95 कर्मचारियों के पद को भरने की तैयारी की है। बता दें कि मुंबई में सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी न फैलाएं,खुले में कचरा न जलाएं, सड़क पर गाड़ी न धुलें,कपड़ा न साफ करें,पेशाब न करें, शौचालय न करें,डेब्रिज न फेकें इसके लिए दंड की राशि दो गुने से लेकर 10 गुने तक बढ़ाने की तैयारी की है। मनपा दंड की कार्रवाई करने के लिए लोगों से शिकायत और सुझाव लिया जा रहा है। मनपा के एक अधिकारी ने बताया कि सजेशन-ऑब्जेक्शन मिलने के बाद जून के पहले सप्ताह में उस पर लोगों को बुलाकर सुनवाई होगी,यदि उचित सुझाव मिला तो ड्राफ्ट में संशोधन भी किया जाएगा। फिर नया ड्रॉफ्ट तैयार किया जाएगा इस पूरी प्रक्रिया में एक महीने का समय लग सकता है। हमें उम्मीद है कि जुलाई 2025 से नए सफाई कानून को हम लागू कर सकते है।

नया वाहन खरीदने पर 15% की छूट

महाराष्ट्र सरकार का अहम फैसला

महानगर संवाददाता

मुंबई

महाराष्ट्र सरकार ने एक अहम फैसला लेते हुए स्वेच्छा से अपने वाहन को स्क्रैप करने वाले वाहन मालिकों को पुनः उसी प्रकार का नया वाहन खरीदते समय 15% की कर छूट प्रदान करने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में यह निर्णय लिया। सरकार के इस निर्णय से लाखों लोग अपने पुराने वाहन को हटाकर नया वाहन खरीदने के लिए प्रेरित होंगे।

महायुति सरकार ने पुराने वाहन मालिकों को स्वेच्छा से स्क्रैप (कबाड़) घोषित करने के लिए टैक्स में छूट देने का ऐलान किया है। कैबिनेट बैठक में इस फैसले पर मुहर लगी कि अगर कोई स्वेच्छा से अपना वाहन स्क्रैप करेगा तो नए वाहन पर 15 प्रतिशत कर छूट मिलेगी। सरकार के फैसले मुंबई,ठाणे,पुणे,नाशिक,नागपुर जैसे बड़े शहरों में पुराने वाहनों की संख्या घट सकती है। इससे प्रदूषण पर फर्क पड़ेगा। नई गाड़ियों से प्रदूषण कम होगा। पहले पंजीकृत वाहन स्क्रैपेज केंद्र (आरवीएसएफ) पर ट्रांसपोर्ट वाहनों के पंजीकरण के 8 साल के भीतर और प्राइवेट वाहनों को पंजीकरण से 15 साल के भीतर स्वैच्छिक रूप से स्क्रैप किए गए जाने पर कर में 10 प्रतिशत की रियायत दी जा रही थी। अब से ट्रांसपोर्ट और गैर ट्रांसपोर्ट (निजी) वाहनों को एकमुश्त 15 प्रतिशत की कर रियायत दी जाएगी। ट्रांसपोर्ट श्रेणी के जिन वाहनों पर वार्षिक कर लागू है, ऐसे वाहनों को उनके पंजीकरण की तिथि से आगामी 8 वर्षों तक वार्षिक कर में 15 प्रतिशत की छूट दी जाएगी तथा गैर परिवहन श्रेणी के वाहनों के लिए आगामी 15 वर्षों तक वार्षिक कर में छूट दी जाएगी। पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधा (आरवीएसएफ) में वाहन को स्क्रैप करने के बाद वाहन मालिक द्वारा प्राप्त प्रमाणपत्र कर छूट के लिए अगले दो वर्षों तक वैध रहेगा।

केसरकर के निर्णय को दादा भुसे ने किया स्थगित

मुंबई। पूर्व शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर के निर्णय को वर्तमान शिक्षा मंत्री दादा भुसे ने स्थगित कर दिया है। केसरकर के मंत्री रहते हुए राज्य के सभी सरकारी और स्थानीय निकाय संस्थाओं स्कूलों में एक ही यूनिफॉर्म लागू करने और मुफ्त यूनिफॉर्म की आपूर्ति की जवाबदारी महिला बचत समूह को देने का निर्णय लिया था। वर्तमान शिक्षा मंत्री दादा भुसे ने इस निर्णय को स्थगित कर दिया है। बुधवार को जारी स्कूली शिक्षा और खेल विभाग के शासनादेश में कहा गया है कि एक राज्य-एक गणवेश योजना में संशोधन करने का निर्णय लिया गया है। संशोधित निर्णय के अनुसार मुफ्त यूनिफॉर्म आपूर्ति की जवाबदारी पहले की तरह स्कूल प्रबंधन समिति को होगी। केंद्र सरकार की समग्र शिक्षा कार्यक्रम के तहत सरकारी और स्थानीय निकाय संस्थाओं के स्कूलों में कक्षा पहली से आठवीं तक की छात्राओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग और गरीबी की रेखा से नीचे वाले बच्चों को मुफ्त यूनिफॉर्म प्रदान की जाती है। पूर्व शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर ने एक राज्य एक गणवेश योजना के क्रियान्वयन करते हुए मुफ्त यूनिफॉर्म आपूर्ति की जवाबदारी महिला बचत समूहों को देने का निर्णय लिया था। शर्त रखी गई थी कि छात्र तीन दिन सरकारी योजना और तीन दिन स्कूल की तरफ से निर्धारित यूनिफॉर्म का उपयोग करेंगे। हालांकि वर्तमान शिक्षा मंत्री दादा भुसे ने दीपक केसरकर के निर्णय को स्थगित करते हुए राज्य-एक गणवेश योजना में संशोधन करने का निर्णय लिया है।

100 दिवसीय कार्य योजना के 85% काम पूरे

मुख्यमंत्री फडणवीस ने की कार्यक्रम की समीक्षा, सभी विभाग वेबसाइट पर डालेंगे जानकारी

महानगर संवाददाता

मुंबई

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की अध्यक्षता में बुधवार को सह्याद्री अतिथि गृह में 100 दिवसीय विभागवार कार्य योजना के संबंध में समीक्षा बैठक हुई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री फडणवीस ने संबंधित विभागों को महत्वपूर्ण निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में 100 दिवसीय कार्ययोजना कार्यक्रम को बड़ी सफलता मिली है और इसके तहत अब तक 411 कार्य पूरे हो चुके हैं। 372 कार्य प्रगति पर हैं और वे शीघ्र ही पूरे

हो जाएंगे। इस प्रकार विभिन्न विभागों ने 100 दिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत 85 प्रतिशत कार्य पूर्ण करने का सराहनीय कार्य किया है। मुख्यमंत्री फडणवीस ने आदेश दिया कि 1 मई तक सभी कार्य पूरे कर लिए जाएं, प्रत्येक विभाग 100 दिवसीय कार्यक्रम की जानकारी अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध कराए तथा यदि कोई कार्य अधूरा रह गया है तो उसका कारण भी उपलब्ध कराया जाए। बैठक में कुल 26 विभागों की गतिविधियों की समीक्षा की गई। इन विभागों के 938 मुद्दों में से 411 मुद्दों (44%) पर कार्य पूरा हो चुका है। इसके अलावा, 372 मुद्दे (40%) अंतिम चरण में हैं और निर्धारित समय के भीतर पूरे हो जाएंगे। हालांकि, 155 मुद्दे (16%) अभी तक पूरे नहीं हुए हैं। संबंधित विभागों ने इन कार्यों को पूरा करने में आने वाली समस्याओं के बारे में जानकारी दी। इसके लिए उन्हें 15 दिन का अतिरिक्त समय दिया गया है। मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने सभी विभागों को एक मई तक काम पूरा कर जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। बैठक में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, संबंधित विभागों के मंत्री सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

यूबीटी और शरद पवार गुट के पदाधिकारी भाजपा में हुए शामिल

मुंबई। राज्य में सरकार बनने के बाद भी भाजपा में अन्य पार्टी के नेताओं और पदाधिकारियों के शामिल होने का सिलसिला लगातार जारी है। बुधवार को परभणी जिला पूर्णा बाजार समिति के सभापति बालाजी खैरे,पाथरी पंचायत समिति के पूर्व सभापति अरुण कोल्हे,परभणी जिला मध्यवर्ती बैंक के संचालक बालाजी देसाई सहित उद्धव ठाकरे सेना और शरद पवार की पार्टी से बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता भाजपा में शामिल हुए,भाजपा प्रदेश कार्याध्यक्ष रविंद्र चव्हाण और राज्य मंत्री मेघना बोर्डीकर ने सभी पदाधिकारियों का पार्टी में शामिल किया और उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश महांमत्री विक्रांत पाटिल, प्रदेश मीडिया विभाग के प्रमुख नवनाथ बन सहित अन्य नेता उपस्थित थे।

दो अप्रैल बुधवार को कांग्रेस प्रवक्ता राकेश शेट्टी के नेतृत्व में,महाविकास अघाड़ी (एमवीए) ने मुलुंड में एम.टी. अग्रवाल अस्पताल के निजीकरण के खिलाफ प्रदर्शन किया। जिसमे बड़ी संख्या में महिला कार्यकर्ता शामिल हुई। इस अवसर पर अब्राहम रॉय मनी (अध्यक्ष,उत्तर पूर्व मुंबई जिला कांग्रेस), पुरुषोत्तम दलवी (मुलुंड विधानसभा प्रमुख, शिवसेना) अमित पाटिल (एनसीपी अध्यक्ष, मुलुंड तालुका), अमोल संसारे (शिवसेना शाखा प्रमुख),डॉ. आरआर सिंह और सभी मुलुंड कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष, कांग्रेस सेवा दल, युवा कांग्रेस और एकता एनजीओ के नेता, महिला पदाधिकारी शामिल थे।

13 साल के मासूम की मौत के बाद भी लाश की बेबसी!

ठाणे। भिवंडी के उसगांव इलाके में 13 वर्षीय हर्षद जानू मेढा की मौत पहाड़ी दरकने से हो गई। लेकिन मौत के बाद भी उसकी बेबसी खत्म नहीं हुई। उसका शव अस्पताल ले जाने के लिए एक भी शववाहिनी(एम्बुलेंस) उपलब्ध नहीं थी। और तो और, वहां मौजूद डॉक्टरों ने एंबुलेंस देने से इनकार कर दिया। मजबूरन एक कार में किसी तरह उसका शव ले जाया गया। यह आरोप श्रमजीवी संघटना ने लगाते हुए दोषी अधिकारियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। बता दें कि हर्षद अपने माता-पिता की इकलौती संतान था।

सरकारी जमीन पर अतिक्रमण होगा नियमित

व्यापक नीति तैयार करने के लिए समिति गठित, नगर विकास विभाग का शासन निर्णय जारी

मुंबई। राज्य के छोटे और मध्यम आकार के शहरों में सरकारी जमीन पर हुए अतिक्रमण को नियमित करने के लिए सरकार ने कदम उठाए हैं। इस पर व्यापक नीति तैयार करने के लिए नगर विकास विभाग के प्रधान सचिव (2) की अध्यक्षता में समिति गठित की गई है। इस समिति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए 15 दिन का समय दिया गया है। शहरी विकास विभाग ने बुधवार को इस संबंध में शासन निर्णय (जीआर) जारी किया। महापालिका, नगर पालिका और नगर पंचायत क्षेत्रों में राजस्व, ग्रामीण विकास,शहरी विकास और अन्य विभागों से संबंधित कुछ सरकारी भूमि पर अतिक्रमण किया गया है। ये अतिक्रमणकारी संबंधित स्थानीय स्वशासन निकायों को टैक्स का भुगतान नहीं कर रहे हैं, इसलिए नगरीय विकास विभाग इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि इन संपत्तियों को किराए पर देने से महापालिका, नगर पालिका और नगर पंचायत की आय बढ़ेगी। इस पृष्ठभूमि में सरकारी भूमि पर अतिक्रमण को नियमित करना या सरकारी भूमि को पट्टे पर देकर योजनाबद्ध शहरी विकास को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही स्थानीय निकायों को मिलने वाली विकास निधि और संपत्ति कर के माध्यम से आय बढ़ाने के लिए नीति तैयार करने के लिए एक समिति गठित करने का निर्णय लिया गया है। इस समिति में राजस्व, गृह निर्माण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव या उनके प्रतिनिधि, नगर परिषद प्रशासन निदेशालय के आयुक्त एवं संचालक, नगरीय विकास विभाग के संयुक्त सचिव एवं उप सचिव शामिल हैं। शहरी विकास विभाग के अवर सचिव इस समिति के सदस्य सचिव होंगे।

वसई-विरार शहर महानगरपालिका मुख्यालय पर पत्रकारों ने किया प्रदर्शन

विरार। वसई- विरार महापालिका मुख्यालय के बाहर पत्रकारों ने बुधवार को काले फीते बांधकर किया आंदोलन। यह आंदोलन महापालिका द्वारा जारी की गई एक गलत सूची के खिलाफ था, जिसमें उन पत्रकारों के नाम शामिल थे, जिन्होंने संपत्ति कर का भुगतान किया है, साथ ही उन पत्रकारों के नाम भी शामिल किए गए । इस आंदोलन में पत्रकार संघों,स्थानीय समाचार पत्रों और यूट्यूब चैनलों के पत्रकारों की बड़ी संख्या ने एक जुटता दिखाई। पत्रकारों ने महापालिका प्रशासन से मांग की कि भविष्य में ऐसी गलत सूचना को रोका जाएगा। प्रदर्शन के दौरान,उपयुक्त सदानंद गुरव और उपायुक्त समीर भूमकर (कर) ने पत्रकार शिष्टमंडल से मिलने का आग्रह किया और आयुक्त के दालान में चर्चा करने का प्रस्ताव रखा। हालांकि, पत्रकारों ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और यह स्पष्ट कर दिया कि जब तक आयुक्त या अधिकारी स्वयं उपस्थित नहीं होते, तब तक आंदोलन नहीं रुकने दिया जाएगा।

कुणाल कामरा के फंडिंग को लेकर जांच की मांग

मुंबई। कॉमेडियन कुणाल कामरा द्वारा उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर तंज कसने के मामले में एक नया मोड़ आ गया है। अब इस मामले में आर्थिक अपराध सहखा की एंट्री हुई है। शिवसेना शिंदे सेना ने एक लिखित शिकायत ईओडब्ल्यू में की है,जिसमें कहा गया है कि कामरा के शो के लिए फंडिंग किसने और कहां से की है। ईओडब्ल्यू सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक उन्हें बुधवार को एक शिकायत प्राप्त हुई है। जिसमें कहा गया है कि कामरा के शो के लिए कुणाल को फंडिंग किसने और कहां से की है इसकी जांच की जाए,लेकिन ईओडब्ल्यू ने अबतक कोई जांच शुरू नहीं कि है। मामले में अबतक खार पुलिस ने तीन एफआईआर दर्ज किया है। कुणाल के खिलाफ यह एफआईआर दर्ज की गई है। अलग अलग जिला में दर्ज एफआईआर जीरो-ज़ीरो से खार पुलिस थाने में ट्रांसफर हुई है। चुकी खार पुलिस थाने की हद्द में यह शो हुआ था, इस वजह से यह पूरा मामला खार पुलिस को ट्रांसफर किया गया है। मामले में पेश होने के लिए कुणाल को दो बार नोटिस भी भेजा है,लेकिन वह नहीं आया। पुलिस कुणाल के घर पर भी गई थी,लेकिन उसने दावा किया कि वह मुंबई के घर पर नहीं है।

मुंबई झोपड़पट्टी सुधार मंडल म्हाडा

(महाराष्ट्र गृह निर्माण एवं क्षेत्र विकास प्राधिकरण की एक क्षेत्रीय इकाई)

टेली. नं. – 022-66405484 ई-मेल : eecityslum@gmail.com

संदर्भ क्र. ईई/शहर/एमएसआईबी/ई-निविदा/01/2025-26

ई-निविदा सूचना क्र. 01

कार्यकारी अभियंता (शहर) डिवीजन, मुंबई झोपडपट्टी सुधार मंडल, (म्हाडा की इकाई), **कमरा नं. 539, 4थी मंजिल,** गृह निर्माण भवन, बांद्रा (पूर्व), मुंबई – 400 051 फोन नंबर (022) 66405484 द्वारा किसी भी सरकारी/अर्ध सरकारी संगठन अथवा ठेकेदारों की संबंधित समुचित श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाइन ई-निविदा प्रणाली के जरिये बी1 प्रपत्र (प्रतिशत दर) में 04 कार्यों के लिये खुली/नियमित ई-निविदा आमंत्रित की जाती हैं. विस्तृत निविदा सूचना और निविदा दस्तावेज महाराष्ट्र सरकार के पोर्टल https://mahatenders.gov.in पर उपलब्ध हैं और यहां से डाउनलोड किये जा सकते हैं. बोली दस्तावेज वेबसाइट पर लोड किये जा सकते हैं. निविदा दस्तावेज बिक्री की आरंभिक **तिथि 04.04.2025** को सुबह 10.05 बजे है और तथा निविदा दस्तावेज बिक्री की अंतिम **तिथि 11.04.2025** को **सायं. 5.35 बजे** तक है. शुद्धिपत्र/संशोधन, यदि कोई होगा, तो उसे केवल https://mahatenders.gov.in वेबसाइट पर ही प्रकाशित किया जायेगा. सक्षम प्राधिकारी के पास बिना कोई कारण दर्शाये किसी भी अथवा सभी निविदाओं को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है. शर्तयुक्त प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया जायेगा.

Follow us: @mhadaofficial

सीपीआरओ/ए/237

हस्ता./-
कार्यकारी अभियंता (शहर),
एम एस आई बी बोर्ड, मुंबई

म्हाडा - गृहनिर्माण क्षेत्रातील देशातील अग्रगण्य संस्था

पश्चिम रेलवे

ट्रैक बॉन्डिंग कार्य

वरि. मंडल विद्युत अभियंता (सब), पश्चिम रेलवे, मुंबई सेंट्रल, मुंबई – 400 008 द्वारा **ई-निविदा सूचना क्र. : डब्ल्यूआर-एमएमसीटीओईएसयूबी (ईएसओटी)/11/2025** आमंत्रित की जाती है. **कार्य का नाम** : डीएनएल, डीएनटीएच तथा एसटीए लाइन पर टीआरआर (पी) – 7.429 टीकेएम तथा टीएसआर (पी) – 65.094 टीकेएम , यूपीएल तथा यूपीटीएच लाइन पर टीआरआर (पी) – 17.219 टीकेएम तथा टीएसआर (पी) – 63.968 टीकेएम के संबंध में ट्रैक बॉन्डिंग कार्य. **कार्य की अनुमानित लागत** : ₹ 55,36,822.4/-. **बोली सुरक्षा** : ₹ 1,10,700/-. **जमा करने की तिथि एवं समय** : 30.04.2025 को अधिकतम 15.00 बजे तक, निर्धारित स्वरूप में. **खुलने की तिथि एवं समय : 30.04.2025** को **15.30 बजे. वेबसाइट विवरण** : निविदा वेबसाइट **www.ireps.gov.in** के जरिए देखी और जमा की जा सकती है. 1256

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

ओएचई कार्य

वरि. मंडल विद्युत अभियंता (सब), पश्चिम रेलवे, मुंबई सेंट्रल, मुंबई – 400 008 द्वारा **ई-निविदा सूचना क्र. : डब्ल्यूआर-एमएमसीटीओईएसयूबी (ईएसओटी)/13/2025** आमंत्रित की जाती है. **कार्य का नाम** : डीएनएल, डीएनटीएच तथा एसटीए लाइन पर टीआरआर (पी) – 7.429 टीकेएम तथा टीएसआर (पी) – 65.094 टीकेएम, यूपीएल तथा यूपीटीएच लाइन पर टीआरआर (पी) – 17.219 टीकेएम तथा टीएसआर (पी) – 63.968 टीकेएम के संबंध में ओएचई कार्य. **कार्य की अनुमानित लागत** : ₹ 2,54,76,967/-, **बोली सुरक्षा** : ₹. 2,77,400/-. **जमा करने की तिथि एवं समय** : 30.04.2025 को अधिकतम 15.00 बजे तक, निर्धारित स्वरूप में. **खुलने की तिथि एवं समय : 30.04.2025** को **15.30 बजे. वेबसाइट विवरण** : निविदा वेबसाइट **www.ireps.gov.in** के जरिए देखी और जमा की जा सकती है. 1257

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

ई-निविदा सूचना

ई-निविदा नोटिस नं.: TRS-BIA-24-25-CAB-AC-28

कार्य का नाम: इलेक्ट्रिक लोको शेड् भिलाई में 3-फेस लोकोमोटिव के माइनर एवं मेजर निरीक्षण शेड्यूल के दौरान रूफ माउंटेड केव एसी यूनिट की रिपेयरिंग और मेंटेनेस 02 वर्ष की अवधि के लिए।

काम की लागत: ₹ 73,18,513.68 (रुपए तिहत्तर लाख अठारह हजार पांच सौ तेरह और अड़सठ पैसे मात्र) | **बोली सुरक्षा / बयाना राशि जमा:** ₹ 1,46,400.00 (रुपए एक लाख छियालीस हजार चार सौ मात्र) | **कार्य की पूर्णता अवधि:** स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से 24 (चौबीस) महीने।

निविदा समाप्ति की तिथि और समय: दिनांक **22.04.2025** को **11:30** बजे | **वेबसाइट विवरण** और निविदा के विवरण: **http://www.ireps.gov.in** पर देखा जा सकते हैं

सहा. मंडल विद्युत अभियंता (क.च.स्टा), द.पू.म. रेलवे, भिलाई

PR/R/TRS/FL/290

South East Central Railway @secrail

पूर्वोत्तर रेलवे

राष्ट्रपति भारत सरकार की ओर से **उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/रिपेयर,** वास्ते मुख्य कारखाना प्रबन्धक यांत्रिक कारखाना गोरखपुर द्वारा नीचे लिखे कार्य के लिये आनलाईन (ई-टेन्डरिंग) के माध्यम से ई-खुली निविदा आमंत्रित की जाती हैं। **क्रम सं.** : 1 **ई-निविदा सूचना सं. एवं निविदा कार्य का विवरण**: टेण्डर नं.-**"48-जीकेपी-एमडब्लूएस-2024-25"** "कम्प्रेहन्सिव एएमसी ऑफ मैगनाफलक्स टेस्टिंग मशीन फॉर ड्राफ्ट गीयर ऑफ एलएचबी कोचेज सीरीयल नंबर एमटीएमसीबीसी/जीकेपी/19/01-21, मॉडल-यूएनएमटी-15000 सीबीसी, मेक के-इजेक्ट्रानिक्स, (ऐसेट नंबर सीएमटी-90) फॉर 02 ईयर्स, क्वान्टिटी-01 नंबर ऐट मेकेनिकल वर्कशाप, जीकेपी। **अनुमानित लागत (रू.में):** 708000.00 **धरोहर राशि (रू. में):** 14200.00 **निविदा समापन की तिथि एवं अवधि:** 22.04.2025 11.00 बजे **निविदा प्रपत्र का मूल्य:**- रु० शून्य **संविदा की अवधि**-24 माह उपरोक्त ई-निविदाओं का पूर्ण विवरण एवं निविदा में भाग लेने हेतु भारतीय रेल की वेवसाइट संख्या **www.ireps.gov.in** पर देखे।

उप मुख्य यांत्रिक इंजी./रिपेयर यांत्रिक कारखाना,गोरखपुर

मुजाधि/याँत्रिक-01

ट्रेनों में बीड़ी/सिगरेट न पियें

PUBLIC NOTICE

Sub : All that piece or parcel of land admeasuring 726 sq. mtrs, or thereabouts being a portion of Phase I area land being part of CTS no.2053B of Village Erangal, Taluka Borivali, being portion of larger property bearing C.T.S. No.1965, 2053B, 2053C, 2053C1, 2053D, 2053E, 2055B and 2055C, out of Survey No.152, 135(pt), 153 Hissa No.1(pt) and Survey No.74, Hissa No.20 of Village Erangal, along with Villa NO.5 standing thereon comprising of four units admeasuring 2719 sq. ft built up area SAID PROPERTY.

Notice is hereby given that I am investigating the title of my clients Mr. Pandit Nayan Ghosh alias Nayan Jyoti Ghosh and Tulika Ghosh in respect of the property described herein above who are claiming to be entitled to the lease hold rights in the land and ownership rights in the said Property.

i) My clients have acquired the rights in the said property through inheritance by way of the Grant dated 7th March 2018 under a Letters of Administration no.368 of 2017 as being the only surviving heirs and legal representative of Late of Mrs. Roselyne Martine Guillnette Anne Clothilde, who died intestate at Belgium on or about 15.11.2015, being the wife of Shri Pandit Dhruba Ghosh, brother of my clients being the widower as her legal heirs/representatives under the provisions of Succession Act, by which she was governed.

Mrs. Roselyne Martine Guillnette Anne Clothilde died intestate at Belgium on 15.11.2015 and Shri Pandit Dhruba Ghosh expired intestate on or about 10.07.2017.

Any/all persons having any claim in respect of the said property &/or any part thereof by way of heirship, succession, sale, exchange, mortgage, charge, guarantee, gift, trust, maintenance, possession, lease, tenancy, lien, license or beneficial right/interest under any trust, right of prescription or pre-emption or under any agreement or other disposition or under any decree, order or award passed by any Court or Authority or otherwise claiming howsoever are hereby requested to make the same known in writing along with copies of relevant supporting documents to the undersigned at her below mentioned office address or by email on nilaems@yahoo.co.in within a period of 10 days from the date of publication hereof.

If no valid claim is received by me within stipulated time, it shall be presumed that the title of my clients to the said property is free from any encumbrances and the same is clear and marketable.

Adv. NILANJANA M. SHAH
G-31, Ground Floor, Shrinivas Building, Prarthana Samaj Road, Vile Parle (East), Mumbai 400057.
Date : 03/04/2025 Place : Mumbai

नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार चुनाव!

अमित शाह ने अपने बिहार के दौरे में एक बात तो स्पष्ट कर दी कि चुनाव नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। पर यह बात कि चुनाव जीतने के बाद सीएम भी उन्हें ही बनाया जाएगा। इस पर प्रकाश नहीं डाला। हालांकि पटना के बापू सभागार में सहकारिता विभाग के एक कार्यक्रम में गृहमंत्री ने कहा कि 2025 में बिहार में मोदी जी और नीतीश जी के नेतृत्व में बिहार में एक बार फिर से एनडीए की सरकार बनाइये और भारत सरकार को बिहार के विकास का एक और मौका दीजिए। शाह ने यह भी कहा कि बिहार को बदलने में नीतीश कुमार की अहम भूमिका रही है। शाह की इन बातों की सीधा अर्थ है कि नीतीश को किनारे लगाने के बारे में नहीं सोचा जा रहा है। दूसरे शब्दों में नीतीश के नाम पर कोई विवाद नहीं है। पर मोदी जी और नीतीश जी दोनों का नाम लेने और दूसरे खुलकर यह न कहने कि चुनाव जीतने पर नीतीश कुमार के नेतृत्व में सरकार बनेगी, लोगों में संदेह बरकरार रह गया। हालांकि मोदी का नाम पीएम होने के नाते लेने का कोई दूसरा अर्थ नहीं लगाना चाहिए। पर राजनीति संभावनाओं का खेल है इसलिए हर बात के कई अर्थ निकाले जाते हैं। वैसे बिहार प्रभारी विनोद तावड़े, बिहार के दो उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल और पार्टी विधायकों और सांसदों की बैठक में अमित शाह ने घोषणा की कि चुनाव काल में नीतीश कुमार एनडीए के कप्तान होंगे। जनता दल (यूनाइटेड) के प्रमुख नीतीश कुमार पिछले 20 सालों से राज्य के मुख्यमंत्री हैं और भाजपा और लोक जनशक्ति पार्टी चुनाव से पहले उनका 100 फीसदी समर्थन करना मज़बूरी रही हैं। भाजपा को बिहार की राजनीति में फिर से नीतीश कुमार का चेहरा आगे करना होगा। राज्य में हुए 2020 के विधानसभा चुनावों में, भाजपा ने वास्तव में जीत हासिल की थी। भाजपा ने 243 सदस्यीय विधानसभा में 110 सीटों पर चुनाव लड़ा था और 74 विधायक चुने थे। जनता दल (यूनाइटेड) ने 115 सीटों पर चुनाव लड़ा और केवल 43 विधायक जीते। महाराष्ट्र की तरह भाजपा पटना में भी मुख्यमंत्री पद के लिए दावा कर सकती थी, लेकिन भाजपा ने उदारता से नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद दे दिया, जिनके पास कम विधायक हैं। इस घटना को पांच साल हो चुके हैं। विधानसभा चुनाव के बाद पहले से ही इस बात को लेकर तर्क दिए जा रहे हैं कि नीतीश कुमार को महाराष्ट्र की तरह एकनाथ शिंदे जैसी भूमिका निभानी होगी या नहीं। जिस तरह महाराष्ट्र में भाजपा ने पूरे चुनाव के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को नेता बनाए रखा कुछ लगता है उसी तर्ज पर बिहार में चुनाव लड़ने के मूड में है पार्टी। आपको याद होगा महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के प्रचार के दौरान एक बार एक स्टेज पर देवेंद्र फडणवीस और एकनाथ शिंदे एक साथ बैठे हुए थे। पत्रकारों ने फडणवीस से पूछा कि चुनाव परिणाम आने के बाद मुख्यमंत्री कौन बनेगा। तो फडणवीस ने एकनाथ शिंदे की ओर इशारा करके कहा था हमारे मुख्यमंत्री तो यहीं हैं। पर परिणाम आने के बाद ऐसा हुआ नहीं। एकनाथ शिंदे अपना रोना लेकर रोते रहे पर पार्टी को कोई असर नहीं पड़ा। अंत में एकनाथ शिंदे डिप्टी मुख्यमंत्री बनने को तैयार हो गए। आज की तारीख में भाजपा बिहार में शायद इसी रणनीति पर काम कर रही है। चुनाव परिणाम आने के बाद नीतीश कुमार डिप्टी मुख्यमंत्री नहीं बनेंगे , पर हो सकता है कि नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार को डिप्टी मुख्यमंत्री बनाया जाए। पार्टी चाहती है कि चुनाव में सभी लोग एकजुट होकर मेहनत करें। इसमें कोई दो राय नहीं है कि नीतीश की बढ़ती उम्र और उनकी तबीयत की चिंता को भाजपा समझ रही है। भाजपा ये मान कर भी चलती है कि नीतीश की इस स्थिति का फायदा विपक्ष हर हाल में उठाना चाहेगा। ऐसी स्थिति में भाजपा अगर खुलकर नीतीश कुमार को नेता मान लेती है तो इसमें पार्टी का कई तरह से नुकसान हो सकता है। नीतीश के मुख्यमंत्री कैंडिडेट घोषित करते ही भाजपा के समर्थक और कार्यकर्ता निष्क्रिय हो सकते हैं। ऐसी दशा में वे ढीले पड़ सकते हैं। ऐसी स्थिति में जो नीतीश के नेतृत्व से नाराज भाजपा के वोटर हैं वो सीधे-सीधे प्रशांत किशोर की ओर मूव कर सकते हैं। हालांकि भाजपा के लिए यह भी फायदेमंद सौदा ही है। भाजपा ये चाहती है कि एंटी इंकंबेंसी वाले वोट किसी भी सूरत में पूरे के पूरे आरजेडी की ओर न जाए। दिल्ली में यही रणनीति आम आदमी पार्टी ने अपनाई थी। इसलिए कांग्रेस के साथ आप ने समझौता नहीं किया। वहां भी यही तर्क था आम आदमी पार्टी से नाराज वोटर्स भाजपा की ओर पूरी तरह न जाएं इसके लिए कांग्रेस के रूप जनता के सामने एक और विकल्प होने से पार्टी को फायदा होगा। ठीक उसी तरह भाजपा बिहार में भी सोच रही है। शायद यही कारण है कि प्रशांत किशोर को लेकर भाजपा परेशान नहीं है। पिछली बार की तरह, वे बिहार चुनावों में पुराने दल ही एक-दूसरे के राजनीतिक दुश्मन हैं। एक तरफ, भाजपा, जेडी (यू), चिराग पासवान की लोक जनशक्ति और जीतन राम मांझी की एचयूएम और दूसरी तरफ, राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस और महागठबंधन के छोटे दल होंगे। जाति वोट बैंक और सीट बंटवारा दोनों पक्षों के प्रमुख मुद्दे हैं। यह राजद और कांग्रेस के बीच सीट बंटवारे का एक बड़ा परीक्षण है। इन दोनों चुनावों में, बिहार के मतदाताओं ने भाजपा-जनता दल (यू) को एक बड़ा झुकाव दिया। लोकसभा चुनावों में, एनडीए के सांसद 40 में से 30 से अधिक सीटों पर चुने गए। बाद के उपचुनावों में महागठबंधन में मतभेद और दरार भी देखी गई। लालू यादव ने राजीव रंजन उर्फ पप्पू यादव को पूर्णिमा निर्वाचन क्षेत्र की सीट छोड़ने से इनकार कर दिया। जेएनयू छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार लगातार विवादों में फंसे हुए हैं। यह सर्वविदित है कि वे भाजपा विरोधी हैं। वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) की छात्र शाखा, AIASF से CPI में शामिल हुए, और बेगुलसराय से CPI उम्मीदवार के रूप में 2019 का लोकसभा चुनाव लड़ा लेकिन हार गए।

कटाक्ष | सुरेश मिश्र

वक्फ पर मचा है, गली-गली कोहराम
कुछ बैठे अल्लाह संग, कुछ बोलें श्रीराम
कुछ बोलें श्रीराम, सनातन के अवरोधी
हर इक बात पर चिंचियाए हैं मोदी-मोदी
कह सुरेश कविराय वोट की लीला न्यारी
छाती पीट रहे हैं सारे भ्रष्टाचारी

चीन-बांग्लादेश-पाकिस्तान की तिकड़मों से सीखे भारत

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कनाडा को अमेरिका में मिलाने, ग्रीनलैंड की बोली लगाने, मैक्सिको खाड़ी पर अमेरिकी प्रभुत्व जमाने की बात छेड़ सकते हैं तो भारत, चीन के मुकाबले ऐसा क्यों नहीं कर सकता है। चूंकि चीन, रूस, अमेरिका, तीनों देश कहीं न कहीं, किसी न किसी विवाद में उलझे हुए हैं, इसलिए भारत के लिए ऐसा स्वर्णिम मौका फिर कब आएगा, इसका इंतजार करना सियासी मूर्खता होगी।

विभिन्न सुलगते हुए प्रादेशिक-राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय और मानवीय विषयों पर भारतीय राजनेताओं, नौकरशाहों, न्यायविदों, संपादकों, समाजसेवियों और अपने-अपने पेशे में दक्ष लोगों के जो नीतिगत अंतर्विरोध हैं, वह राष्ट्रहित में तो कतई नहीं है। वहीं कुछ लोगों का स्पष्ट मानना है कि इन अंतर्विरोधों का असली स्रोत हमारे संविधान में अंतर्निहित है जो 'विदेशी फूट डालो, राज करो' की नीतियों का 'देशी स्वरूप' मात्र है। अजीब विडंबना है कि समकालीन माहौल में चिन्हित संवैधानिक त्रुटियों को बदलने के लिए जिस राजनीतिक कद के व्यक्ति को आगे आना चाहिए, वह अभी तक आगे नहीं आ पाया है। वैसे तो इतिहास ने पंडित नेहरू, इंदिरा गांधी और नरेंद्र मोदी को सर्वाधिक मौका दिया लेकिन संतुलित राष्ट्रवाद और अटल राष्ट्रीयता की कसौटी पर ये लोग खरे नहीं उतरे। यह कड़वा सच है कि इनके तमाम किंतु-परंतु से स्थितियां और अधिक उलझती गईं। इससे हमारे पड़ोसी देशों का दुस्साहस बढ़ता गया और आज का भारत अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए चीन-अमेरिका-रूस जैसे विदेशी ताकतों पर निर्भर है। वहीं, इनकी स्वार्थपरक बदनीयती से भारत और भारतीयता दोनों वैश्विक चक्रव्यूह में उलझ चुकी है और इस्लामिक चक्रव्यूह में बुरी तरह से फंसती जा रही है। लिहाजा, भारत के पास अब तीन ही विकल्प बचे हैं- पहला, वह विभिन्न चुनौतियों के वक्त खरी उतरी रूसी मित्रता को और मजबूत बनाए, दूसरा, चीनी चालबाजियों के खिलाफ स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाए और तीसरा, इस्लाम विरोधी अमेरिकी गठबंधन में यदि शामिल होना है तो रूस-चीन से बेपरवाह होकर सिर्फ अमेरिका से मजबूत रिश्ते बनाए और विभाजित भारत में हिंदुत्व की भावना को मजबूत बनाए। वहीं, यदि कोई धर्मनिरपेक्षता की बात करे तो यूनिफिकेशन ऑफ इंडिया की बात उठाए, फिर धर्मनिरपेक्षता अपनाएं क्योंकि

इससे चीनी दाल पाकिस्तान-बंगलादेश में नहीं गल पाएगी। ऐसा इसलिए कि अंतर्विरोधों से भरा हुआ व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र देर-सबेर नष्ट हो जाता है। मैं नहीं चाहता कि कतिपय अंतर्विरोधों से भरा हुआ गुलाम भारत और उसके बाद अस्तित्व में आया आजाद भारत भी अपने अमृतकाल यानी न्यू इंडिया के जमाने में 2047 के बाद भी उन्हीं स्थितियों-परिस्थितियों से गुजरे जो इसकी 800 सालों की गुलामी और ममांतक राष्ट्र-विभाजन की मौलिक वजह समझी गई हैं। इसलिए मौलिक व ऐतिहासिक परिवर्तन तभी संभव होगा, जब राजनेता-नौकरशाह-न्यायविद, सैन्य हुक्मरान और अपने-अपने पेशे के दक्ष लोग जाति-धर्म मुक्त होकर एक सशक्त और उदार भारत की नींव रखना चाहेंगे जहां हिन्दू हितों से कोई समझौता नहीं हो जैसे कि पाकिस्तान व बंगलादेश में मुस्लिम हितों से कोई समझौता नहीं किया जाता है। गुजश्ते दशकों में या आजकल अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और मीडिया में चीन-बांग्लादेश-पाकिस्तान की जारी तिकड़मों से भारत को सबक लेना चाहिए और नेपाल, भूटान, म्यांमार, श्रीलंका, मालदीव, अफगानिस्तान आदि की भी नकेल कसते हुए भारत के समग्र हित को साधने की स्पष्ट रणनीति तैयार करनी चाहिए। यह सब कुछ तभी सम्भव होगा जब हमारी सरकार हिंदुत्व की मजबूत राह पकड़ेगी और चीनी शह पर खलता प्रदर्शित कर रहे पड़ोसियों को जमीनी हकीकत से रूबरू करवाएगी। इसके लिए साम, दाम, दंड, भेद की नीतियों की जरूरत भी पड़े तो उसे अपनाने में हमारी सरकार को नहीं हिचकना चाहिए। इस बात में कोई दो राय नहीं कि विविधता हमारी खूबसूरती है लेकिन यही बात धर्मनिरपेक्षता पर तब लागू होगी जब पाकिस्तान-बंगलादेश का विलय भारत में हो जाए। जब तक जर्मनी और इटली की तरह इंडिया का भी एकीकरण नहीं हो जाता, तब तक हिंदुस्तान हिंदुओं का मुल्क है और समकालीन चीनी, पाकिस्तानी, बांग्लादेशी तिकड़मों का जवाब भी हिंदूवादी रणनीति के जरिए ही दिया जा सकता है। इस बात में किसी को संशय नहीं होना चाहिए क्योंकि वेद में स्पष्ट कहा गया है कि संशयात्मा विनश्यति, यानी जिसके मन में संशय हो, उसका विनाश निश्चित है। इस नजरिए से केंद्रीय और विभिन्न राज्यों की सत्ता में मजबूत हुई भाजपा और उसकी मार्गदर्शक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा विभिन्न मौकों पर अडिग हिंदुत्व को लेकर जो संशय दिखाए जा रहे हैं, उससे भविष्य में 'कांग्रेस' मजबूत होगी और भाजपा की दुर्गति कांग्रेस से ज्यादा हो सकती है क्योंकि भारतीय मतदाता बहुत ही मंजे हुए निर्णय लेते हैं। आखिर 'पारसी वधू' पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी वाली गलतियां भी 'वैश्य बहादुर' मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी दुहराएंगे तो फिर कांग्रेस और भाजपा में क्या अंतर रह जाएगा? शायद अंतर है भी नहीं क्योंकि सत्ता में आते ही सुविधाभोगी नौकरशाही और उद्योगपतियों का 'गिरोह' कतिपय अंतरराष्ट्रीय संधियों/मजबूरियों जनित लाभ-हानि का वास्ता देकर राजनीतिक हृदय परिवर्तन करवाने में सफल हो जाते हैं! हालांकि इससे समय तो कट जाता है लेकिन भारत और भारतीयता के लिहाज से दूरदर्शितापूर्ण फैसले नहीं लिए जा पाते अन्यथा आजादी के आठवें दशक भारत को आंख दिखाने लायक पाकिस्तान और बंगलादेश बचते ही नहीं और आसेतु हिमालय में पैर जमाने के बारे में कोई भी स्वप्न चीन को ही डराता लेकिन आज....? आज देश में हर जगह पर जो गृह युद्ध या जातीय/क्षेत्रीय उन्माद नजर आता है, वह भी कहीं नहीं नजर आता! आपने देखा-सुना होगा कि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस गत माह 26 से 29 मार्च 2025 तक चीन के दौरे पर थे। इससे पहले उनका पाकिस्तान प्रेम भी छलक चुका था जो चीन को रिझाने की पहली शर्त थी। आखिर है तो वह भी पूर्वी पाकिस्तान का ही अंश। उसका नाम बंगलादेश भले ही हो लेकिन पाकिस्तान-बंग्लादेश के खिलाफ भारत के राजनेता हमेशा शॉफ्ट रहे ताकि भारतीय मुसलमान उन्हें वोट देते रहें। मसलन, यदि यही नीति सही है तो भारत का प्रधानमंत्री 1947 में मोहम्मद जिन्ना को बना दिया जाता और 2025 में भी शाहनवाज हुसैन एक चतुर प्रधानमंत्री हो सकते हैं? और यदि ऐसा नहीं किया जा सकता तो फिर पाकिस्तान-बंगलादेश से हमदर्दी किस बात की।

- कमलेश पांडेय

खतरनाक मोड़ पर नेपाल

भारत इस समय अपने पड़ोस के हिसाब से उबलते हुए कडाहों के बीच खड़ा दिख रहा है। आजादी के बाद से ही पाकिस्तान नाम का प्रेत उसके पीछे पड़ा है जिसे बार-बार सबक सिखाने के बावजूद भी वह बाज नहीं आता। 1971 के विभाजन एवं बांग्लादेश निर्माण के बाद लंबे समय तक यह दर्द आधा रहा। क्योंकि बांग्लादेश भारत के साथ रहा लेकिन बांग्लादेश का रुख भी समय-समय पर बदलता रहा है एवं वह भी मौका मिलते ही भारत को आंख दिखाता रहा है। नेपाल जो कि हर तरह से भारतीय सभ्यता संस्कृति तथा भौगोलिक सीमाओं की दृष्टि से भी भारत के सबसे नज़दीक रहा है उसके भी रुख में परिवर्तन दिखाई दिया और वह भी चीन के प्रभाव में आता दिखाई दिया है। वहां पेड़ के पत्तों की तरह बदलती हुई सरकारों के साथ जब पुष्प कमल दहल प्रचंड के हाथ में सत्ता आई तो भारत का जबरदस्त विरोध हुआ मगर उनका हश्र अच्छा नहीं रहा। अब एक बार फिर से नेपाल चर्चा में है और इस बार चर्चा का सबब है वहां महज़ 16- 17 साल बाद ही लोकतंत्र के प्रति अविश्वास दिखाते हुए राजशाही के पक्ष में एक हिंसक जन आंदोलन खड़ा हो गया है और इन आंदोलनकारियों की मांग है कि नेपाल में पुनः राजशाही की स्थापना हो एवं उसे हिंदू राष्ट्र घोषित किया जाए। विश्व में कुछ ही देश ऐसे हैं जहाँ हिंदू धर्म के अनुयायी बाहुल्य में है। इनमें से नेपाल और भारत सबसे महत्वपूर्ण हैं। भारत में हिंदू जनसंख्या लगभग 80% है । भारत हिंदू धर्म का जन्मस्थान है। यहाँ हिंदू संस्कृति, त्योहार, परंपराएँ, और मंदिरों की भरमार है। हालाँकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है लेकिन हिंदू धर्म यहाँ की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना में गहराई से जुड़ा हुआ है जबकि नेपाल में हिंदू जनसंख्याः लगभग 81% है. नेपाल ही कभी एकमात्र घोषित हिंदू राष्ट्र था मगर 2008 में नेपाल को राजशाही से गणराज्य धर्मनिरपेक्ष घोषित कर दिया गया। हालांकि आज भी नेपाल की अधिकांश आबादी हिंदू है। 1990 के दशक से ही नेपाल में बहुदलीय लोकतंत्र की मांग हो रही थी जिसके चलते 1990 में संवैधानिक राजतंत्र स्थापित हुआ। 1996 से 2006 तक माओवादियों का सशस्त्र संघर्ष चला

जिसमें उन्होंने राजशाही को हटाकर लोकतंत्र की स्थापना की मांग की। 2001 में सनसनीखेज ढंग से राजा बीरेन्द्र और उनके परिवार की हत्या के बाद राजा ज्ञानेन्द्र ने सत्ता संभाली। इस घटना से जनता में राजशाही के प्रति अविश्वास बढ़ा। यह विश्वास और भी मुखर तब हुआ जब 2005 में राजा ज्ञानेन्द्र ने लोकतांत्रिक सरकार को बर्खास्त कर सत्ता अपने हाथ में ले ली, इससे जनता में असंतोष बढ़ा। 2006 में नेपाल में व्यापक जनआंदोलन हुआ, जिसमें प्रमुख राजनीतिक दलों और नागरिकों ने भाग लिया। इसके परिणामस्वरूप राजा ज्ञानेन्द्र को सत्ता छोड़नी पड़ी और 2008 में नेपाल को गणराज्य घोषित कर दिया गया। इस तरह नेपाल में लोकतंत्र की तो स्थापना हो गई लेकिन वहां इन वर्षों में कभी भी लंबे समय तक एक स्थाई सरकार नहीं रह पाई और देश ने इस छोटे से कालखंड में ही 11 प्रधानमंत्री बनते देखे। इस फेल्योर के चलते वहां की जनता त्रस्त रही एवं विकास की गाड़ी भी तेजी से नहीं दौड़ पाई जिसके सपने जनता को लोकतंत्र की स्थापना के समय दिखाए गए थे। बी पी कोइराला के बाद से तो ऐसा लगा कि जैसे राजनीतिक दलों ने तय कर लिया था कि किसी भी व्यक्ति को साल डेढ़ साल से अधिक प्रधानमंत्री पद पर टिकने ही नहीं देंगे। के पी शर्मा ओली एवं पुष्प कमल दहल प्रचंड को छोड़ दें तो कोई भी प्रधानमंत्री 2 वर्ष से अधिक का कार्यकाल पूरा नहीं कर पाया । अब चाहे वह गिरिजा प्रसाद कोइराला रहे हो या बाबूराम भट्टराई, कुछ तो 'आज आए और कल गए' की तर्ज पर आते - जाते रहे। अस्तु, कह सकते हैं कि नेपाली लोकतंत्र ने जनता को निराश किया और इसके चलते धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में भी उनकी आस्था घटती गई क्योंकि उनको लगता है कि राजशाही के नियंत्रण में यदि लोकतांत्रिक सरकार बनी तो उन्होंने काफी अच्छा काम किया जबकि स्वतंत्र रूप से बनने वाली सरकारें न टिकी और न ही काम कर पाई। इसी निराशा के चलते हाल के वर्षों में नेपाल में एक वर्ग राजशाही की पुनःस्थापना की मांग करने लगा। राजनीतिक अस्थिरता के साथ-साथ ही बढ़ती बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार से परेशान जनता राजशाही को एक स्थिर विकल्प के रूप में देखने लगी । नेपाल की सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाएँ भी इसकी वजह बनी। आज नेपाल के कई समूह उसे फिर से हिंदू राष्ट्र बनाने का ख्वाब देखने लगे हैं और इसके लिए राजशाही की वापसी को ज़रूरी मानते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि नेपाल में राजशाही व्यवस्था स्थिरता और राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है। हांलांकि यह भी उल्लेखनीय है कि जब 2001 में राजशाही परिवार का कत्ल हुआ, तब ज्ञानेंद्र पर ही सबसे अधिक उंगलियां उठी थी एवं यह माना गया था कि राज परिवार हत्याकांड में उनकी प्रमुख भूमिका थी लेकिन उनके राजा बनने के चलते यह सब बातें नेपथ्य में चली गईं । बाद में उन्हें मजबूर होकर देश को लोकतांत्रिक राज्य घोषित करना पड़ा लेकिन वहां के नेताओं की महत्वाकांक्षाओं एवं जनता के असंतोष के चलते एक बार फिर से उनकी अपील पर लोग सड़क पर उतरे हुए हैं। हालांकि राजशाही समर्थक आंदोलन को अभी तक भी बहुत व्यापक जनसमर्थन नहीं मिला है लेकिन यदि नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता बनी रहती है तो यह आंदोलन और तेज होने की संभावनाएं बलवती लगती हैं यद्यपि यह भी सच है कि नेपाल के संविधान और मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था में राजशाही की वापसी आसान नहीं होगी।अब यह मांग भले ही पूरी न हो लेकिन यह आंदोलन इस बात को ज़रूर रेखांकित करता है कि यदि लोकतंत्र में नेता केवल अपने व दलगत स्वार्थों को ही पूरा करने में लगे रहेंगे तो फिर उनका टिके रहना संभव नहीं है और ऐसे में वे कालपार हो चुकी राजशाही तक से भी उम्मीदें लगा बैठते हैं।

- डॉ घनश्याम बादल

क्या मर्द की जिंदगी सस्ती है?

मर्द को दर्द नहीं होता? मर्द रोते नहीं? अरे! किसने कह दिया ये झूठ? किसने गढ़ दिए ये बेरहम उसूल? किसने तय कर दिया कि तकलीफ सिर्फ औरतों का हिस्सा है? "पति मार खाए तो मज़ाक, पत्नी रो दे तो अत्याचार!" बीवी के हर आँसू पर कानून खड़ा हो जाता है मगर जब पति का गला घोंटा जाता है, तो सिस्टम, मीडिया, और फेमिनिस्ट गैंग अंधी-बहरी हो जाती है! पति की लम्बी आयु के लिए मांग तो भर ली जाती है पर उसी पति की जान ले ली जाती है। आज बात करेंगे समाज के उस अनछुए सच की जहां मर्द को भगवान तो बना दिया मगर जिंदगी जीने का हक छीन लिया जाता है। ज्यादा पुरानी बात ही क्या करना अभी कुछ घंटे पहले का ही उदाहरण देख लीजिये जहाँ शादी के महज 15 दिनों के बाद ही शादी के रस्मों के पैसों से अपने पति की सुपारी दे दी। जी, घटना औरय्या की है जहां एक पत्नी ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति की हत्या की साजिश रची और 2 लाख रुपए में सुपारी देकर उसकी हत्या करा दी। ऐसा ही कुछ मेरठ से अभी हाल में ही आपको सुनने को मिला होगा, जंहा एक पत्नी ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और पानी के ड्रम में भरकर सीमेंट से पैक कर दिये। बेशर्मी की हद यहीं नहीं रुकी। पति के टुकड़े-टुकड़े कर पत्नी प्रेमी के साथ मनाली घूमने भी चली गई। ऐसे तमाम कृत्य बड़े ही आसानी से हमें पढ़ने और सुनने को मिल जाएंगे, जो दिल को झकझोर कर रख देते हैं। समाज का एक अनछुआ सच यह भी है कि हर साल हजारों मर्द झूठे इल्ज़ाम में फँसते हैं, अपनी जान दे देते हैं मगर इस सड़े हुए समाज की नींद नहीं टूटती। क्योंकि कहा जाता है कि महिला तब तक दोषी नहीं, जब तक गुनाहगार साबित न हो जाये और पुरुष तब तक गुनहगार, जब तक वह निर्दोष साबित नहीं हो जाता है। इसी दोहरे रवैये के कारण औरत का झूठा आँसू सिस्टम को झुका सकता है। मगर मर्द की चीखें दीवारों में दफ्न हो जाती है। बात चाहे दहेज प्रथा कानून के दुरूपयोग की हो या फिर घरेलू हिंसा का कानून, या फिर गुजारा भत्ता कानून के दुरूपयोग की हो, मर्द बस एटीएम बना दिया जाता है। आपको हैशटैग 'मी टू' तो याद होगा पर हैशटैग 'मैं टू' याद है? नहीं याद है न, बताते हैं अक्टूबर २०१८ में #MenToo कैंपेन की शुरुआत चिल्ड्रन राइट्स इनिशिएटिव फॉर शेयर्ड पेरेंटिंग (Crisp) ने की थी। इस अभियान की शुरुआत करते हुए 15 लोगों के एक समूह ने पुरुषों से कहा था कि वे महिलाओं के हाथों अपने यौन शोषण के बारे में खुलकर बोलें। फ्रांस के एक पूर्व राजनयिक भी शामिल हैं, जिन्हें साल 2017 में यौन उत्पीड़न के एक मामले में अदालत ने बरी कर दिया था। बात यदि आंकड़ों की करें तो देश में पति के उत्पीड़न के बढ़ते मामले स्पष्ट संकेत दे रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार 2005 में 52,583 विवाहित पुरुषों ने आत्महत्या कर ली। 2006 में 55,452 जबकि 2007 में 57,593 विवाहित पुरुषों ने खुद को मार डाला। कारणों के स्पष्ट हुए बिना भी यह स्पष्ट है कि पति के उत्पीड़न और दुरुपयोग के मामलों में वृद्धि हो रही है। ख़ास बात तो ये है कि महिला एवं बाल अपराध से जुड़े आंकड़े तो प्राथमिकता के साथ पेश किये जाते हैं परन्तु पुरुष उत्पीड़न को लेकर आंकड़ों की कोई ख़ास रिपोर्ट तक तैयार नहीं होती।

- पारसमणि अग्रवाल कोंच

आज का कार्टून

साभार

बागमती नदी पर बराज बनाने का विरोध

बागमती नदी नेपाल के तराई क्षेत्र से निकलकर दक्षिण-मध्य नेपाल और उत्तरी बिहार राज्य, पूर्वोत्तर भारत में बहती है। सीतामढ़ी जिले में बागमती नदी पर दो नए बराज बनाए जाएंगे। ये बराज ढेंग और कटौंझा के पास बनाए जाएंगे। इन बराजों के निर्माण के लिए 25.37 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है। सरकार का दावा है कि बराज बागमती नदी के जलस्तर को नियंत्रित करेंगे और बाढ़ के प्रकोप को कम करेंगे। हाल में सीतामढ़ी में हुए किसान कन्वेशन में इस योजना का विरोध किया गया। वर्ष 2012 से ही बागमती में तटबंध बनाये जाने का विरोध109 गांवों के किसान कर रहे हैं पर सरकार तटबंध बनाने की पुरजोर कोशिश कर रही है। किसानों का मनाना है कि तटबंध के बन जाने से वे उस उपजाऊ मिट्टी से वंचित रह जायेंगे जो हर साल बागमती अपने साथ लाती है। बागमती पर जहां तटबंध बने हैं, वहां के खेतों की उर्वरकता घटी है। वर्ष 2018 में जब लोगों के विरोध के बावजूद यहां तटबंध निर्माण शुरू हो गया था तो हजारों किसानों ने हाईवे जाम कर दिया। इस विरोध के बाद सरकार ने काम रोक दिया और इसकी समीक्षा के लिए तीन सदस्यीय कमिटी का गठन किया था। उस कमिटी के एक महत्वपूर्ण सदस्य अनिल प्रकाश कहते हैं कि कमेटी को काम भी नहीं करने दिया गया और उसकी रिपोर्ट भी तैयार नहीं हुई। इस कमिटी में अनिल प्रकाश के अलावा प्रसिद्ध नदी विशेषज्ञ दिनेश कुमार मिश्र और आईआईटी, कानपुर से जुड़े प्रोफेसर राजीव सिन्हा शामिल हैं। अनिल प्रकाश कहते हैं कि अब तक उस कमिटी की एक ही बैठक हुई है। हां, समय-समय पर उसका समय बढ़ाया जाता रहा है। ताजा सूचना के अनुसार उसका समय 31 दिसंबर, 2020 तक कर दिया गया था। उसके बाद की सूचना उपलब्ध नहीं है। तटबंध बने या न बने, इस पर कमेटी की कोई रिपोर्ट आयी नहीं कि फिर अब बराज निर्माण की तैयारी की जा रही है। बागमती के सवाल पर सीतामढ़ी में हुए किसान कन्वेशन में बागमती में बराज निर्माण पर तत्काल रोक लगाने की मांग की गयी और इसका एकजुट होकर विरोध करने का फैसला लिया गया। साथ ही तटबंधों पर जहां गांव नही हो वहां लचका बनाकर या स्लूईश गेट के माध्यम से उपजाऊ पानी खेतों को दिलाने,सुप्पी तथा मेजरगंज के कटाव प्रभावित गांवों की सुरक्षा के साथ विस्थापित परिवारों को मुआबजा भुगतान कराने,पूर्व से विस्थापित परिवारों को भूमि पर कब्जा दिलाने,2024के बाढ,कटाव तथा तटबंध टूटने से प्रभावितों को उचित अनुदान तथा गृह क्षति मुआबजा भुगतान, जलवायु परिवर्तन के कुप्रभाव से नदियों को बचाने,अल्पवर्षा,कटाव रोकने,गाद सुरक्षा हेतू नेपाल से भारत तक सघन वृक्षारोपण के लिए ठोस पहल करने की मांग की गयी। कन्वेशन में पारित दस सूत्री प्रस्ताव को सरकार को भेजा जाएगा। बागमती नदी पर तटबंध तथा बराज निर्माण के नाम पर1970 के दशक से ही बडा सपना दिखाया जा रहा है।सरकार अब पुनःबराज का सपना दिखा रही है। वहां के लोगों का कहना है कि सरकार सपना दिखाने के वजाए बागमती को बचाने तथा उसका उपजाऊ पानी खेतों को सुलभ कराने पर काम करे।लोगों ने साफ तौर कहा कि तटबंध-बराज नहीं बागमती का पानी चाहिए। नेपाल सीमा से सटे मेजरगंज प्रखंड के बसबीट्टा बाजार पर पंचायत भवन के सभागार में किसान नेता तथा स्थानीय मुखिया राघवेन्द्र कुमार सिंह की अध्यक्षता में "जलवायु परिवर्तन-नदी विमर्श मंच "के तत्वावधान मेंआयोजित किसान-कन्वेंशन में प्रस्ताव पारित कर सरकार से 10सूत्री मांगो पर अमल की मांग की गई। राघवेन्द्र कुमार सिंह ने तटबंध के भीतर के गांवों तथा मेजरगंज तथा सुप्पी में बागमती की समस्या पर प्रकाश डाला। कन्वेंशन में पर्यावरणविद तथा नदी जल विशेषज्ञ रामशरण अग्रवाल ने कहा प्रथम सिंचाई मंत्री ने तटबंध का विरोध किया था। गाद निकालना समस्या है परन्तु गाद नही आने पर चिंतन नही किया जा रहा है। नेपाल के पहाड से समतल तक वृक्षारोपण से गाद रूकेगी। बिहार सरकार स्वेत पत्र जारी करे तथा बागमती पर कितनी राशि खर्च हुई, उसकी मांग उठनी चाहिए। बडी नदियों के जीवन के लिए छोटी नदियों को भी बचाना होगा। योजना बनाते समय विस्तृत जानकारी संबंधित क्षेत्रों को दिया जाना जरूरी है।

-कुमार कृष्णन

पुणे महानगर पालिका की आय में अब तक की सर्वाधिक वृद्धि

मनपा का दावा, पिछले वर्ष की तुलना में 12 करोड़ अधिक

महानगर नेटवर्क

पुणे

पुणे महानगर पालिका (पीएमसी) ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में 8,272 करोड़ रुपये की आय प्राप्त करने में सफलता हासिल की है। पिछले वर्ष की तुलना में इस बार 12 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। महापालिका प्रशासन का दावा है कि यह अब तक की सबसे अधिक आय है। महापालिका आयुक्त ने वर्ष 2024-25 के लिए 11,601 करोड़ रुपये का बजट तैयार किया था, जिसमें से 31 मार्च तक 8,272 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। इसमें भवन निर्माण विभाग को निर्माण अनुमति शुल्क से 2,601 करोड़, संपत्ति कर से 2,365 करोड़, जीएसटी से 2,500 करोड़, मीटरयुक्त पानी शुल्क से 116 करोड़, मुद्रांक शुल्क से 190 करोड़, तथा सरकारी अनुदान एवं अन्य स्रोतों से 500 करोड़ रुपये की आय प्राप्त हुई। पिछले वर्ष 2023-24 में पुणे महानगर पालिका को 8,260 करोड़ रुपये की आय हुई थी, जबकि इस वर्ष इसमें 12 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। महापालिका की आय के मुख्य स्रोतों में संपत्ति कर विभाग और भवन निर्माण विभाग शामिल हैं। वित्तीय वर्ष 2024-25 में भवन निर्माण विभाग को निर्माण अनुमति शुल्क से 2,601 करोड़ रुपये की आय हुई, जबकि संपत्ति कर विभाग को 2,365 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ।

वर्षवार बजट और वास्तविक आय

- वर्ष 2020-21 में महापालिका का बजट 6,239 करोड़ रुपये था, जिसमें से 4,713 करोड़ रुपये की आय हुई।
- वर्ष 2021-22 में 7,650 करोड़ रुपये के बजट के मुकाबले 6,806 करोड़ रुपये की आय हुई।
- वर्ष 2022-23 में 8,592 करोड़ रुपये के बजट में से 7,100 करोड़ रुपये प्राप्त हुए।
- वर्ष 2023-24 में 9,515 करोड़ रुपये के बजट में से 8,260 करोड़ रुपये की आय हुई।
- वर्ष 2024-25 में 11,601 करोड़ रुपये के बजट में से अब तक 8,272 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है।

पेरा द्वारा श्री बालाजी विश्वविद्यालय में उच्चस्तरीय गोलमेज सम्मेलन

महानगर नेटवर्क

पुणे

मंत्री चंद्रकांतदादा पाटील करेंगे शिरकत

महाराष्ट्र के निजी विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक दक्षता में सुधार लाने और सुचारू प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए प्रीमिनेंट एजुकेशन एंड रिसर्च एसोसिएशन (पेरा) द्वारा एक उच्चस्तरीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। "राज्य निजी विश्वविद्यालयों का सशक्तिकरण: उत्कृष्टता के लिए प्रणाली को सुव्यवस्थित करना" विषय पर यह सम्मेलन 4 अप्रैल 2025 को सुबह 10:00 बजे श्री बालाजी विश्वविद्यालय, पुणे (SBUP) में आयोजित किया जाएगा। वर्तमान में, नए निजी विश्वविद्यालय प्रशासनिक कार्यालय, परीक्षा विभाग और वित्त एवं लेखा शाखा जैसे बुनियादी विभागों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। हालांकि, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। नई शैक्षणिक नीति के अनुसार प्रवेश प्रक्रिया को अधिक सरल बनाना, प्रमाणपत्रों को त्वरित रूप से उपलब्ध कराना, वित्तीय प्रबंधन को सुव्यवस्थित करना और शैक्षणिक मूल्यांकन में होने वाली देरी को कम करना जैसे विषयों पर इस सम्मेलन में विस्तार से चर्चा होगी। इस दौरान विशेषज्ञ निजी विश्वविद्यालयों के समक्ष आ रही इन चुनौतियों पर मार्गदर्शन देंगे।

महाराष्ट्र के निजी विश्वविद्यालयों की चुनौतियों पर होगा मंथन

महाराष्ट्र सरकार के उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री चंद्रकांतदादा पाटील मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इसके अलावा, पेरा के अध्यक्ष और एमआईटी एडीटी विश्वविद्यालय के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) मंगेश कराड विशिष्ट अतिथि होंगे। उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार के निदेशक डॉ. शैलेंद्र देवळाणकर मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित होंगे।

मंदिर में दीये पर गुलाल गिरने से लगी आग

महानगर नेटवर्क

पुणे

14 वर्षीय लड़का झुलसा

सेनापति बापट रोड स्थित रामोशीवाड़ी में एक मंदिर में गुलाल उड़ाने के दौरान दीये पर गिरने से आग भड़क गई, जिससे 14 वर्षीय लड़का झुलस गया। इस घटना के लिए जिम्मेदार दो लोगों के खिलाफ चतुःशृंगी पुलिस ने मामला दर्ज किया है। इस मामले में नवनाथ जाधव (55) और विजय शिंदे (38, निवासी रामोशीवाड़ी, रत्ना हॉस्पिटल के पीछे, सेनापति बापट रोड) के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। इस संबंध में कुणाल विनोद कालेकर (39) ने चतुःशृंगी पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस के अनुसार, सेनापति बापट रोड स्थित रामोशीवाड़ी में वेताळबाबा मंदिर है। विगत रात मंदिर में भजन का आयोजन किया गया था, जिसमें 15-20 लोग मौजूद थे और कई श्रद्धालु मंदिर के बाहर भी खड़े थे। रात करीब ढाई बजे पालकी सोहळा शुरू हुआ। जाधव ने शिंदे पर गुलाल फेंका, जिसके जवाब में शिंदे ने गुस्से में प्लास्टिक की थैली से गुलाल उठाकर जाधव पर फेंक दिया। गुलाल उड़ते हुए दीये पर जा गिरा, जिससे अचानक आग भड़क उठी।

पुणे मनपा की करोड़ों की जमीन हड़पने की साजिश

सपा के पुणे शहर अध्यक्ष जांबुवंत सागरबाई मनोहर ने लगाया आरोप

महानगर नेटवर्क

पुणे

पुणे महानगर पालिका सीमा के भीतर स्थित विंडसर एवेन्यू कोंडोमिनियम, सर्वे नं. 60, वानवड़ी, पुणे – 411040 नामक सोसाइटी पर आरोप है कि उसने करीब 40,000 वर्ग फुट जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया है। इस भूमि का बाजार मूल्य 35 से 40 करोड़ के बीच बताया जा रहा है। यह गंभीर आरोप समाजवादी पार्टी के पुणे शहर अध्यक्ष जांबुवंत सागरबाई मनोहर ने पत्रकार वार्ता में लगाया। इस दौरान दत्ता पाकीरे (पुणे शहर व जिला महासचिव), अनिरुद्ध सूर्यवंशी (उपाध्यक्ष, पुणे शहर), साधना शिंदे (जिला महिला अध्यक्ष), शाहजहां झारी (सचिव, पुणे शहर) सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे। मनोहर ने कहा कि एक ओर सरकार वक्फ बोर्ड की जमीनों पर नियंत्रण के लिए नया विधेयक लाने की तैयारी कर रही है, लेकिन जब पुणे महानगर पालिका की खुद की जमीन पर कोई अवैध कब्जा कर लेता है, तो इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया जाता? पुणे में अतिक्रमण और अवैध निर्माण पर प्रशासन द्वारा पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त कार्रवाई किए जाने के आदेश हैं, लेकिन महानगर पालिका खुद अपनी ही जमीन पर हो रहे अतिक्रमण को हटाने में नाकाम क्यों है? समाजवादी पार्टी की ओर से इस संबंध में ज्ञापन भी दिया गया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। ऐसे में सवाल उठता है कि कहीं सोसाइटी और पुणे महानगर पालिका के बीच मिलीभगत तो नहीं? पुणे महानगर पालिका ने जा. क्र. 05/3461 दिनांक 04/09/2024 और जा. क्र. 05/3870 दिनांक 25/09/2024 को दो बार नोटिस जारी कर अवैध कब्जा हटाने के निर्देश दिए थे, लेकिन सोसाइटी ने अब तक कोई कार्रवाई नहीं की।

समाजवादी पार्टी की आंदोलन की चेतावनी

मनोहर ने चेतावनी दी कि यदि अगले दो दिनों के भीतर प्रशासन ने अतिक्रमण के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं की, तो समाजवादी पार्टी सड़क पर उतरकर उग्र आंदोलन करेगी।

बनावटी कंपनी बनाकर 104 श्रमिकों के नाम पर खोला 'पीएफ' खाता

फर्जीवाड़ा उजागर, वानवड़ी पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज

महानगर नेटवर्क

पुणे

बिना किसी वास्तविक कंपनी के अस्तित्व के, 104 श्रमिकों के नाम पर फर्जी भविष्य निधि (पीएफ) खाते खोलकर धोखाधड़ी करने का मामला सामने आया है। इस जालसाजी की जानकारी भविष्य निधि कार्यालय को नहीं थी। कुछ श्रमिकों को धमकी देकर उनके खाते बंद करने और पैसे निकालने के लिए मजबूर किया गया। यह मामला तब उजागर हुआ जब सोशल मीडिया के माध्यम से धमकी भरे संदेश प्रसारित किए गए। इस संबंध में वानवड़ी पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है। इस फर्जीवाड़े में श्री गणेश एंटरप्राइजेज के मालिक सीताराम ठकाणसिंग के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। भविष्य निधि कार्यालय के अधिकारी जयकिशन मोहनदास मनवानी (49, निवासी महेश सोसायटी, बिबवेवाड़ी) ने वानवड़ी पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस के अनुसार, सीताराम ठकाणसिंग (निवासी साठे वस्ती, सणसवाड़ी) ने भविष्य निधि कार्यालय की वेबसाइट पर श्री गणेश एंटरप्राइजेज नामक फर्म का पंजीकरण कराया था। 23 दिसंबर 2020 को किए गए इस आवेदन के बाद, उन्हें एक यूएएन (सांकेतिक खाता संख्या) प्राप्त हुआ। इसके जरिए 104 श्रमिकों के नाम पर ऑनलाइन पीएफ खाते खोले गए।

स्वयंमूल्यांकन में शिक्षकों की परेशानी

महानगर नेटवर्क

पुणे

राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT) ने स्कूल गुणवत्ता मूल्यांकन और आश्वासन योजना (SQAAF) के तहत स्वयंमूल्यांकन की जानकारी भरने की समयसीमा तीसरी बार बढ़ा दी है।

हालांकि, इस स्वयंमूल्यांकन में 128 मानकों की जानकारी भरने, तस्वीरें और वीडियो अपलोड करने के काम से शिक्षकों पर अतिरिक्त भार पड़ रहा है। SCERT द्वारा स्थापित राज्य स्कूल मानक प्राधिकरण कक्ष ने राज्य की सभी माध्यमों और व्यवस्थापन की स्कूलों के लिए यह मूल्यांकन योजना बनाई है, जिसके तहत स्कूलों को स्वयंमूल्यांकन करना अनिवार्य है। इस प्रक्रिया के लिए एक ऑनलाइन लिंक उपलब्ध कराते हुए स्कूलों को जानकारी भरने, तस्वीरें और वीडियो जोड़ने का निर्देश दिया गया था। SCERT के निदेशक राहुल रेखावार के परिपत्र के अनुसार, अभी तक राज्य की सभी स्कूलों ने यह प्रक्रिया पूरी नहीं की है। इस कारण समयसीमा तीसरी बार बढ़ाई गई है, और अब 10 अप्रैल तक स्वयंमूल्यांकन की प्रक्रिया पूरी करने का निर्देश दिया गया है। इस विषय में महाराष्ट्र राज्य प्राथमिक शिक्षक समिति के कार्याध्यक्ष विजय कोंबे ने कहा कि स्वयंमूल्यांकन में 128 मानक निर्धारित किए गए हैं, जिनकी जानकारी भरना और आवश्यक फोटो व वीडियो अपलोड करना अनिवार्य है। इस कार्य के लिए अब तीसरी बार समय बढ़ाया गया है, लेकिन इससे आखिर क्या हासिल होगा, यह बड़ा सवाल है। इससे पहले भी "स्कूल सिद्धि" नामक एक योजना चलाई गई थी, लेकिन उसका आगे कुछ नहीं हुआ।

पंजीकरण और जानकारी भरने के लिए तीसरी बार बढ़ी समय सीमा

पौड फाटा फ्लायओवर पर भीषण सड़क हादसा

महानगर नेटवर्क

पुणे

दो कॉलेज छात्रों की मौत

पौड फाटा चौक स्थित स्वातंत्र्यवीर सावरकर फ्लायओवर पर तेज रफ्तार बाइक के रेलिंग से टकराने से दो कॉलेज छात्रों की दर्दनाक मौत हो गई। यह हादसा सोमवार तड़के तीन बजे हुआ। मृतकों की पहचान सर्वेश गोपाल पाटिल (20) और पुष्कर सुधाकर चौधरी (19) के रूप में हुई है। दोनों मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिले के तुरक गुर्हाडा के रहने वाले थे। इस हादसे की शिकायत पुलिस हवलदार निषाद कोंडे ने कोथरूड पुलिस थाने में दर्ज कराई है। पुलिस के अनुसार, सर्वेश और पुष्कर बाइक पर सवार होकर पौड रोड से गुजर रहे थे। इसी दौरान उनकी तेज रफ्तार बाइक फ्लायओवर की रेलिंग से टकरा गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि दोनों को गंभीर चोटें आईं। घटना की सूचना मिलते ही कोथरूड पुलिस मौके पर पहुंची और तुरंत उन्हें अस्पताल पहुंचाया, लेकिन इलाज से पहले ही दोनों ने दम तोड़ दिया। कोथरूड पुलिस थाने के वरिष्ठ निरीक्षक संदीप देशमाने ने बताया कि मृतक छात्र कॉलेज में पढ़ाई कर रहे थे। दुर्घटना के लिए जिम्मेदार होने का मामला दर्ज किया है।

व्यापारियों से जबरन वसूली करने वालों के खिलाफ मामला दर्ज करने की मांग

भाजपा व्यापारी गठबंधन द्वारा पुणे पुलिस आयुक्त को सौंपा ज्ञापन

महानगर नेटवर्क

पुणे

शहर में व्यापारियों से असामाजिक तत्वों, गुंडों, स्थानीय बोर्डों और ट्रेड यूनियनों द्वारा सदस्यता और यूनियन के नाम पर विभिन्न अवसरों पर जबरन पैसे की मांग की जा रही है। भारतीय जनता पार्टी व्यापारी गठबंधन, पुणे शहर ने मांग की है कि पुलिस इस मामले की जांच करे और सख्त कार्रवाई करे तथा उनके खिलाफ जबरन वसूली का मामला दर्ज करे। भाजपा व्यापार गठबंधन की ओर से उमेश भाई शाह के नेतृत्व में महासचिव महेश गुप्ता, उपाध्यक्ष विक्रम चव्हाण, अभिजीत भोसले ने इस संबंध में पुणे पुलिस आयुक्त अमितेश कुमार को एक बयान सौंपा है। इस वक्तव्य में कहा गया है कि देश की अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में व्यापारी वर्ग की प्रमुख भूमिका होती है, लेकिन जैसा कि ऊपर बताया गया है, व्यापारी वर्ग को असामाजिक तत्वों/गुंडों और ट्रेड यूनियनों के दबाव में बड़ी मात्रा में धनराशि देने के लिए मजबूर किया जाता है। विनम्र अनुरोध करते हैं कि उपरोक्त असामाजिक तत्वों और गुंडों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें।

प्रेम संबंध में बाधा बनने पर पति की सुपारी देकर हत्या की कोशिश

महानगर नेटवर्क

पुणे

प्रेम संबंध में बाधा बनने के कारण एक युवती ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने होने वाले पति की हत्या की साजिश रची। इस चौंकाने वाली घटना का खुलासा होते ही यवत पुलिस ने प्रेमी समेत अन्य साथियों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि हत्या की कोशिश करने वाली युवती फरार है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान आदित्य शंकर दांगडे (19), संदीप दादा गावडे (40, दोनों निवासी गुगल वडगांव, तहसील श्रीगोंदा, जिला अहिल्यानगर), शिवाजी रामदास जरे (32), इंद्रभान सखाराम कोळपे (37, दोनों निवासी पिंपळगांव पिसा, तहसील श्रीगोंदा, जिला अहिल्यानगर) और सूरज दिगंबर जाधव (36, निवासी काष्टी, तहसील श्रीगोंदा, जिला अहिल्यानगर) के रूप में हुई है। इस मामले में एक युवती के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है, जो फिलहाल फरार है।

सबसे महंगे घर लॉ कॉलेज रोड पर, प्रति वर्ग फुट दर 16,816 रुपये

महानगर नेटवर्क

पुणे

वार्षिक बाजार मूल्य दर (रेडीरेकनर) में इस वर्ष लॉ कॉलेज रोड क्षेत्र ने कोरेगांव पार्क को भी पीछे छोड़ दिया है। रेडीरेकनर के अनुसार, लॉ कॉलेज रोड क्षेत्र में 1,000 वर्ग फुट के घर की कीमत कम से कम 1.75 करोड़ रुपये होगी, और अन्य शुल्क जोड़ने के बाद यह आंकड़ा 2 करोड़ रुपये के पार जा सकता है। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए राज्य सरकार द्वारा वार्षिक बाजार मूल्य दर (रेडीरेकनर) में वृद्धि के बाद, पुणे का लॉ कॉलेज रोड क्षेत्र सबसे महंगा स्थान बन गया है। पिछले तीन वर्षों से पहले स्थान पर रहे कोरेगांव पार्क को पीछे छोड़ते हुए, यहां प्रति वर्ग फुट दर 16,816 रुपये तक पहुंच गई है, जबकि कोरेगांव पार्क की दर 16,681 रुपये प्रति वर्ग फुट है। सोमवार को पंजीकरण और मुद्रांक शुल्क विभाग द्वारा पुणे और उसके उपनगरों के लिए रेडीरेकनर दरें जारी की गईं। पुणे में औसतन 4.16% और पिंपरी-चिंचवड़ में 6.69% की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि का सीधा असर फ्लैट, प्लॉट और दुकानों की कीमतों पर पड़ेगा।

बढ़ती कीमतों से बढ़ेगी परेशानी

कोरेगांव पार्क से भी आगे

2020 से सभी स्वीकृतियां और शुल्क रेडीरेकनर दरों से जुड़े होने के कारण निर्माण लागत में वृद्धि होगी।

प्रमुख क्षेत्रों के प्रति वर्ग फुट दर इस प्रकार हैं	
प्रभात रोड, भांडारकर रोड, लॉ कॉलेज रोड	15,355
गरवारे हाईस्कूल से एसएनडीटी, कर्वे रोड	14,000+
ज्ञानेश्वर पादुका चौक से गणेशखिंड रोड	12,000
गोखले चौक से बाजीराव रोड, लक्ष्मी रोड	10,000+
सबसे कम दर वाले क्षेत्र	
नांदोषी	3,215 प्रति वर्ग फुट
किरकिटवाड़ी	2,931 प्रति वर्ग फुट

आग से दुकानें जलकर खाक

महानगर नेटवर्क

पिंपरी

तीन लोग घायल

चिंचवाड़ के नेहरू नगर के जीरो बॉयज चौक पर एक गद्दा निर्माण कारखाने और एक फर्नीचर की दुकान में शाम करीब 5 बजे भीषण आग लग गई। इस घटना में दुकान के ऊपर स्थित इमारत में रहने वाले तीन लोगों को मामूली चोटें आईं। घायलों को तत्काल नगर निगम के यशवंतराव चव्हाण मेमोरियल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अग्निशमन विभाग के अधिकारियों ने अनुमान लगाया है कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, शाम करीब पांच बजे नेहरूनगर स्थित जीरो की सूचना मिली। दो दमकल गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचीं। ऐसी भी आशंका थी कि तीन लोग फंसे हुए हैं। उन्हें भी सुरक्षित निकाल लिया गया।

अंतर-विभागीय महिला क्रिकेट टूर्नामेंट का सफल आयोजन

महानगर नेटवर्क

पुणे

अंतर-विभागीय महिला क्रिकेट टूर्नामेंट का सफल आयोजन 1 अप्रैल 2025 को मंडल खेल मैदान, ताडीवाला रोड, पुणे में किया गया। इस टूर्नामेंट का उद्घाटन महिला सामाजिक सेवा संगठन (WSSO), पुणे, मध्य रेल की अध्यक्ष श्रीमती वर्मा तथा उपाध्यक्ष श्रीमती गीता जाधव एवं अन्य गणमान्य सदस्यों द्वारा किया गया। मंडल रेल प्रबंधक, पुणे श्री राजेश वर्मा ने पुणे मंडल के अधिकारियों के साथ इस अवसर की शोभा बढ़ाई। प्रारंभिक मैच विद्युत विभाग और कार्मिक विभाग के बीच खेला गया। कार्मिक विभाग ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया। विद्युत विभाग ने 8 ओवर में 35 रन बनाए। जवाब में कार्मिक विभाग की टीम ने 4.3 ओवर में लक्ष्य प्राप्त कर लिया। सुश्री प्रियंका बोरा को "वूमन ऑफ द मैच" घोषित किया गया और श्री राजेश मीणा, वरिष्ठ डीएसटीई द्वारा पुरस्कृत किया गया। यह टूर्नामेंट पुणे मंडल की महिला खिलाड़ियों की खेल प्रतिभा को प्रदर्शित करने के साथ-साथ खेल भावना का एक शानदार उदाहरण बना।

पुणे के काले पडल में हिट एंड रन मामले का फरार आरोपी गिरफ्तार

महानगर नेटवर्क

पुणे

पुणे के काले पडाल में सुबह की सैर के लिए निकले 49 वर्षीय सुजीतकुमार बसवंतप्रसाद सिंह को एक तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने इस मामले में फरार आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार आरोपी चालक की पहचान समीर गणेश कद (निवासी कदनगर, होलवस्ती चौक, उंद्री) के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, उंद्री इलाके में रहने वाले सुजीत कुमार सिंह 1 अप्रैल को सुबह करीब साढ़े छह बजे मॉर्निंग वॉक के लिए निकले थे। उसी समय तेज गति से आ रहे एक चार पहिया वाहन ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। इस घटना में सुजीत कुमार सिंह की मौत हो गई, जबकि चालक मौके से फरार हो गया। इस मामले में आरोपियों की तलाश के लिए पुलिस टीमें भेजी गईं। घटना के आसपास के इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज के जरिए आरोपियों की तलाश जारी है। सीसीटीवी फुटेज में रजिस्ट्रेशन नंबर एमएच 12 एक्सएच 5434 वाला एक चार पहिया वाहन चलता हुआ दिखाई दिया।

स्वयंसेवी संस्थाओं और आम आदमी पार्टी ने स्मार्ट सिटी योजना पर उठाए सवाल

महानगर नेटवर्क

पुणे

स्वयंसेवी संस्थाओं और आम आदमी पार्टी ने पुणे के 'स्मार्ट सिटी' प्रोजेक्ट को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया यह मिशन अब ठप हो गया है और इसके तहत किए गए कार्यों का कोई ठोस परिणाम नहीं दिख रहा। आम आदमी पार्टी के मुकुंद किर्दत ने कहा कि पुणे के नागरिकों ने इस योजना से ट्रैफिक जाम से राहत की उम्मीद की थी, लेकिन क्षेत्रीय विकास की आड़ में सिर्फ कुछ इलाकों में काम हुआ। 'आपला परिसर, आपले पुणे' संगठन के उज्ज्वल केसकर और अन्य कार्यकर्ताओं ने कहा कि इस योजना के तहत 58 प्रोजेक्ट्स पर 900 करोड़ रुपये खर्च किए गए, लेकिन उनकी पारदर्शिता पर सवाल उठ रहे हैं। सजग नागरिक मंच के विवेक वेलणकर ने सिग्नल प्रणाली, साइकिल योजना और थीम पार्क जैसी योजनाओं को पूरी तरह असफल बताया। आलोचकों ने मांग की है कि 'स्मार्ट सिटी कंपनी' को सभी प्रोजेक्ट्स का ब्योरा सार्वजनिक करना चाहिए और बताए गए उद्देश्यों को पूरा न कर पाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

महानगर मीडिया नेटवर्क प्रा. लिमिटेड के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक अंतेश आर सिंह द्वारा, महानगर मीडिया नेटवर्क प्रा. लिमिटेड ऑफिस नं. 12, अ और ब, सी.टी.एस. नं. 40/1, बी 2, संगम प्रोजेक्ट फेस 1, डॉ आंबेडकर रोड, आर.टी.ओ के पास पुणे-411001, से प्रकाशित एवं **डांगट मीडिया प्रा.लि.**, 22, दीघा एम आई डी सी, टी टी सी इंडस्ट्रियल एरिया, विष्णु नगर, दीघा, नवी मुंबई - 400708 में मुद्रित. ● फोन नंबरः 020-26059198 ईमेल : hmahanagar@gmail.com
● कार्यकारी संपादक : राघवेंद्र नाथ द्विवेदी* (पी.आर.बी. अधिनियम के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)

प्रदेश के अंदर इन्फ्रास्ट्रक्चर का हो रहा डेवलपमेंट : सीएम योगी

प्रकृति और परमात्मा की असीम कृपा का प्रदेश

महानगर संवाददाता
लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने योगी आदित्यनाथ ने बीते दिनों एक समाचार एजेंसियों को अपना इंटरव्यू दिया है जिसमें उनके बयान लगातार सुर्खियां बने हुए हैं। इस दौरान उन्होंने कई सवालों के जवाब दिए और कहा कि उन्हें उम्मीद है कि बहुत जल्द उत्तर प्रदेश देश की नंबर एक अर्थव्यवस्था का राज्य बन जाएगा और राज्य के लोगों की औसत आय राष्ट्रीय औसत के बराबर हो जाएगी। सरकार ने अगले चार-पांच साल में यूपी को एक ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनाने का लक्ष्य रखा है।

केंद्रीय नेताओं से मतभेद के सवाल पर सीएम योगी ने जवाब में कहा-

उत्तर प्रदेश देश की आबादी का सबसे बड़ा राज्य है। जितनी बड़ी आबादी है, उतनी बड़ी चुनौती भी उत्तर प्रदेश के सामने थी। ये चुनौती प्राकृतिक कम, कृत्रिम ज्यादा थी। जिन लोगों ने लंबे समय तक उत्तर प्रदेश पर शासन किया, ये कृत्रिम चुनौती उनके कारनामों की परिणति थी। जिसका परिणाम था कि प्रकृति और परमात्मा की असीम कृपा का प्रदेश, हरेक क्षेत्र में पिछड़ता गया। चाहे वो गवर्नेंस का क्षेत्र रहा हो, चाहे वो प्रदेश में वेलफेयर स्कीम को जरूरतमंदों तक पहुंचाने का रहा हो। उत्तर प्रदेश के अंदर इन्फ्रास्ट्रक्चर का रहा हो या डेवलपमेंट का रहा हो, एम्प्लॉयमेंट का रहा हो, हरेक क्षेत्र में सब देखने को मिल रही है। 2016-17 तक तो यह स्थिति आ गई थी कि पहचान के एक गंभीर संकट से उत्तर प्रदेश गुजर रहा था।

राजनीति मेरे लिए फुलटाइम जॉब नहीं-एक तरफ पूरे देश के अंदर प्रधानमंत्री मोदी जी के 2014 में आगमन के बाद, लोगों के मन में एक उत्साह था, उमंग था। लेकिन केंद्र में मोदी जी के नेतृत्व की सरकार जो भी लागू करती, राज्य के अंदर तत्कालीन सरकार उसको लागू ही नहीं होने देती थी। और अंततः 2017 के विधानसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी जी के आह्वान पर उत्तर प्रदेश की जनता-जनार्दन ने ऐतिहासिक निर्णय लेकर भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में एक पूर्ण बहुमत की सरकार दी। और आज परिणाम सबके सामने है। पिछले 8 वर्ष में, जो काम 70 वर्षों में पिछली सरकारों ने नहीं किया या करने में विफल थे, इन 8 वर्षों में उसको प्राप्त करने में काफी हद तक हमें सफलता प्राप्त हुई।

चूहे बिलबिलाते हैं, लेकिन दुस्साहस नहीं कर पाते-और खास तौर पर अगर आप देखेंगे, अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में देखें, 1947 से 2017 तक इन 70 वर्षों में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था 12 से 12.50 लाख करोड़ के आसपास झूल रही थी। और ये देश के अंदर छठी-सातवीं अर्थव्यवस्था थी। आज इन आठ वर्षों में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था 27.50 लाख करोड़ पार कर चुकी है और ये देश की नंबर 2 की अर्थव्यवस्था बनी है।

यूपी में सांगठनिक बदलाव की प्रक्रिया तेज

आरएसएस और भाजपा की बैठक संपन्न

महानगर संवाददाता
लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी की उत्तर प्रदेश इकाई में सांगठनिक बदलाव की प्रक्रिया और राज्य सरकार में कैबिनेट विस्तार की चर्चा के बीच गाजियाबाद में अहम बैठक हुई. इस बैठक में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य भी शामिल रहे.

जानकारी के अनुसार RSS की समन्यवय बैठक गाजियाबाद के सरस्वती विद्या मंदिर में हुई. इस बैठक में पश्चिम और ब्रज क्षेत्र को लेकर चर्चा हुई. दावा है कि लोनी से विधायक नंद किशोर गुर्जर के मुद्दे की भी चर्चा हुई. बीते दिनों बीजेपी विधायक लखनऊ भी गए थे. उन्होंने दावा किया था कि राज्य के कई बीजेपी विधायक नाराज हैं। यह बैठक 3 घंटे चली. बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक के वरिष्ठ पदाधिकारी भी मौजूद थे। सूत्रों के मुताबिक संघ के ब्रज और मेरठ प्रान्त के पदाधिकारियों के साथ सीएम योगी और यूपी इकाई के चीफ भूपेंद्र सिंह चौधरी की बैठक हुई। इस बैठक में संघ के 36 अनुषांगिक संगठन के पदाधिकारी भी मौजूद रहे। बैठक में बीजेपी यूपी अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी के अलावा बीजेपी प्रदेश संगठन महामंत्री धर्मपाल, पश्चिमी यूपी बीजेपी अध्यक्ष सतेंद्र सिसौदिया भी मौजूद रहे।

वाराणसी के प्रसिद्ध नमो घाट पर अचानक जमीन धंसी

वाराणसी। वाराणसी के सबसे प्रसिद्ध नमो घाट पर बुधवार की शाम जमीन धंसने से हड़कंप मच गया। जिस जगह पर जमीन धंसी वहां कई दुकानें भी लगीं थीं। जमीन के साथ ही दुकानें में एक तरफ लुढ़क गईं। इससे दुकानदार और ग्राहक भाग खड़े हुए। अचानकर हुए हादसे से अफरातफरी मच गई। फिलहाल वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने रस्सी की बैरिकेडिंग लगाकर लोगों का आना-जाना उधर बंद कर दिया है। हादसे की जानकारी मिलते ही कार्यदायी संस्था और नगर निगम के अधिकारी भी मौके में घटना का जायजा लेने के लिए रवाना हो गए हैं। इस समय वाराणसी में पर्यटकों को सबसे ज्यादा नमो घाट ही लुभा रहा है। बनारस के किसी भी घाट पर जाना हो तो वीवीआईपी भी इसी घाट से स्टीमर और क्रूज की सवारी करते हैं। यही एकमात्र घाट है जहां गंगा के सबसे करीब तक वाहन आ जा सकते हैं।

लखनऊ में नकली सलमान खान गिरफ्तार

बना रहा था रील

महानगर संवाददाता
लखनऊ

लखनऊ में पुलिस ने नकली सलमान खान को गिरफ्तार किया है। सआदतगंज चौपटियाबेग निवासी आजम अली अंसारी खुद को सलमान खान के अंदाज में असलहा लेकर घंटाघर पर रील बना रहा था। उसे देखने के लिए भीड़ जुटी हुई थी और इससे ट्रैफिक जाम हो रहा था। भीड़ बढ़ने पर पहुंची ठाकुरगंज पुलिस ने उसे असलहा के साथ गिरफ्तार किया है।

इंस्पेक्टर श्रीकांत राय ने बताया कि सआदतगंज चौपटियाबेग निवासी आजम अली अंसारी उर्फ नकली समलान खान को ट्रैफिक जाम लगाने की सूचना पर गिरफ्तार किया गया है। मंगलवार को आजम अली घंटाघर के पास बीच सड़क लाइसेंसी रिवॉल्वर लेकर रील बना रहा था। इसकी वजह से यातायात में बाधा पड़ी। कुछ लोगों ने आजम को रास्ते से हटने के लिए कहा। यह बात उसे पसंद नहीं आई। वह उग्र होकर गाली गलौज करते हुए असलहा दिखाकर धमकाने लगा। इंस्पेक्टर ने बताया कि उसके रिवॉल्वर का लाइसेंस निरस्त करने की भी संस्तुति की गई है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर आजम नौशाद अंसारी बॉलीवुड एक्टर सलमान खान के

डुप्लीकेट के नाम से भी मशहूर है। वह अक्सर इस तरह से केवल पैंट में ही सलमान खान के स्टाइल में रील बनाता है। इससे पहले उसे मुंबई में भी गिरफ्तार किया गया था। आजम नौशाद अपनी पत्नी के साथ मुंबई गया था। वहां पर शर्ट उतारकर पत्नी के साथ रील बनाने लगा। बांद्रा स्थित सलमान खान के घर गैलेक्सी अपार्टमेंट के बाहर भी बैठ गया। इसके अलावा होटल ताज के बाहर भी अर्धनग्न होकर रील बनाते हुए इंस्टाग्राम और फेसबुक पर पोस्ट किए थे। इन वीडियो के बाद सुरक्षा के चलते पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया था।

यही नहीं, सार्वजनिक स्थलों पर सिगरेट पीते हुए सलमान खान के गानों पर रील बनाने के कारण उसे पहले भी थाने जाना पड़ा था। 2022 में लखनऊ पुलिस ने उसे बीच सड़क पर रील बनाने के कारण गिरफ्तार किया था।

वक्फ बिल नाकामी पर पर्दा है : अखिलेश यादव

महानगर संवाददाता
लखनऊ

लोकसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पर बहस के दौरान समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद अखिलेश यादव ने कहा कि वक्फ बिल नाकामी पर पर्दा है। भाजपा सरकार हर मोर्चे पर नाकाम। रातोंरात नोटबंदी का फैसला लिया। नोटबंदी की नाकामी पर भी चर्चा जरूरी है। अखिलेश यादव ने कहा कि महंगाई, बेरोजगारी और किसान की आय दोगुनी नहीं कर पाए, उस पर भी चर्चा होनी चाहिए।

वक्फ बिल मुसलमानों के लिए है। मुसलमानों की बात ही नहीं सुन रहे। अखिलेश यादव ने कहा कि वक्फ बिल के पीछे ना नीति सही, ना नियत सही। भाजपा ध्रुवीकरण का फायदा उठानी चाहती है। भाजपा मुस्लिम भाईचारे को बांटना चाहती है। भाजपा को अपने वोटबैंक में गिरावट की चिंता है। अखिलेश यादव ने कहा कि चीन के कब्जे वाली जमीन ज्यादा बड़ा मुद्दा है। चीन ने जिस जमीन पर गांव बसाए वो बड़ा मुद्दा है। रेलवे की जमीनों को बेचा जा रहा है। रेलवे हो या डिफेंस सारी जमीनें भारत की हैं। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा जब भी कोई नया बिल लाती है, तब अपनी नाकामी छिपाती है। महाकुंभ में कितने हिंदू मारे गए, इस पर पर्दा डालने के लिए भाजपा यह बिल लेकर आई है। महाकुंभ में आस्था सबकी है। कोई पहली बार कुंभ नहीं हो रहा था। भाजपा ने ऐसा प्रचार किया कि 144 साल बाद यह कुंभ हो रहा है।

सरकार का दावा था कि हमारी तैयारी सौ करोड़ श्रद्धालुओं की है, महाकुंभ में 30 श्रद्धालु मारे गए, और एक हजार लापता हैं, सरकार जान गंवाने वालों के नाम बताए जाएं। अखिलेश यादव ने कहा कि कुंभ हमारे लिए कारोबार का जरिए नहीं है। महाकुंभ की मौतों पर पर्दा डालने की कोशिश की जा रही है।

भाजपा को ज़मीन से बहुत प्यार है : अखिलेश

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कन्नौज सांसद अखिलेश यादव ने कहा-'भाजपा एक ऐसी पार्टी है जिसे ज़मीन से बहुत प्यार है। उन्होंने रेलवे की ज़मीन बेची, रक्षा की ज़मीन बेची और अब वक्फ की ज़मीन बेची जाएगी। यह सब उनकी नाकामियों को छिपाने की योजना है।' सपा चीफ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी में वोट लेने के लिए, अपने आप को बड़ा नेता बनाने के लिए कौन खराब हिंदू है, कौन खराब फैसले सकता है। कौन ज्यादा किसी को परेशान कर सकता है, इसमें मुकाबला चल रहा है।

यूपी बोर्ड हाई स्कूल एवं इंटरमीडिएट रिजल्ट 20 अप्रैल को!

महानगर संवाददाता
लखनऊ

यूपी बोर्ड हाई स्कूल एवं इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन 24 फरवरी से लेकर 12 मार्च 2025 तक करवाया गया था। दोनों ही कक्षाओं को मिलाकर 55 लाख अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी थी। अब इन सभी स्टूडेंट्स को रिजल्ट जारी होने का इंतजार है जिसके लिए उल्टी गिनती शुरू हो गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् प्रयागराज (UPMSP) की ओर रिजल्ट (UP Board 10th 12th Result 2025) 20 अप्रैल 2025 तक घोषित किया जा सकता है। हालांकि अभी तक बोर्ड की ओर से ऑफिशियल डेट की घोषणा नहीं की

गई है। तेजी से मूल्यांकन कार्य चल रहा है। इसके 10 से 15 दिन बाद रिजल्ट की घोषणा की जा सकती है। ऐसे छात्र जिन्होंने कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में भाग लिया है और उनका प्रैक्टिकल छूट गया है उनको बोर्ड की ओर से एक और मौका दिया गया है। ऐसे छात्रों की प्रायोगिक परीक्षा 7 और 8 अप्रैल को आयोजित की जाएगी। छूटे हुए छात्रों की प्रायोगिक परीक्षा संपन्न होने के बाद बोर्ड की ओर से फाइनल रिजल्ट तैयार किया जायेगा।

ब्रजेश पाठक को गिफ्ट किया नीला ड्रम

महानगर संवाददाता
मेरठ

मेरठ के सौरभ राजपूत हत्याकांड में मर्डर के बाद शव के टुकड़ों को छुपाने के लिए इस्तेमाल नीले रंग के ड्रम को लेकर सोशल मीडिया पर लगातार मीम्स और जोक्स बन रहे हैं। सौरभ को उसकी पत्नी मुस्कान ने अपने प्रेमी साहिल के साथ मिलकर 3 मार्च को मार दिया था और सौरभ के शव के टुकड़े-टुकड़े कर उसे ब्लू ड्रम में भरकर ऊपर से सीमेंट से भर दिया था। लखनऊ में मूर्ख दिवस के मौके पर 1 अप्रैल को आयोजित एक हास्य कवि सम्मेलन में भारतीय जनता पार्टी के नेता और उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक को समाजवादी पार्टी

के प्रवक्ता दीपक रंजन ने मंच पर ब्लू ड्रम तोहफे में देकर महफिल लूट ली। मौजूद लोग यह देखकर लोट-पोट होकर हंसते नजर आए। ब्रजेश पाठक ने इस कार्यक्रम में शामिल होने की तस्वीरों के साथ सोशल मीडिया साइट एक्स पर एक ट्वीट किया और लिखा-"आज लखनऊ में आयोजित 7वें लंतरानी हास्य उत्सव कार्यक्रम में सपत्नीक सम्मिलित होकर प्रसिद्ध कवियों की हृदय को प्रफुल्लित करने वाली हास्य प्रस्तुतियों का आनंद लेते हुए। इस अवसर पर राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), उत्तर प्रदेश सरकार दिनेश प्रताप सिंह, महापौर सुषमा खर्कवाल, विधान परिषद सदस्य पवन सिंह चौहान, प्रसिद हास्य कवि एवं लंतरानी के संस्थापक सर्वेश अस्थाना, मुकेश बहादुर, अरुण जेमिनी, मुकुल महान, पार्थ नवीन, विकास बौखल, विनीत शर्मा, शिखर श्रीवास्तव एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।"

हॉस्टल में बायोटेक की छात्रा ने लगाई फांसी, बवाल

महानगर संवाददाता
जौनपुर

पूर्वांचल विश्वविद्यालय के हॉस्टल में बायोटेक की एक छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। छात्रा की मौत की जानकारी मिलते ही किसी बवाल की आशंका में यूनिवर्सिटी को बंद कर दिया गया है। जौनपुर के ही जलालपुर की रहने वाली छात्रा यहां के रानी लक्ष्मी बाई हॉस्टल में रहती थी। इसी साल 25 नवंबर को उसकी शादी होने वाली थी। फांसी लगाने से पहले वह अपने मंगेतर से ही फोन पर बात कर रही थी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल शुरू कर दी है। तीन डॉक्टरों के पैनल से वीडियो रिकार्डिंग के बीच पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

पुलिस अधीक्षक कौस्तुभ ने बताया कि जलालपुर थाना क्षेत्र के कोतवालपुर गांव की निवासी शिवांगी (22) लक्ष्मीबाई महिला छात्रावास के कमरा नंबर 35 में रह रही थी। छात्रावास में रहने वाली उसकी सहपाठियों के अनुसार शिवांगी रात करीब 11 बजे अपने मंगेतर से जोर-जोर से बात कर रही थी। जब शोर कम हुआ तो उन्होंने उसे बुलाया, लेकिन शिवांगी ने कोई जवाब नहीं दिया।

अवैध ई रिक्शा और ऑटो के खिलाफ चला अभियान

हापुड़। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आदेश पर हापुड़ में अवैध ई रिक्शा व ऑटो के खिलाफ अभियान चलाया गया। इन्हें समझाया जा रहा है कि किसी प्रकार की लापरवाही या खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अभियान चलाकर ऐसे वाहनों पर कार्रवाई करके अंकुश लगाया जाए। हापुड़ आरटीओ तथा ट्रैफिक पुलिस ने अभियान चलाकर 50 से ज्यादा ई-रिक्शा और ऑटो सीज किए।

बता दें कि शहर में ट्रैफिक व्यवस्था में जाम का सबसे बड़ा कारण बनने वाले ई-रिक्शा के खिलाफ परिवहन विभाग तथा ट्रैफिक पुलिस ने 1 अप्रैल से अभियान शुरू किया। जिसमें हापुड़ के ट्रांसपोर्ट नगर में एक्शन हुआ, जहां पर सुबह ट्रैफिक पुलिस तथा परिवहन विभाग के अधिकारियों ने 50 से ज्यादा ई-रिक्शा और ऑटो के खिलाफ कार्रवाई की है। जिसमें कुछ नाबालिग बच्चे और दिव्यांगजन भी ई-रिक्शा चलाते हुए पाए गए। जिसके बाद 50 से ज्यादा ई-रिक्शा और ऑटो को सीज किया गया। ई-रिक्शा और ऑटो के खिलाफ कार्रवाई से ऑटो चालकों में हड़कंप मच गया।

देश अब आंदोलन मांग रहा है : शिवपाल सिंह यादव

महानगर संवाददाता
लखनऊ

केंद्र सरकार ने बुधवार को लोकसभा में वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक पेश कर दिया है। इस बिल को लेकर समाजवादी पार्टी ने सदन में ही जमकर विरोध किया। इससे पहले समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने वक्फ बोर्ड संशोधन बिल पर कहा कि हमारी पार्टी वक्फ संशोधन बिल का विरोध करती है और करती रहेगी। इसके साथ ही सपा नेता ने इशारे में कहा कि सरकार समाज के कुछ लोगों को चुन-चुन कर अपमानित करने का काम कर रही है।

सपा नेता शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लोग देश को बांटने का काम कर

रहे हैं, जिससे देश कमजोर होगा. वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सवाल पर शिवपाल सिंह यादव ने कहा की सभी धर्म के कार्यक्रमों पर सरकार को व्यवस्था करनी चाहिए अगर व्यवस्था नहीं कर पा रहे हैं तो गद्दी को छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा कि संविधान में लिखा है कि सभी समाज के लोगों को अपने-अपने धार्मिक त्योहार मनाने का अधिकार है और सरकारों की उनके त्यौहार को मनाने की व्यवस्था देने का काम होता है। अगर यह व्यवस्था नहीं दे रहे हैं तो यह तानाशाही कर रहे हैं मनमानी कर रहे हैं, पूरा देश अब आंदोलन मांग रहा है।

देश को बांटने का काम कर रही भाजपा

जनता को बीजेपी बांट रही है- शिवपाल यादव

इसके साथ ही शिवपाल सिंह यादव ने कहा की जनता को बीजेपी बांट रही है, जनता अब इसका जवाब देगी. आंदोलन के रूप में आगे के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की सरकारों को समाजवादी पार्टी और इंडिया गठबंधन पूरे देश से उखाड़ फेंकेंगे. यूपी के चुनाव में भी समाजवादी पार्टी पूरी तरह से तैयार है. बीजेपी जहां उत्तर प्रदेश में अपने 8 वर्ष पर पीठ थपथपा रही है, वहीं पूरे प्रदेश में जनता परेशान है. आगे के चुनाव में इसका असर देखने को मिलेगा।

महिलाओं ने शराब का ठेका खुलने पर हंगामा किया

रुदौली। नगर में महात्मा गांधी वार्ड के मलिकजादा मोहल्ले में मंदिर के बगल दारू के ठेके को लेकर स्थानीय लोगों ने जमकर हंगामा किया। नए ठेकेदार द्वारा संचालित ठेका खोलने पर महिलाओं व पुरूषों ने प्रदर्शन किया और नारेबाजी की। हालांकि विरोध-प्रदर्शन के बाद ठेका बंद करना पड़ा। मां काली मंदिर के ठीक सामने दारू का ठेका और ठेके से 50 मीटर की दूरी पर मस्जिद व विद्यालय है। जिससे आम जनता और महिलाओं व बच्चों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि ठेका यहां नहीं खुलने दिया जाएगा।

वक्फ बिल : जमीयत उलेमा ए हिन्द की चेतावनी, कहा

मुसलमान किसी राजनितिक दल का बंधुआ मजदूर नहीं

महानगर संवाददाता
लखनऊ

वक्फ संशोधन बिल आज पार्लियामेंट में पेश हो जायेगा. लेकिन उससे पहले इसका विरोध शुरू हो गया है। जमीयत उलेमा ए हिन्द ने ऐलान किया है कि जो दल कल संसद में बिल का समर्थन करेंगे हम चुनावों में उनका विरोध करेंगे। यह बिल मुसलमानों के खिलाफ है। जमीयत उलेमा ए हिन्द यूपी के कानूनी सलाहकार मौलाना काब राशिदी ने कहा कि जमीयत उलेमा ए हिन्द ने वक्फ बिल के विरोध में दिल्ली कर्नाटक और बिहार में बड़ी रैलियां की हैं. कानूनी सलाहकार ने कहा कि टीडीपी, लोक जनशक्ति पार्टी या जेडीयू हो ये पार्टियां मुसलमानों से वोट लेती हैं। लेकिन भाजपा

सरकार के समर्थन में इस बिल के साथ है तो आने वाले चुनाव में मुसलमान भी इन्हें जवाब दे देंगे. जमीयत इनका विरोध करेगी क्योंकि वक्फ बिल हमारे धर्म के अंदर हस्तक्षेप है और ये पार्टियां इसके साथ खड़ी हैं. मुसलमान किसी राजनितिक दल का बंधुआ मजदूर नहीं है जो इनको वोट करता रहेगा।

मौलाना काब राशिदी ने कहा कि ये पार्टियां मुसलमानों की भावनाओं के खिलाफ काम कर रही हैं। इसलिए हमने इनकी रोजा इफ्तार पार्टियों का भी विरोध किया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सड़क पर नमाज को लेकर दिए गये बयान को उन्होंने भेदभाव करने वाला बताया और उत्तराखंड में धामी सरकार के गांवों के नाम बदलने और मुगलों की निशानियां खत्म करने पर कहा कि फिर तो देश में मुगलों की बनाई हुई जितनी भी इमारतें हैं उन्हें खत्म कर दें। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री के लिए पत्र लिखना चाहिए कि देश में मुगलों की बनाई सभी इमारतें गिरा दें। ये सब मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए हो रहा है।

धूप से बचाव की तैयारी के साथ आएं अयोध्या : राम मंदिर ट्रस्ट

महानगर संवाददाता
अयोध्या

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महामंत्री चंपत राय ने रामनवमी मेला में आने वाले देश-विदेश के श्रद्धालुओं से स्वास्थ्य रक्षा के कुछ उपायों के साथ अयोध्या आने का निवेदन किया है। ट्रस्ट के महामंत्री ने निवेदन कर कहा कि आने वाले दिनों में तापमान और बढ़ने के आसार हैं। ऐसे में श्रद्धालुओं से अपेक्षा है कि वह सिर को धूप से बचाने का उपाय (टोपी, पगड़ी, गमछा आदि) लेकर बाहर निकलें।

उन्होंने कहा कि नींबू, चीनी, नमक अथवा ओआरएस घोल, गिलास को साथ रखें तो अति उत्तम है। जौ के सत्तू

की व्यवस्था हो सके तो लू से तो बचाव होगा ही पेट पर भी संकट नहीं आएगा। उल्लेखनीय है कि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट और प्रशासन की ओर से पेयजल समेत सभी नागरिक सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था की गई है लेकिन धाम तक पहुंचने के रास्ते में भी कोई असुविधा न हो इसके निमित्त ट्रस्ट महामंत्री का निवेदन निश्चित ही महत्वपूर्ण है।

ज्ञानवापी मस्जिद से सटी शृंगार गौरी का दर्शन करने उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

महानगर संवाददाता
वाराणसी

वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर से सटी ज्ञानवापी मस्जिद के पश्चिमी द्वार पर स्थित शृंगार गौरी मंदिर में दर्शन के लिए बुधवार सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। इस दौरान मंदिर की मुक्ति के लिए नारा भी लगा। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद से प्रशासन ने इस मंदिर में नियमित पूजा-अर्चना पर रोक लगा दी थी। पूजा दोबारा शुरू करने के लिए कोर्ट में मामला भी चल रहा है। फिलहाल

श्रद्धालुओं को साल में केवल एक बार चैत्र नवरात्रि के चौथे दिन ही यहां पूजा करने की अनुमति है।

पांच महिलाओं के एक समूह ने 2021 में मंदिर में नियमित पूजा की अनुमति के लिए कोर्ट में याचिका दायर की है। मामला अब भी अदालत में विचाराधीन है। ज्ञानवापी केस दायर करने वाली 4 महिलाओं और वकील विष्णुशंकर जैन भी दर्शन करने पहुंचे। इस दौरान विष्णुशंकर जैन ने कहा कि कोर्ट में हमारी जीत हो, मां से ऐसी कामना की है। सत्यनारायण मंदिर और विश्वनाथ मंदिर के गेट नंबर 4-बी से सुबह 8.30 बजे श्रद्धालुओं की एंट्री कराई गई। दोपहर 12 बजे तक श्रद्धालुओं ने दर्शन किया।

इंतजामिया कमेटी के अध्यक्ष जफर अली की जमानत याचिका पर सुनवाई कल

महानगर संवाददाता
संभल

संभल स्थित शाही जामा मस्जिद की इंतजामिया कमेटी के अध्यक्ष जफर अली की जमानत याचिका पर सुनवाई केस डायरी उपलब्ध न होने के कारण चार अप्रैल तक के लिए टाल दी गई।

एक वकील ने बुधवार को बताया कि शाही जामा मस्जिद इंतजामिया कमेटी के अध्यक्ष जफर अली को 23 मार्च को गिरफ्तार किया गया था और उनकी जमानत याचिका पर पहले 27 मार्च को सुनवाई होनी थी. उस दिन चंदौसी में न्यायाधीश निर्भय नारायण राय की एडीजे-2 अदालत ने अली की अंतरिम

जमानत याचिका खारिज कर दी थी और उनकी स्थायी जमानत याचिका पर सुनवाई के लिए दो अप्रैल की तारीख तय की थी। उन्होंने बताया कि हालांकि, केस डायरी उपलब्ध न होने के कारण मामले को अब चार अप्रैल तक के लिए टाल दिया गया है।

वक्फ बिल पर लोकसभा में तकरार

अखिलेश बोले- जिनके लिए ये बिल है उनकी बात नहीं सुनी जा रही

महानगर नेटवर्क

नई दिल्ली

लोकसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पर बहस के दौरान समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद अखिलेश यादव ने कहा कि वक्फ बिल नाकामी पर पर्दा है। भाजपा सरकार हर मोर्चे पर नाकाम। रातोंरात नोटबंदी का फैसला लिया। नोटबंदी की नाकामी पर भी चर्चा जरूरी है। अखिलेश यादव ने कहा कि महंगाई, बेरोजगारी और किसान की आय दोगुनी नहीं कर पाए, उस पर भी चर्चा होनी चाहिए। वक्फ बिल मुसलमानों के लिए है। मुसलमानों की बात ही नहीं सुन रहे। अखिलेश यादव ने कहा कि वक्फ बिल के पीछे ना नीति सही, ना नियत सही। भाजपा ध्रुवीकरण का फायदा उठानी चाहती है। भाजपा मुस्लिम भाईचारे को

बांटना चाहती है। भाजपा को अपने वोटबैंक में गिरावट की चिंता है। अखिलेश यादव ने कहा कि चीन के कब्जे वाली जमीन ज्यादा बड़ा मुद्दा है। चीन ने जिस जमीन पर गांव बसाए वो बड़ा मुद्दा है। रेलवे की जमीनों को बेचा जा रहा है। रेलवे हो या डिफेंस सारी जमीनें भारत की हैं। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा जब भी कोई नया बिल लाती है, तब अपनी नाकामी छिपाती है।

महाकुंभ में कितने हिंदू मारे गए, इस पर पर्दा डालने के लिए भाजपा यह बिल लेकर आई है। महाकुंभ में आस्था सबकी है। कोई पहली बार कुंभ नहीं हो रहा था। भाजपा ने ऐसा प्रचार किया कि 144 साल बाद यह कुंभ हो रहा है। सरकार का दावा था कि हमारी तैयारी सौ करोड़ श्रद्धालुओं की है, महाकुंभ में 30 श्रद्धालु मारे गए, और एक हजार लापता हैं, सरकार जान गंवाने वालों के नाम बताए जाएं। अखिलेश यादव ने कहा कि कुंभ हमारे लिए कारोबार का जरिए नहीं है। महाकुंभ की मौतों पर पर्दा डालने की कोशिश की जा रही है। इस दौरान अखिलेश यादव ने कहा कि मुझे ईद के कार्यक्रमों में जाने से रोका गया।

लालू की इच्छा मोदी ने पूरी कर दी

लोकसभा में वक्फ बिल पर चर्चा के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव का पुराना भाषण निकालकर सुनाया। शाह ने तंज कसते हुए कहा कि लालू की इच्छा कांग्रेस पूरी नहीं कर पाई थी, अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे पूरा कर दिया है। लालू ने यूपीए कार्यकाल के दौरान वक्फ बोर्ड द्वारा जमीनों को हड़पे जाने का मुद्दा सदन में उठाया था। उनके पुराने भाषण का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को लोकसभा में वक्फ बिल पर सरकार की ओर से बोलते हुए कहा कि आज आरजेडी इस विधेयक का विरोध कर रही है। मगर 2013 में आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने यूपीए सरकार के वक्फ संशोधन बिल का समर्थन किया था। अमित शाह ने कहा, उस समय लालू ने कहा था कि वक्फ बोर्ड ने सारी जमीनें हड़प ली हैं। इनमें सरकारी और गैर सरकारी दोनों तरह की जमीनें शामिल हैं। शाह ने कहा कि लालू ने अपने भाषण में पटना में वक्फ बोर्ड के लोगों द्वारा प्राइम लैंड को बेचने का भी आरोप लगाया था। लालू ने कहा था कि पटना में जितनी डाक बंगला की प्रॉपर्टी थी, उन्हें बेच दिया गया। वहां अब अपार्टमेंट बन गए हैं। भविष्य में ऐसा कड़ा कानून आना चाहिए कि चोरी करने वालों को जल्द सलाखों के पीछे भेजा जाए।

जदयू बोला- विधेयक मुस्लिम विरोधी, ये नैरेटिव गलत

लोकसभा में बुधवार को केंद्रीय मंत्री किरेन रिजीजू ने वक्फ संशोधन विधेयक पेश किया गया। इस विधेयक पर चर्चा के लिए आठ घंटे का समय रखा गया है। सदन में सत्ता पक्ष और विपक्ष विधेयक पर अपने विचार और सुझाव दे रहे हैं। विपक्षी गठबंधन इंडिया के घटक दल इस विधेयक का विरोध कर रहे हैं। वहीं भाजपा समर्थित एनडीए के दल विधेयक के समर्थन में हैं। इस विधेयक को लेकर सदन में जोरदार बहस देखने को मिल रही है।

Waqf Bill के विरोध में मुस्लिम सांसद ने खुद को बताया भगवान राम का वंशज

लोकसभा में बुधवार को विवादास्पद वक्फ संशोधन विधेयक 2024 पर चर्चा हो रही है। इसमें सदन में सरकार और विपक्ष के बीच टकराव देखने को मिला। इस विधेयक का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों के प्रशासन में सुधार, प्रौद्योगिकी-संचालित प्रबंधन शुरू करना, जटिलताओं को दूर करना और पारदर्शिता सुनिश्चित करना है। अधिकांश विपक्ष दल इसका जमकर विरोध कर रहे है। इसी बीच कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने कहा है वह भगवान राम जी के वंशज है, उनको अयोध्या राम मंदिर ट्रस्ट में शामिल किया जाना चाहिए।

वक्फ बोर्ड में गैर मुस्लिमों की क्या भूमिका है?

संसद परिसर में कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने वक्फ बोर्ड में गैर मुस्लिमों की भूमिका पर सवाल उठाए है। उन्होंने कहा कि प्रॉपर्टी वक्फ इसलिए

की जाती है ताकि इसकी कमाई अनाथों और गरीबों, निर्धन लोगों या बेसहारा लोगों के काम आ सकें। कांग्रेस सांसद ने दावा किया है कि यूपी में 78 फीसदी वक्फ की संपत्ति विवादास्पद कर घोषित कर दी। अब कोई भी आकर मालिकाना हक का दावा कर सकता है।

'तो मुसलमान उनको कभी माफ नहीं करेंगे'

सहारनपुर से कांग्रेस सांसद और जेपीसी सदस्य इमरान मसूद ने कहा है कि यदि आज TDP, JDU ने इस मुद्दे पर मुस्लिमों का साथ नहीं दिया तो मुसलमान उनको कभी माफ नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार बार-बार कह रही है कि मुसलमानों को कुछ नहीं होगा। उन्होंने एक प्रावधान किया है कि कोई भी संपत्ति जो सरकारी संपत्ति है, जिसमें सरकार की हिस्सेदारी है, विवादित है, वह संपत्ति तब तक वक्फ नहीं मानी जाएगी। जब तक कि उसकी जांच किसी नामित अधिकारी द्वारा न की जाए।

कांग्रेस सांसद ने खुद को बताया राम जी का वंशज

कांग्रेस नेता ने कहा है कि वक्फ में 22 सदस्य होंगे। 12 से अधिक गैर मुस्लिमों को नियुक्ति होती है तो उनको क्या पता वक्फ क्या है। उन्होंने कहा कि मुझे राम मंदिर ट्रस्ट में करवा दीजिए। सांसद ने खुद को राम जी का वशंज बताया है।

भोपाल में वक्फ संशोधन विधेयक के समर्थन में आतिशबाजी

देशभर में चल रहे विरोध के बीच एक तरफ जहां भारत सरकार द्वारा लोकसभा में वक्फ संशोधन बिल पेश किया जा रहा है तो वहीं, दूसरी तरफ मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से अलग ही नजारा सामने आ रहा है। शहर में लोग सरकार द्वारा पेश किए जा रहे वक्फ संशोधन बिल के समर्थन में नजर आ रहे हैं। शहर के आनंदपुरा, हथाईखेड़ा डेम के पास स्थित मस्जिद रहमत के सामने बड़ी संख्या में इलाके के सैकड़ों लोग इकट्ठे होकर बिल के समर्थन में जश्न मना रहे हैं। राजधानी में वक्फ बोर्ड अमेंडमेंट बिल और पीएम मोदी के समर्थन में जश्न मनाया जा रहा है। बड़ी संख्या में इलाके के पुरुष, बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे अपने अपने घरों से निकलकर ढोल बजाते हुए जमकर आतिशबाजी कर रहे हैं। आनंदपुरा की मस्जिद रहमत के सामने इलाके के लोग इकट्ठे होकर जमकर आतिशबाजी कर रहे हैं तो वहीं ढोल-नगाड़ों पर झूमते नजर आ रहे हैं। लोगों का कहना है कि, बिल को लेकर भ्रामकता फैलाई जा रही है, जबकि ये हमारे हित में है। लोगों का ये तक कहना है कि वो दिल से मोदी जी के साथ हैं। बड़ी संख्या में इकट्ठे लोगों के एक हाथ में गुलाब तो वहीं दूसरे हाथ में 'थैंक्यू मोदी जी' का पोस्टर दिखाई दे रहा है।

अखिलेश बोले- इतनी बड़ी भाजपा, अध्यक्ष नहीं चुन पा रही, शाह ने मुस्कुरा कर दिया जवाब

लोकसभा में बुधवार को वक्फ संशोधन बिल पर चर्चा के दौरान समाजवादी पार्टी (SP) प्रमुख अखिलेश यादव ने भाजपा अध्यक्ष के चुनाव में हो रही देरी पर तंज कसा। अखिलेश ने कहा- भाजपा में एक मुकाबला चल रहा है कि कौन बड़ा है। जो पार्टी यह कहती हो कि वह दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है, वह यह नहीं तय कर पा रही कि पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष कौन होगा।

इस पर गृह मंत्री अमित शाह अपनी सीट से उठे और हंसते हुए कहा- सामने जितनी पार्टियां हैं, उनका राष्ट्रीय अध्यक्ष सिर्फ 5 लोगों को चुनना है, परिवार को। हमारे यहां करोड़ों लोग हैं। समय तो लगेगा ही। अखिलेश जी ने यह बात हंसते हुए कही, इस वजह से मैं भी हंसते हुए कह रहा हूं। आपके (अखिलेश के) यहां जरा भी देर नहीं लगेगी। मैं कहता हूं आप 25 साल तक अध्यक्ष हो..जाओ..।

इसके बाद अखिलेश ने हंसते हुए फिर कहा- अभी जो यात्रा हुई है नागपुर की और गुपचुप जो सोशल मीडिया पर चल रही है। वह 75 साल के एक्सटेंशन की यात्रा तो नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी 30 मार्च को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रम में शामिल होने नागपुर गए थे। अखिलेश का इशारा इसी दौरे को लेकर था।

'टैरिफ बम' का काउंटडाउन शुरू

ट्रंप बोले- अमेरिका के लिए आज आजादी का दिन

महानगर नेटवर्क

वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आज अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में लिखा, 'It's Liberation Day in America' (अमेरिका में आज आजादी का दिन है).' वह अमेरिकी समयानुसार शाम 4:00 बजे (भारतीय समयानुसार रात 1:30 बजे) व्हाइट हाउस के रोज गार्डन में अपने कैबिनेट सदस्यों के साथ टैरिफ की घोषणा करने वाले हैं।

ट्रंप वादा कर रहे हैं कि उनकी नई व्यापारिक नीतियां अमेरिका को 'लूटे जाने' से बचाएंगी और देश को एक 'स्वर्ण युग' की ओर ले जाएंगी. मंगलवार को व्हाइट हाउस ने स्पष्ट किया कि ये नए टैरिफ राष्ट्रपति ट्रंप की घोषणा के तुरंत बाद लागू

हो जाएंगे. इस टैरिफ का उद्देश्य उन 'अनुचित व्यापार नीतियों' का मुकाबला करना है, जिनसे अमेरिकी श्रमिकों और उद्योगों को नुकसान हुआ है.

ट्रंप ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'काफी समय से अमेरिका दुनिया का गुल्लक बना हुआ था. आज, हम नियंत्रण वापस ले रहे हैं. यह हमारा लिबरेशन डे है- अनुचित व्यापार समझौतों, अमेरिकी सामानों पर लगाए गए भारी शुल्क और हमारे व्यवसायों व श्रमिकों को नुकसान पहुंचाने वाली नीतियों से आज़ादी का दिन.' ट्रंप प्रशासन के इस कदम से चीन, यूरोपीय संघ, भारत, जापान, मेक्सिको और कनाडा जैसे प्रमुख व्यापारिक साझेदार प्रभावित होंगे।

बनासकांठा पटाखा गोदाम विस्फोट में 21 मौतें

जांच के लिए SIT का गठन

महानगर नेटवर्क

बनासकांठा

गुजरात के बनासकांठा जिले में पटाखा गोदाम में हुए भीषण विस्फोट में 21 लोगों की मौत हो गई थी. इस मामले में गुजरात सरकार ने जांच के लिए 4 सदस्यीय विशेष जांच टीम (SIT) गठित की है.

राजस्व विभाग के IAS अधिकारी भाविन पंड्या को इस कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया है. इसके अलावा उप महानिरीक्षक विशाल वाघेला, फॉरेंसिक साइंस लैबोरेटरी के निदेशक एचपी. संघवी और रोड एंड बिल्डिंग विभाग के मुख्य अभियंता जे.ए. गांधी को भी समिति में शामिल किया गया है.

SIT इस विस्फोट की वजहों की गहराई से जांच करेगी. साथ ही, यह भी देखा जाएगा कि इस पटाखा

गोदाम को जीआईडीसी इलाके में मंजूरी कैसे मिली. प्रशासन की भूमिका और संबंधित अधिकारियों की लापरवाही की भी जांच होगी. यह हादसा फैक्ट्री में बॉयलर फटने की वजह से हुआ था. पुलिस ने मुख्य आरोपी दीपक मोनानी और उसके पिता को गिरफ्तार कर लिया था.

अधिकारी की लापरवाही सामने आती है तो सख्त कार्रवाई की जाएगी. इस हादसे ने पूरे इलाके में दहशत का माहौल बना दिया है. स्थानीय लोग मांग कर रहे हैं कि इस तरह के अवैध गोदामों की जांच कर सख्त कदम उठाए जाएं।

उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री पीयूष गोयल ने किया एडवांस्ड रोबोटिक सिस्टम का अनावरण

महानगर नेटवर्क

नई दिल्ली\ मुंबई

कापड़िया हॉस्पिटल ने घुटने की रिप्लेसमेंट सर्जरी के लिए भारत में डिजाइन की गई एडवांस्ड रोबोटिक सिस्टम, MISSO को स्थापित करके अपनी आर्थोपेडिक केयर (देखभाल) को और भी बेहतर बनाया है। मुंबई में यह पहला इंस्टॉलेशन है। MISSO स्मार्ट टेक्नोलॉजी को सर्जिकल कुशलता के साथ जोड़ता है, जिससे उत्तम चिकित्सा परिणाम और तेजी से रिकवरी होती है, जो अंततः गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा को अधिक सुलभ बनाता है। भारत के उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री पीयूष गोयल द्वारा लॉन्च किए गए, MISSO ने रोबोटिक ज्वाइंट रिप्लेसमेंट में एक नया बेंचमार्क

स्थापित किया है, जो अपनी कार्यक्षमता और नवीनता के लिए मान्यता प्राप्त कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा सराहना किया गया MISSO का AI-संचालित अधिक सटीक और न्यूनतम इन्वेसीव अभिगम, तेजी से रिकवरी और बेहतर सर्जिकल परिणाम को और भी सक्षम बनाता है। कापड़िया हॉस्पिटल के रोबोटिक घुटने और कंधे के सर्जन डॉ. राहुल मोदी ने कहा कि, "MISSO ने सर्जिकल विशेषज्ञता के साथ अत्याधुनिक AI को जोड़कर भारत में आर्थोपेडिक सर्जरी को और भी बेहतर बनाया है। एक स्वदेशी रोबोटिक सिस्टम के रूप में, यह सटीकता बढ़ाता है।

सीएम रेखा गुप्ता की बड़ी घोषणा

CAG रिपोर्ट सामने आने के बाद 'हवा' पर लिया फैसला

नई दिल्ली। दिल्ली के वायु प्रदूषण पर कैग रिपोर्ट सामने आने के बाद सीएम रेखा गुप्ता ने बुधवार को बड़ा फैसला लिया है। विधानसभा में बजट सत्र के दौरान उन्होंने ऐलान किया कि दिल्ली में वायु प्रदूषण की पल-पल निगरानी की जाएगी। इसके लिए छह नए वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्र खोले जाएंगे। दिल्ली में 27 साल बाद सत्ता में लौटी भाजपा सरकार का यह दिल्ली की आबोहवा सुधारने की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है। इससे पहले मंगलवार को सीएम रेखा गुप्ता

ने वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण की रोकथाम को लेकर CAG की रिपोर्ट विधानसभा में पेश की थी। इसमें आम आदमी पार्टी की तमाम खामियां भी गिनाईं थी।

दिल्ली विधानसभा में बजट सत्र के आखिरी दिन सीएम रेखा गुप्ता ने दिल्ली में प्रदूषण का स्तर सुधारने की दिशा में बड़ा कदम उठाया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली में छह नए वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्रों की स्थापना के साथ ही साल 2026 तक 48,000 ईवी चार्जिंग प्वाइंट भी उपलब्ध कराए जाएंगे।

मंडला-बालाघाट बॉर्डर पर पुलिस-नक्सली

14-14 लाख की इनामी दो महिला नक्सली ढेर

महानगर नेटवर्क

मंडला

मध्य प्रदेश के मंडला और बालाघाट जिले की सीमा पर बुधवार को पुलिस और नक्सलियों के बीच बड़ी मुठभेड़ की खबर सामने आई है। बताया जा रहा है कि, इस एनकाउंटर में दो महिला नक्सलियों को ढेर किया गया है। अन्य नक्सली मौके से फरार हो गए हैं। फिलहाल, हॉकफोर्स का सर्चिंग ऑपरेशन जारी है।इस मुठभेड़ की पुष्टि बालाघाट पुलिस अधीक्षक एसपी रजत सकलेचा ने भी कर दी है। उनका कहना है कि बुधवार सुबह सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच गोलीबारी हुई है। इसी दौरान दोनों महिला नक्सली को मार गिराया है। उनके कब्जे से एक एसएलआर राइफल और एक राइफल, वायरलेस सेट और अन्य दैनिक उपयोगी सामग्री बरामद की गई है। फिलहाल, पुलिस और हॉकफोर्स की सर्चिंग जारी है। बताया

जा रहा है दोनों मृतक नक्सलियों पर 14-14 लाख रुपए इनाम था। बता दें कि अभियान में खासतौर पर नक्सली गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए गठित हॉक फोर्स शामिल है। यह फोर्स मध्य प्रदेश के उन इलाकों में सक्रिय है, जहां नक्सली गतिविधियां लंबे समय से चल रही हैं। पुलिस का दावा है कि, अभियान का उद्देश्य क्षेत्र में नक्सलियों के प्रभाव को कमजोर करना और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना है।

सूचना पर शुरु हुआ था सर्च ऑपरेशन

छत्तीसगढ़ से सटे मध्य प्रदेश के बालाघाट और मंडला जिले नक्सल प्रभावित इलाके कहे जाते हैं। इन इलाकों में समय-समय पर नक्सली गतिविधियां देखने को भी मिलती हैं। पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां लगातार नक्सल विरोधी अभियानों को अंजाम दे रही हैं। पुलिस का कहना है कि, खुफिया सूत्रों से उन्हें सूचना मिली थी कि, नक्सली इस इलाके में सक्रिय हैं और किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की फिराक में हैं। इसी सूचना के आधार पर सुरक्षा बलों ने इलाके में सर्च ऑपरेशन शुरू किया और मुठभेड़ हो गई। फिलहाल, मुठभेड़ के बाद इलाके में सर्च ऑपरेशन तेज कर दिया गया है।

आसाराम को फिलहाल राहत नहीं, अटक गया रोड़ा

जोधपुर। यौन उत्पीड़न के मामलों में आजीवन कारावास की सजा काट रहे आसाराम को फिलहाल राजस्थान हाईकोर्ट से कोई राहत नहीं मिली है। उनकी अंतरिम जमानत बढ़ाने को लेकर दायर याचिका पर बुधवार को सुनवाई हुई, लेकिन मामला अधूरा रह गया। अब इस पर अगली सुनवाई 7 अप्रैल को होगी।

इधर, बीते मंगलवार को अंतरिम जमानत अवधि खत्म होने के बाद दोपहर में आसाराम ने जोधपुर सेंट्रल जेल में सरेंडर किया था। यहां करीब 10 घंटे रुकने के बाद रात 11:30 बजे पाली रोड स्थित एक प्राइवेट हॉस्पिटल (आरोग्यम) में शिफ्ट

किया गया था। बताया जा रहा है कि आसाराम की तबियत बिगड़ने के बाद अस्पताल ले जाया गया है। दरअसल, हाईकोर्ट ने आसाराम और पीड़िता, दोनों से एफिडेविट मांगा है। पीड़िता के अधिवक्ता ने कोर्ट में दलील दी कि आसाराम ने पहले भी अदालत की शर्तों का उल्लंघन किया है।

लोन नहीं मिलने पर बैंक से लूटा 17 किलो सोना

बेंगलुरु। कर्नाटक के दावणगेरे जिले के एक शख्स ने लोन नहीं मिलने पर बैंक से 17 किलो सोना लूट लिया। पुलिस ने बताया- चोरी का मुख्य आरोपी विजयकुमार (30 साल) आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। उसने अगस्त 2023 में SBI बैंक में 15 लाख रुपए के लोन के लिए अप्लाई किया था, लेकिन उसका एप्लिकेशन रिजेक्ट हो गया। इससे नाराज होकर उसने बैंक से 13 करोड़ रुपए का सोना लूटा।

पुलिस ने कहा- आरोपी विजयकुमार को स्पैनिश क्राइम ड्रामा सीरीज 'मनी हाइस्ट' से चोरी का आइडिया आया। इसके बाद उनके यूट्यूब वीडियो देखकर 6-9 महीने में बैंक लूट की प्लानिंग की। बैंक लूटने में उसने भाई अजयकुमार, बहनोई परमआनंद और तीन अन्य साथी अभिषेक, चंदु और मंजूनाथ की भी मदद ली। पुलिस ने फिलहाल सभी 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी विजयकुमार ने बैंक लूटने से पहले अपने 5 साथियों के साथ मिलकर कई महीने प्लानिंग की। विजयकुमार और चंदू ने कई बार बैंक की रेकी की। उन्होंने रात को सुनसान खेतों से बैंक तक जाने की मॉक ड्रिल की ताकि पुलिस और आम लोगों की मूवमेंट का अंदाजा ना हो सके। इसके बाद गैंग ने खिड़की से बैंक में एंट्री ली। साइलेंट हाइड्रोलिक आयरन कटर और गैस-कटिंग टूल्स का इस्तेमाल करके बैंक के लॉकर तोड़े। किसी ने भी फोन का इस्तेमाल नहीं किया।

आनंद और सामाजिक सौहार्द्र के साथ किया गया आयोजन

नई दिल्ली \ मुंबई। एकता और परंपरा के जीवंत उत्सव के रूप में, मुलुंड स्थित प्रीमियम गेटेड कम्युनिटी एटमॉस्फियर O2 में हाल ही में गुड़ी पड़वा और उगादी के भव्य आयोजन के साथ नए साल का स्वागत उत्साह, आनंद और सामाजिक सौहार्द्र के साथ किया गया। यह आयोजन एक बड़ी सफलता रही, जिसने एकजुटता की भावना को दर्शाया — जहां जीवन के हर क्षेत्र, जाति और धर्म से जुड़े निवासी एक साथ इस पर्व में शामिल हुए। उ त्सव की शुरुआत "छत्रपति शिवाजी महाराज की जय" के उद्घोष के साथ हुई, जिसने पूरे परिसर में जोश और ऊर्जा का संचार कर दिया। परंपरा के अनुसार, एटमॉस्फियर O2 के निवासियों ने केसरिया पगड़ियाँ धारण कीं, जिससे पूरे परिसर में शोभा यात्रा के दौरान केसरिया रंग की एक लहर सी दौड़ गई — जो कि दिन की सबसे प्रमुख आकर्षण रही। इस भव्य उत्सव की एक विशेष झलक रही लेजिम नृत्य, जो महाराष्ट्र की पारंपरिक लोकनृत्य शैली है और जिसकी ऐतिहासिक जड़ें छत्रपति शिवाजी महाराज के काल से जुड़ी हैं। इस बार यह नृत्य और भी खास बन गया क्योंकि इसमें बच्चों से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। आमतौर पर मोबाइल या स्क्रीन से जुड़े रहने वाले बच्चों ने इस कार्यक्रम के लिए 15 दिनों तक अभ्यास किया।

बृहन्मुंबई महानगरपालिका

मु. अभि. (एस.ओ.) विभाग

क्र. ई.ई.एम./सीव./37 शहर-1, दि. 02 अप्रैल 2025

ई-निविदा सूचना

बृहन्मुंबई महानगरपालिका आयुक्त द्वारा निम्नलिखित ऑनलाइन निविदा आमंत्रित की जाती है. निविदा प्रति, महाटेंडर पोर्टल (http://mahatenders.gov.in/nicgep/app) पर ई-प्रोक्योरमेंट अनुभाग से डाउनलोड की जा सकती है.

अ. क्र	कार्य का विवरण	निविदा संदर्भ क्र.	ईएमडी ₹ में	निविदा शुल्क ₹ में	निविदा की निर्धारित तिथि
1	ए.ई. (पंपिंग) सेंट्रल जोन अंतर्गत माहिम स्टाफ क्वार्टर्स में विभिन्न सम्बद्ध कार्यों के निष्पादन का कार्य	निविदा आई.डी. : 2025_एमसीजीएम_ 1166858_1	10,000/-	1320.00/- + 18% जीएसटी	11.04.2025 को सायं. 04.00 बजे तक

अधिक जानकारी के लिए लॉग ऑन करें : http://mahatenders.gov.in/nicgep/app

हस्ता./-

पीआरओ/21/विज्ञा./2025-26 ई.ई.मेके. (सीव.) शहर-I, प्रभारी

शरीर में हो बुखार की आंच, तो तत्काल करायें अपने खून की जांच

चैत्र नवरात्रि के पांचवें दिन मां दुर्गा स्कंदमाता स्वरुप की पूजा की जाती है। मां स्कंदमाता शक्ति, मातृत्व और करुणा की प्रतीक हैं। इन्हें भगवान कार्तिकेय, जिन्हें स्कंद कुमार भी कहा जाता है, उनकी माता के रुप में पूजा जाता है। इनका स्वरुप अत्यंत ही दिव्य और तेजस्वी है। माता कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं, इस नाते इन्हें पद्मासना भी कहा जाता है। इनकी चार भुजाएं हैं, जिनमें से दो में कमल का फूल सुशोभित है। एक भुजा अभय एवं वरद मुद्रा में उठी हुई है, जिससे वे भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करती हैं, जबकि दूसरी भुजा से उन्होंने अपनी गोद में बैठे पुत्र कार्तिकेय को पकड़ा हुआ है। मां स्कंदमाता की पूजा करने से साधक को शांति और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

चैत्र नवरात्रि के पांचवें दिन स्कंदमाता की पूजा

मां स्कंदमाता पूजा विधि

नवरात्रि के पांचवें दिन, मां स्कंदमाता की पूजा के लिए, सुबह जल्दी उठकर स्नान करें, पीले वस्त्र पहनें, देवी की प्रतिमा या फोटे पर गंगाजल छिड़कें, रोली-कुमकुम लगाएं, पुष्प, फल और केले का भोग लगाएं, मंत्रों का जाप करें और आरती करें।

मां स्कंदमाता मंत्र :

चैत्र नवरात्रि के पांचवें दिन आप मां स्कंदमाता के इन सिद्ध मंत्रों का जाप कर सकते हैं –
ह्रीं क्लीं स्वमिन्यै नम:
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्कन्दमातायै नम:
या देवी सर्वभूतेषु माँ स्कंदमाता रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।

मां स्कंदमाता शुभ रंग :

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मां स्कंदमाता की पूजा के दौरान सफेद और पीले रंग के वस्त्र धारण करना उचित माना जाता है। सफेद और पीला रंग मां स्कंदमाता को प्रिय है। इन रंगों के वस्त्र धारण करने से माता प्रसन्न होती हैं।

मां स्कंदमाता का भोग :

मां स्कंदमाता को केले और केले से बनी चीजों का भोग लगाया जाता है। केले के अलावा माता को खीर-पूड़ी, हलवा-पूड़ी, पीले रंग की मिठाइयां, केसर की खीर का भोग भी लगाया जा सकता है।

वास्तु के अनुसार खिड़की के पास न रखें ये चीजें

वास्तु शास्त्र का हमारे जीवन में काफी प्रभाव पड़ता है कहते हैं के घर का निर्माण करते समय या दरवाजों और खिड़कियों बनाते समय हमें वास्तु का खास धयान रखना चाहिए। दरअसल, दरवाजों और खिड़कियों से ऊर्जा अंदर और बाहर प्रवाहित होती है। इसलिए हमेशा कुछ विशिष्ट दिशाएं हैं जहां खुला स्थान या खिड़कियां रखनी चाहिए। सिर्फ यही नहीं बल्कि खिड़कियों के पास कुछ चीजें नहीं रखनी चाहिए। इसी के साथ चलिए आपको विस्तार से बताते हैं कि आपको क्या रखना चाहिए और क्या नहीं।

- खिड़की के सामने डिश या एन्टीना लगाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है। जिसका प्रभाव घर की आर्थिक स्थिति के साथ साथ स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।
- वास्तु शास्त्र के अनुसार घर की खिड़कियां हमेशा इस तरह बनवानी चाहिए कि वो घर के अंदर खुले न की बाहर की ओर। साथ ही इसबात का ध्यान दें कि खिड़कियां खोलते समय उसमें आवाज न हो।
- वास्तु शास्त्र के अनुसार खिड़की का निर्माण उत्तर दिशा की ओर कराया जाए,तो अच्छा होगा। उत्तर दिशा धन के देवता कुबेर की दिशा कहा जाता है। ऐसे में उत्तर दिशा में खिड़की होने से घर में बरकत बनी रहती है।
- खिड़कियों को प्रतिदिन थोड़ी देर के लिए जरूर खोलना चाहिए। इससे घर में अच्छे प्रकाश के साथ सकारात्मक ऊर्जा का वास रहता है।
- पश्चिम दिशा में खिड़कियां रखीं जा सकती हैं। बस ध्यान रखें कि पश्चिम दिशा में छोटी खिड़कियां रखना सबसे अच्छा होता है। यदि पश्चिम में खुली जगह है,तो उस दिशा में खिड़कियों से बचना बेहतर है।
- हमें खिड़कियों को दक्षिण-पश्चिम दिशाओं में नहीं रखना चाहिए। इस खिड़की से हवा, प्रकाश आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं।

फैटी लिवर की समस्या से बचाएंगे ये फूड्स

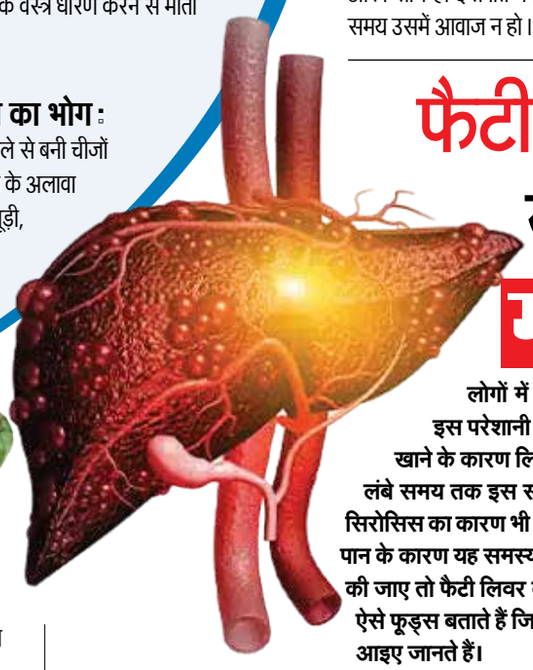

गलत खान-पान और खराब लाइफस्टाइल के चलते बहुत से लोग फैटी लिवर की समस्या से जूझ रहे हैं। जहां पहले बढ़ती उम्र के लोगों में यह समस्या होती थी वहीं आज ज्यादातर युवा इस परेशानी का सामना कर रहे हैं। जंक फूड्, ज्यादा तला भुना खाने के कारण लिवर के आस-पास फैट जमा होने लगता है। ऐसे में यदि लंबे समय तक इस समस्या पर ध्यान न दिया जाए तो इसके कारण लिवर सिरोसिस का कारण भी बन सकता है। एक्सपर्ट्स की मानें तो जैसे गलत खान-पान के कारण यह समस्या होती है वैसे ही यदि डाइट में कुछ खास चीजें शामिल की जाए तो फैटी लिवर की समस्या से राहत पाई जा सकती है। ऐसे में आज आपको कुछ ऐसे फूड्स बताते हैं जिनका सेवन करने से आप फैटी लिवर की समस्या से बच सकते हैं। आइए जानते हैं।

जैतून का तेल

जैतून का तेल मोनोअनसैचुरेटेड फैट्स से भरपूर माना जाता है। इसमें ओलेयूरोपिन नाम का शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है। ऐसे में यह लिवर एंजाइम के स्तर को सही रखने और लिवर में होने वाली सूजन को कम करने में मदद करता है।

एवोकाडो :-

इसमें मोनोअनसैचुरेटेड फैट, फाइबर और ग्लूटाथियोन जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स मौजूद होता है। ऐसे में यह लीवर को डैमेज होने से बचाने और इसे स्वस्थ रखने में मदद करता है।

साबुत अनाज

ओटस, क्विनोओ, ब्राउन राइस जैसी फूड आइटम्स में विटामिन्स और मिनरल्स पाए जाते हैं। यह सिर्फ ब्लड शुगर ही कंट्रोल नहीं करते बल्कि इंसुलिन की प्रतिरोधक क्षमता भी कम करने में मदद करते हैं। इनका सेवन करने से लिवर में मौजूद एक्स्ट्रा फैट को कम करने में मदद मिलती है।

जामुन :-

ब्लूबेरी, स्ट्रॉबेरी और रास्पबेरी एंथोसायनिन और विटामिन-सी जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह सारे गुण लीवर की सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव कम करने में मदद करते हैं।

लहसुन

इसमें एलिसिन और सेलेनियम जैसे मिनरल्स पाएं जाते हैं। यह लिवर को होने वाले नुकसान से बचाते हैं और सूजन भी कम करते हैं। इसका सेवन करने से लिवर के एंजाइम्स के स्तर सुधारने में भी मदद करते हैं।

ग्रीन टी :-

इसमें कैटेचिन नाम का एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है जो लिवर की कार्यप्रणाली सुधारता है। इसके अलावा यह लिवर में जमे फैट को कम करती है और लिवर संबंधी समस्याओं को दूर रखती है।

गर्मियों में शरीर को हाइड्रेट रखेगा खीरा

गर्मी के मौसम में खीरा काफी मात्रा में पाया जाता है। सलाद के तौर पर इसका सेवन शरीर के लिए बेहद लाभकारी माना जाता है। इसमें फाइबर, प्रोटीन, विटामिन-सी, विटामिन-के जैसे पोषक तत्व मौजूद होते हैं जो शरीर को एनर्जेटिक रखने में मदद करते हैं। डायबिटीज के मरीज भी इसका सेवन कर सकते हैं। इसे खाने से ब्लड शुगर कंट्रोल में रहती है। खीरा कई तरह की बीमारियों को दूर रखता है और शरीर को लंबे समय तक हेल्दी भी रखता है। सिर्फ यही नहीं इसका सेवन करने से शरीर को कुछ और स्वास्थ्य लाभ भी होते हैं तो आइए जानते हैं इनके बारे में।

पाचन बनेगा मजबूत

गर्मियों में खीरा खाने से पाचन तंत्र मजबूत बनता है। इसमें फाइबर काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है ऐसे में यह कब्ज की समस्या को आसानी से दूर करता है। खीरा खाने से मल सॉफ्ट होता है और पेट साफ होता है। इसके अलावा खीरा खाने से जी मिचलाना, गैस और अपच जैसी समस्याओं से भी छुटकारा मिलता है।

इम्यूनिटी बनेगी मजबूत

खीरा इस मौसम में खाने से इम्यूनिटी पॉवर भी मजबूत होती है। इसमें विटामिन-सी काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है,जो इम्यूनिटी को मजबूत बनाने और बीमारियां दूर रखने में मदद करता है। इस मौसम में खीरा खाने से शरीर वायरल इंफेक्शन जैसे सर्दी, फ्लू जैसी समस्याओं से भी दूर रहता है।

डिहाइड्रेशन होगी दूर

इसका सेवन करने से बॉडी की और भी कई समस्याएं दूर होती हैं। शरीर के मेटाबॉल्जिम को बनाए रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी की जरुरत होती है। ऐसे में खीरे का रोजाना सेवन करने से शरीर को 40% पानी मिलता है। इसमें पाए जाने वाले इलेक्ट्रोलाइट्स शरीर को हाइड्रेट रखकर डिहाइड्रेशन से भी बचाव करते हैं।

वजन घटाने में मिलेगी मदद

वजन कम करने के लिए भी खीरे का सेवन बेहद लाभकारी माना जाता है। इसमें कैलोरी कम मात्रा और फैट बिल्कुल भी नहीं मौजूद होता है। ऐसे में इसका सेवन करने से वजन घटाने में मदद मिलती है।

ब्लड प्रेशर रहेगा कंट्रोल

पोषक तत्वों से भरपूर खीरे का सेवन करने से ब्लड प्रेशर की समस्या भी आसानी से दूर होती है। खीरे में मैग्नीशियम और पोटेशियम काफी अच्छी मात्रा में मौजूद होता है ऐसे में यह ब्लड प्रेशर कम करने और शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करता है। इसका सेवन करने से ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहता है।

होममेड स्क्रब्स से निखर जाती है त्वचा

चेहरे पर कई कारणों से स्क्रब किया जाता है। स्क्रब चेहरे से डेड स्किन सेल्स को हटाते हैं, स्किन को मुलायम बनाते हैं, त्वचा पर ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है, बंद छिद्र खुलने लगते हैं और त्वचा बेहतर तरह से स्किन केयर प्रोडक्ट्स को सोख पाती है। बाजार में भी कई तरह के स्क्रब्स मिलते हैं लेकिन आप घर पर भी बेहद आसानी से स्क्रब्स बनाकर लगा सकते हैं। गर्मियों में स्किन धूल-मिट्टी और धूप की चपेट में आने से बेजान नजर आने लगती है और त्वचा पर डेड स्किन सेल्स जम जाती हैं। ऐसे में घर पर ही स्क्रब तैयार करके चेहरे को एक्सफोलिएट कर सकते हैं। स्किन निखरती भी है और बेदाग नजर आने लगती है सो अलग.

एलोवेरा और टमाटर – इस स्क्रब से चेहरे को कुछ कम फायदे नहीं मिलते हैं। एक चम्मच एलोवेरा में एक चम्मच ही टमाटर का पल्प मिला लें। दोनों चीजों को साथ मिक्स करें और चेहरे पर कुछ देर मलने के बाद धोकर हटा लें। इस पेस्ट को फेस मास्क की तरह भी लगाकर रखा जा सकता है।

कॉफी स्क्रब – एंटी-ऑक्सीडेंट गुणों के चलते कॉफी चेहरे को निखारने में असरदार होती है। वहीं, इस स्क्रब को बनाने में नारियल के तेल का भी इस्तेमाल होता है जिससे त्वचा को हाइड्रेटिंग गुण मिलते हैं। इस स्क्रब को बनाने के लिए एक चौथाई कप पिसी कॉफी लें और उसमें 2 चम्मच नारियल का तेल और एक चम्मच चीनी मिला लें। तीनों चीजों को अच्छे से मिक्स करने के बाद चेहरे पर लगाकर हल्के हाथों से मलें। एक से डेढ़ मिनट बाद साफ पानी से चेहरा धोकर साफ कर लें, त्वचा निखर जाएगी।

शुगर और लेमन स्क्रब – नींबू के रस और चीनी को मिक्स करके इस फेस स्क्रब को बनाया जाता है। एक चम्मच चीनी में आधा चम्मच नारियल का तेल और 1 चम्मच नींबू का रस मिला लें। इसमें नींबू के छिलके को घिसकर भी डाल दें। बस तैयार है आपका स्क्रब। इसे चेहरे पर मलने से स्किन एक्सफोलिएट होती है और डेड स्किन सेल्स निकल जाती हैं।

दही का स्क्रब – गर्मियों में चेहरे से टैनिंग दूर करने के लिए इस स्क्रब को लगाया जा सकता है। दही का स्क्रब बनाने के लिए आपको एक चम्मच दही में एक चम्मच संतरे का रस और एक आधा चम्मच शहद मिलाकर पेस्ट तैयार करना है। इस तैयार स्क्रब को चेहरे पर मलें और फिर चेहरा धोकर साफ कर लें।

दूध के दांतों की देखभाल भी है जरूरी

छोटे बच्चों की ग्रोथ के साथ ही साफ- सफाई और हाइजीन की रुटीन बनानी जरुरी है। इस लिस्ट में सबसे पहले नाम आता है ओरल हाइजीन का। ओरल हाइजीन यानी के दांतों ओर मुंह की सफाई। ज्यादातर पैरेंट्स अपने बच्चों की दूध की दांतों की सफाई की जरुरी नहीं समझते, पर ये गलत है। ये जरुरी है,क्योंकि मुंह में बहुत सारे कीटाणु होते हैं जो पेट तो जाकर बीमार तो करते ही हैं, इससे दांत भी सड़ जाते हैं। इसलिए जरुरी है कि बच्चों को टूथब्रश की ट्रेनिंग देना जरुरी है।

आमतौर पर बच्चों के दांत 6 महीन के होने के साथ ही निकलने शुरू हो जाते है। ऐसे में बच्चों के इन दांतों की सफाई आप मुलायम कपड़े की मदद से कर सकते हैं। इससे दांतों के साथ मसूड़े और जीभ भी आसानी से साफ हो जाएंगे। जब बच्चा एक से डेढ़ साल के बीच हो तो उनके लिए बिल्कुल सॉफ्ट ब्रिसल्स वाले टूथब्रश की मदद से दांतों को साफ करें। इससे दांतों में जमा गंदगी साफ हो जाएगी। हालांकि टूथ-पेस्ट का इस्तेमाल न करें। वो उसे निघल लगेंगे।

बच्चे जब डेढ़ साल के हो जाते हैं,तो उसके बाद से लेकर करीब 6 साल तक के बच्चों को मटर के आकार जितना टूथपेस्ट से दातों को क्लीन करें। इस बात का ध्यान रखें कि टूथपेस्ट लो फ्लूरॉइड वाला हो। बच्चे जब 6 साल के हो जाएं तो उसके बाद उन्हें स्टैंडर्ट फ्लूरॉइड वाले टूथपेस्ट की मदद से टूथब्रश करवाना जरूरी होता है। फ्लूरॉइड दांतों की सड़न रोकने का सबसे जरूरी इंग्रीडिएंट्स हैं। टूथब्रश से दांतों को साफ करने के साथ ही बच्चों के मुंह की सफाई के लिए जीभ की क्लीनिंग भी जरूरी है। टंग क्लीनर की मदद से जीभ को जरूर साफ करें। बच्चा अगर छोटा है,तो मुलायम कपड़े की मदद से जीभ को साफ करें। इससे मुंह की बैक्टीरिया साफ हो जाएगी।

'पालक कॉर्न चीज मोमोज'

बच्चों की फेवरेट स्ट्रीट फूड डिशेस में से एक मोमोज भी हैं। मोमोज का नाम सुनते ही हर किसी के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान आ जाती है, लेकिन सेहत की ओर से देखा जाए तो बाजार से मिलने वाले मोमोज हेल्दी नहीं होते जिससे आपकी सेहत को भी नुकसान हो सकता है। ऐसे में आप घर पर पालक कॉर्न चीज मोमोज बना सकती हैं जो बाहर से ज्यादा स्वादिष्ट और बेहद हेल्दी भी होंगे। ये यक़ीनन सिर्फ बच्चों को ही नहीं बल्कि बड़ों को भी बेहद पसंद आएंगे। इन्हें बनाने में भी ज्यादा समय नहीं लगता। तो चलिए इसी के साथ अब इसकी विधि के बारे में -

आवश्यक सामग्री :- मैदा – 1 कप, नमक – स्वादानुसार, पानी – आवश्यकतानुसार, ऑलिव ऑयल – 1 चम्मच,पालक – 1 कप, स्वीट कॉर्न – 1/2 कप, बारीक कटा लहसुन – 3 कलियां, काली मिर्च पाउडर – 1/2 चम्मच, चिली फ्लेक्स – 1/2 चम्मच, कद्दूकस किया चीज – 1/2 कप.

बनाने की विधि :

- सबसे पहले मैदा में नमक मिलाएं और आवश्यकतानुसार पानी की मदद से गूंथ कर दो घंटे के लिए ढककर छोड़ दें।
- पालक को अच्छी तरह से धोकर बारीक काट लें। पैन में तेल गरम करें और उसमें लहसुन की कलियां डालें।
- दो से तीन मिनट तक भूनें। अब पैन में पालक और कॉर्न डालें और 5-6 मिनट तक पकाएं।
- नमक, काली मिर्च पाउडर और चिली फ्लेक्स डालकर मिलाएं और गैस बंद कर मिश्रण को ठंडा होने दें।
- मोमो स्टीमर या इडली स्टीमर में पानी गरम करने के लिए रख दें। गूंथे हुए मैदे से छोटी-छोटी लोई काटें और उन्हें बेल लें।
- उनमें 1-1 चम्मच तैयार भरावन डालें। उसके ऊपर थोड़ा-सा कद्दूकस किया चीज डालें और मोमो को मनचाहा आकार दें।
- भरे हुए मोमो को गीले सूती कपड़े से ढक दें ताकि मोमो सूखें नहीं।
- मोमो स्टीमर पर हल्का-सा तेल लगाएं और उसमें मोमो को रखकर 10 से 15 मिनट तक पकाएं। इसे चटनी के साथ गरमागरम सर्व करें।

खराब फॉर्म से जूझ रही KKR का सामना आज हैदराबाद से

पैट कमिंस (कप्तान)

कोलकाता। तीन में से दो मैच हार चुकी गत चैम्पियन कोलकाता नाइट राइडर्स और पिछले साल फाइनल खेलने वाली सनराइजर्स हैदराबाद बृहस्पतिवार को आईपीएल मैच में आमने सामने होंगी तो उनका लक्ष्य जीत की राह पर लौटने का होगा। KKR के कप्तान अजिंक्य रहाणे ने सत्र के पहले मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू से मिली हार के बाद कहा था कि अभी घबराने की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन तीन मैचों में दो हार के बाद अब टीम का मनोबल थोड़ा गिरा होगा। पिछले सत्र में KKR ने सिर्फ तीन मैच गंवाए थे। अब फोकस एक बार फिर ईडन गार्डंस की पिच पर होगा चूंकि RCB से 7 विकेट से मिली हार के बाद इसकी काफी आलोचना हुई है। KKR के पूर्व सलामी बल्लेबाज फिल साल्ट और विराट कोहली ने 175 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सिर्फ 51 गेंद में 95 रन की साझेदारी करके RCB को जीत दिलाई थी। बंगाल क्रिकेट संघ पर दबाव है कि स्पिनरों से भरी KKR टीम के अनुकूल पिच बनवाई जाए। KKR के पास सुनील नारायण, मोईन अली और वरूण चक्रवर्ती जैसे धुरंधर स्पिनर हैं। पिछले महीने चैम्पियंस ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन करके आए स्पिनर चक्रवर्ती ने RCB के खिलाफ 10.75 प्रति ओवर की दर से रन दिए। रिपोर्ट की मानें तो ईडन गार्डंस के पिच क्यूरेटर सुजन मुखर्जी ने पहले मैच में स्पिनरों की मददगार पिच बनाने का KKR का अनुरोध खारिज कर दिया था और यह फैसला टीम पर भारी पड़ गया। चक्रवर्ती ने उस मैच में 45 रन दिए। मुखर्जी ने अपने फैसले को सही ठहराया लेकिन अब कैब अध्यक्ष स्नेहाशीष गांगुली खुद क्यूरेटर के साथ पिच का मुआयना कर रहे हैं जिससे आगामी मैचों में पिच में बदलाव देखा जा सकता है। पिच के अलावा KKR टीम संयोजन को लेकर भी काफी सवाल हैं। उनकी गेंदबाजी और बल्लेबाजी में तालमेल नजर नहीं आ रहा और स्टार खिलाड़ी चल नहीं रहे हैं। KKR ने जिन चार खिलाड़ियों को नीलामी से पहले रिलीज किया था, उन सभी ने आईपीएल के पहले 10 दिन में शानदार प्रदर्शन किया है। इनमें पूर्व कप्तान श्रेयस अय्यर (पंजाब किंग्स), उपकप्तान नीतिश राणा (राजस्थान रॉयल्स), फिल साल्ट (RCB) और तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क (दिल्ली कैपिटल्स) शामिल हैं। स्टार्क के जाने से KKR की तेज गेंदबाजी काफी कमजोर हुई है। वहीं स्टार्क ने दिल्ली के लिये सनराइजर्स के खिलाफ 35 रन देकर 5 विकेट लिए। स्टार्क की जगह आए स्पेंसर जॉनसन प्रभावित नहीं कर सके हैं जबकि एनरिच नॉर्किया चोट के कारण बाहर हैं। मोटे दाम पर खरीदे गए वेंकटेश अय्यर दो मैचों में 9 रन ही बना सके हैं।

सनराइजर्स हैदराबाद

ट्रैविस हेड, अभिषेक शर्मा, ईशान किशन, नितीश कुमार रेड्डी, हेनरिक क्लासेन (विकेटकीपर), अनिकेत वर्मा, अभिनव मनोहर, पैट कमिंस (कप्तान), जीशान अंसारी, हर्षल पटेल, मोहम्मद शमी, वियान मुल्डर

कोलकाता नाइट राइडर्स

सुनील नरेन, क्विंटन डी कॉक (विकेटकीपर), अजिंक्य रहाणे (कप्तान), वेंकटेश अय्यर, अंगकृष रघुवंशी, रिंकू सिंह, आंद्रे रसेल, रमनदीप सिंह, स्पेंसर जॉनसन, हर्षित राणा, वरुण चक्रवर्ती, मनीष पांडे

अजिंक्य रहाणे (कप्तान)

आज का मैच

TATA IPL

शाम 7.30 बजे

कोलकाता VS हैदराबाद

यशस्वी जायसवाल ने मुंबई क्रिकेट का साथ छोड़ा

मुंबई। भारत के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने निजी कारणों का हवाला देते हुए अपनी घरेलू टीम मुंबई को छोड़ने का फैसला किया है जिसने उन्हें क्रिकेटर बनाया है। जायसवाल ने मंगलवार को मुंबई क्रिकेट संघ को पत्र लिखकर मुंबई छोड़कर गोवा में जाने की इच्छा जताई और संचालन संस्था ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया है। जायसवाल के इस चौंकाने वाले कदम से 23 वर्षीय बाएं हाथ के खिलाड़ी 2025-26 सीजन से गोवा के लिए खेलेंगे। एमसीए के एक अधिकारी ने बताया, 'हां, यह आश्चर्यजनक है। उन्होंने ऐसा कदम उठाने के लिए कुछ सोचा होगा। उन्होंने हमसे खुद को मुक्त करने का अनुरोध किया है और हमने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया है।' जायसवाल ने आखिरी बार मुंबई के लिए 23-25 जनवरी तक जम्मू और कश्मीर के खिलाफ रणजी ट्रॉफी ग्रुप ए लीग राउंड मैच में खेला था। जायसवाल ने रणजी ट्रॉफी 2024-25 सीजन में अपनी एकमात्र उपस्थिति दर्ज की थी, जिसमें उन्होंने 4 और 26 रन बनाए थे और मुंबई टूर्नामेंट के इतिहास में दूसरी बार जम्मू और कश्मीर से 5 विकेट से हार गई थी। जुलाई 2023 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद से जायसवाल भारत के पहले पसंद के सलामी बल्लेबाज रहे हैं।

पंजाब ने लखनऊ को आठ विकेट से रौंदा

प्रभसिमरन रहे मैच के हीरो, अय्यर और अर्शदीप ने भी बिखेरा जादू

लखनऊ। आईपीएल 2025 के 13वें मैच में पंजाब किंग्स ने लखनऊ सुपर जायंट्स को उनके ही घर में 22 गेंद बाकी रहते हुए 8 विकेट से हरा दिया है। इसके साथ ही पंजाब किंग्स ने श्रेयस अय्यर की कप्तानी में अपने दूसरे मैच में दूसरी जीत हासिल कर ली है। इस मैच में शानदार प्रदर्शन के लिए प्रभसिमरन सिंह को प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड मिला। इसमें श्रेयस अय्यर टॉस जीतकर ऋषभ पंत को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया। लखनऊ की टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 171 रन बनाए. पंजाब ने 16.2 ओवर में 2 विकेट गंवाकर 177 रन बनाकर आठ विकेट से जीत दर्ज कर ली। पंजाब के लिए प्रभसिमरन सिंह ने अर्धशतकीय पारी खेली, जबकि अर्शदीप सिंह ने 3 विकेट अपने नाम किए।

लखनऊ से जीत के लिए मिले 172 रनों के टारगेट का पीछा करने के लिए पंजाब की ओर से प्रभसिमरन सिंह और प्रियांश आर्य ने पारी की शुरुआत की। आर्य 8 रन बनाकर चलते बने लेकिन सिंह ने धमाकेदार पारी खेलते हुए अर्धशतक लगाया। उन्होंने 23 बॉल में 6 चौके और 3 छक्कों के साथ अपना अर्धशतक पूरा किया। प्रभसिमरन ने 34 बॉल में 9 चौके और 3 छक्कों के साथ 69 रनों की पारी खेली।

प्रभसिमरन सिंह के अलावा श्रेयस अय्यर ने भी अर्धशतक लगाया। उन्होंने 30 बॉल में 3 चौके और 4 छक्कों के साथ नाबाद 52 रनों की पारी खेली। टीम के लिए नेहाल वढेरा ने 25 बॉल में 43 रनों का योगदान दिया, जिसमें 3 चौके और 4 छक्के शामिल थे। लखनऊ की ओर से सबसे ज्यादा रन निकोलस पूरन ने बाए। उन्होंने 30 बॉल में 5 चौके और 2 छक्कों के साथ 44 रनों की पारी खेली। उनके अलावा आयुष बडोनी 33 बॉल में 1 चौके और 3 छक्कों के साथ 41 रनों की पारी खेलकर पवेलियन लौटे। पंजाब की ओर से सबसे ज्यादा विकेट अर्शदीप सिंह ने चटकाए। उन्होंने 4 ओवर में 43 रन देकर 3 विकेट हासिल किए।

भारतीय महिला हॉकी खिलाड़ी वंदना कटारिया ने किया संन्यास का ऐलान

वंदना 320 मैच 158 गोल

नई दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम की स्टार खिलाड़ी वंदना कटारिया ने मंगलवार, 1 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय हॉकी से संन्यास की घोषणा की है। कटारिया ने 2009 में इंटरनेशनल डेब्यू किया था और वह टोक्यो ओलंपिक 2020 में चौथे स्थान पर रहने वाली भारतीय टीम का भी हिस्सा थीं। 32 वर्षीय वंदना ने रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराया क्योंकि वह ओलंपिक में हैट्रिक बनाने वाली पहली और एकमात्र भारतीय महिला खिलाड़ी बनीं। वह 320 अंतरराष्ट्रीय मैचों के साथ भारतीय महिला हॉकी में सबसे अधिक कैप्ड खिलाड़ी भी हैं और उन्होंने इन मुकाबलों में 158 गोल किए हैं। अपने लगभग 15 साल के करियर के दौरान, कटारिया ने 2 ओलंपिक गेम्स (रियो 2016, टोक्यो 2020), 2 FIH हॉकी महिला विश्व कप (2018, 2022), 3 राष्ट्रमंडल खेलों (2014, 2018, 2022) और 3 एशियाई खेलों (2014, 2018, 2022) में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इस प्रकार, उन्होंने राष्ट्रीय टीम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उन्हें टूर्नामेंट में प्रभावशाली प्रदर्शन करने में मदद मिली। 32 वर्षीय कटारिया ने महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी (2016, 2023) और FIH हॉकी महिला राष्ट्र कप (2022) में भारत को स्वर्ण पदक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने एशियाई खेल 2018, महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी जापान 2013 और महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी डोंगहे 2018 में रजत पदक जीतने वाली टीम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संन्यास लेने के अपने फैसले पर विचार करते हुए, कटारिया ने कहा कि यह निर्णय आसान नहीं था, लेकिन खेल से दूर जाने का यह सही समय था। कटारिया ने कहा, 'यह फैसला आसान नहीं था, लेकिन मुझे पता है कि यह सही समय है. जब से मैं याद कर सकती हूं, हॉकी मेरी जिंदगी रही है और भारतीय जर्सी पहनना सबसे बड़ा सम्मान था। लेकिन हर यात्रा का अपना रास्ता होता है और मैं इस खेल के लिए अपार गर्व, कृतज्ञता और प्यार के साथ इसे छोड़ रही हूं।

रिजवान की कप्तानी वाली पाकिस्तान टीम को झटका

आईसीसी ने लगाया जुर्माना

दुबई। पाकिस्तान पर नेपियर में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए पहले एकदिवसीय मैच में धीमी ओवर गति के लिए मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) एलीट पैनल के मैच रेफरी जेफ क्रो ने मोहम्मद रिजवान की अगुआई वाली पाकिस्तान की टीम निर्धारित समय सीमा में दो ओवर कम फेंकने का दोषी पाए जाने पर यह जुर्माना लगाया है। आईसीसी मीडिया बयान में कहा गया कि रिजवान ने अपराध और जुर्माना स्वीकार कर लिया है इसलिए इस पर औपचारिक सुनवाई की आवश्यकता नहीं रह गई। यह आरोप मैदानी अंपायर क्रिस ब्राउन और पॉल रीफेल, तीसरे अंपायर माइकल गॉफ और चौथे अंपायर वेन नाइट्स द्वारा लगाया गया था।

मैच की बात करें तो मार्क चैपमैन (132 रन) और डेरिल मिचेल (76) के बीच 199 रन की साझेदारी के दम पर न्यूजीलैंड ने पहले वनडे में 9 विकेट पर 344 रन बनाए। इसके जवाब में बाबर आजम (78) और सलमान आगा (58) की अर्धशतकीय पारियों ने मैच के दौरान उम्मीद तो जगाई लेकिन इसे पूरा नहीं कर पाए।

पाकिस्तान की पुरुष हॉकी टीम एशिया कप खेलने आएगी भारत

राजगीर। भारत और पाकिस्तान की क्रिकेट टीमों ने एक-दूसरे के देशों में नहीं खेलने का फैसला किया है, इसके बाद भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान जाने से मना कर दिया है, लेकिन पाकिस्तान की पुरुष हॉकी टीम भारत आने के लिए पूरी तरह तैयार है। टीम एशिया कप में भाग लेने के लिए भारत आएगी, जिसका आयोजन 29 अगस्त से 7 सितंबर तक बिहार के राजगीर में नवनिर्मित खेल परिसर में किया जाएगा। पाकिस्तान ने आखिरी बार 2023 में चेन्नई में एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया था और छह टीमों के इस आयोजन में पांचवें स्थान पर रहा था। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप तिर्की ने कहा कि वह भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले रोमांचक मुकाबले का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच दुनिया में कहीं भी होने वाला कोई भी मैच हमेशा रोमांचक और देखने लायक होता है। 2023 में जब चेन्नई में एसीटी का आयोजन हुआ था, तो दोनों टीमों ने अच्छा खेल दिखाया था। मुझे उम्मीद है कि राजगीर में जब दोनों टीमें आमने-सामने होंगी, तो भी ऐसा ही होगा, जिसके लिए प्रशंसक बड़ी संख्या में आएंगे। पाकिस्तान की फुटबॉल टीम भी SAFF चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए 2023 में भारत आई थी। उसी वर्ष भारतीय ब्रिज टीम ने लाहौर में ब्रिज फेडरेशन ऑफ एशिया और मिडिल-ईस्ट चैंपियनशिप (BFAME) में भाग लेने के लिए पाकिस्तान की यात्रा की और चार स्वर्ण पदक जीते थे।

लखनऊ की पिच पर बरसे जहीर खान

ऐसा लग रहा था कि पंजाब के क्यूरेटर ने इसे बनाया

लखनऊ। तीन मैचों में से दो हार चुकी लखनऊ सुपर जाइंट्स टीम के मेंटोर जहीर खान ने पंजाब किंग्स से मिली पराजय के बाद इकाना स्टेडियम की पिच की पर भड़ास निकालते हुए कहा कि ऐसा लग रहा था कि पंजाब के क्यूरेटर ने इसे तैयार किया है। असमान उछाल वाली पिच पर 172 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पंजाब ने प्रभसिमरन सिंह के 34 गेंद में 69 रन की मदद से आठ विकेट से जीत दर्ज की। जहीर ने मैच के बाद कहा, 'मैं इसलिए थोड़ा निराश हूं कि यह घरेलू मैच था और आईपीएल में आपने देखा है कि टीमों को घरेलू मैदानों पर खेलने का फायदा मिलता है। इस लिहाज से मुझे लगता है कि क्यूरेटर ने यह नहीं सोचा कि यह घरेलू मैच है। ऐसा लग रहा था कि पंजाब के क्यूरेटर यहां थे।' लखनऊ सुपर जाइंट्स से जुड़ने से पहले मुंबई इंडियंस के क्रिकेट विकास वैश्विक प्रमुख रहे जहीर ने कहा कि इस वजह से घरेलू प्रशंसकों को अपनी टीम को जीतते देखने का मौका नहीं मिला। उन्होंने कहा, 'इस पर बात करनी होगी। मेरे लिए यह नई टीम है लेकिन उम्मीद है कि आगे से किसी मैच में ऐसा नहीं होगा क्योंकि आप अपने प्रशंसकों को भी निराश कर रहे हैं। वे यहां पहला घरेलू मैच जीतते देखने की उम्मीद लेकर आए थे।' उन्होंने कहा कि हार के बावजूद उनका फोकस नतीजों की बजाय प्रक्रिया पर रहेगा। उन्होंने कहा, 'यह सत्र का तीसरा मैच है और हमने अक्सर बोला है कि टीम इस सत्र में कैसी है। हम प्रक्रिया पर फोकस कर रहे हैं, नतीजों पर नहीं। हमें कुछ पहलुओं पर काम करना होगा।' भारत के पूर्व तेज गेंदबाज ने कहा कि कुछ खिलाड़ियों की चोटों को लेकर वह चिंतित नही हैं और अच्छी बात यह है कि हार के बावजूद टीम ने प्रभाव छोड़ा है।

श्रेयस अय्यर ने IPL में दर्ज किया बड़ा रिकॉर्ड

धोनी और रोहित के क्लब में मारी एंट्री

नई दिल्ली। पंजाब किंग्स के कप्तान श्रेयस अय्यर ने लखनऊ सुपर जायंट्स को 8 विकेट से धूल चटा दी। इस जीत के साथ ही श्रेयस ने एक खास मुकाम हासिल कर लिया है। वह आईपीएल में सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले पांचवें कप्तान बन गए हैं। उन्होंने डेविड वॉर्नर को पीछे छोड़ दिया और एमएस धोनी, रोहित शर्मा, गौतम गंभीर और विराट कोहली के क्लब में एंट्री मारी ली है।

श्रेयस अय्यर ने 72 मैचों में कप्तानी करते हुए 42 मैच में जीत हासिल की है। इसके साथ ही उन्होंने 83 मैचों में 40 जीत बतौर कप्तान हासिल करने वाले डेविड वॉर्नर को पीछे छोड़ दिया है। एमएस धोनी ने 226 मैचों में कप्तानी की और 133 जीत दर्ज की है। रोहित शर्मा ने 158 मैचों में से 89 मैच बतौर कप्तानी जीते हैं। गौतम गंभीर 129 मैचों में कप्तान के तौर पर 71 जीत अपने नाम दर्ज कर चुके हैं। विराट कोहली 143 मैचों में 68 जीत हासिल कर चुके हैं।

कप्तान अय्यर की शानदार पारी के बाद बोले रिकी पोंटिंग

रोल्स रॉयस अभी भी तीसरे गियर में है

लखनऊ। पंजाब किंग्स के मुख्य कोच रिकी पोंटिंग ने कप्तान श्रेयस अय्यर की तुलना 'तीसरे गियर में रोल्स रॉयस' से की। उनकी यह प्रतिक्रिया अय्यर के लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ अपनी टीम की बड़ी जीत के लिए शानदार अर्धशतक बनाने के बाद आई। पोंटिंग ने अपनी टीम के साथ बातचीत में खिलाड़ियों को याद दिलाया कि आईपीएल 2025 अभियान के दौरान किसी भी चीज को हल्के में न लें। अय्यर ने नाबाद 52 रन बनाए जो उनका दूसरा नाबाद अर्धशतक है जिससे पंजाब ने 172 रन के लक्ष्य को 16.2 ओवर में दो विकेट खोकर हासिल कर लिया। सलामी बल्लेबाज प्रभसिमरन सिंह ने 34 गेंदों में 69 रनों की धमाकेदार पारी खेलकर पंजाब को शानदार शुरुआत दिलाई जबकि नेहल वढेरा (25 गेंदों में नाबाद 43) ने भी आत्मविश्वास हासिल किया और अंत में आसान रन बनाए। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान ने कहा, 'कप्तान (अय्यर) ने फिर से आसानी से जीत दर्ज की। रोल्स-रॉयस दिन के अधिकांश समय तीसरे गियर में ही रहा। इससे ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं थी। बस जहाज को घर की ओर ले गया। आपको अभी तक औसत नहीं मिला है।' अय्यर को आईपीएल 2025 में अभी तक आउट नहीं किया गया है, उन्होंने गुजरात टाइटन्स के खिलाफ पहले मैच में नाबाद 97 रन बनाए थे। वह वर्तमान में 149 रन के साथ सीजन में दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। ऑस्ट्रेलियाई महान खिलाड़ी ने अपने खिलाड़ियों से अपने काम के प्रति दृढ़ता से प्रतिबद्ध रहने को कहा क्योंकि यह एक लंबा और थकाऊ टूर्नामेंट है। उन्होंने कहा, 'हम जो कुछ भी कर रहे हैं, उसे हल्के में न लें। हमारा रवैया बिल्कुल सही रहा है। हम अभी शुरुआत कर रहे हैं। इसलिए आइए एक परिवार के रूप में एक साथ कड़ी मेहनत करते रहें। और हम हर दिन बेहतर होते जाएंगे।'

पंजाब के घरेलू टीम के बल्लेबाजों को बांधे रखने में सफल होने का एक कारण गेंदबाजों द्वारा पहली गेंद से ही बनाए रखी गई मजबूत पकड़ थी और पोंटिंग ने कहा कि इससे बहुत बड़ा अंतर पैदा हुआ। उन्होंने कहा कि आज पहले गेंदबाजी करते हुए अर्शदीप (सिंह) का पहला ओवर तीन रन के लिए गया, लॉकी (फर्ग्यूसन) ने एक ओवर में चार (रन) दिए। पावर प्ले में दो ओवर में 7 रन पर 1 विकेट। हम पावर प्ले में 35 रन पर 3 विकेट लेते हैं। पावर प्ले में चार ओवर में केवल 13 रन दिए गए।

टी-20 गेंदबाजी रैंकिंग में तीसरे स्थान पर खिसके चक्रवर्ती

हार्दिक पांड्या ऑलराउंडरों में शीर्ष पर

दुबई। भारत के रहस्यमयी स्पिनर वरुण चक्रवर्ती अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की पुरुष टी-20 गेंदबाजी रैंकिंग में एक स्थान गिरकर तीसरे स्थान पर खिसक गए जबकि हार्दिक पांड्या बुधवार को जारी ऑलराउंडर रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। चक्रवर्ती 706 रेटिंग अंक के साथ न्यूजीलैंड के जेकब डफी (723) और वेस्टइंडीज के अकील हुसैन (707) से पीछे हैं। लेग स्पिनर रवि बिश्नोई (674) और बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह (653) क्रमशः सातवें और 10वें स्थान के साथ शीर्ष 10 में शामिल अन्य दो भारतीय गेंदबाज हैं। अक्षर पटेल 13वें स्थान पर हैं। भारत के बाएं हाथ के युवा सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा टी-20 बल्लेबाजी रैंकिंग में दूसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड शीर्ष पर हैं जबकि इंग्लैंड के फिल सॉल्ट तीसरे स्थान पर हैं। दो अन्य भारतीय बल्लेबाज तिलक वर्मा और सूर्यकुमार यादव क्रमशः चौथे और पांचवें स्थान पर हैं। पांड्या 252 रेटिंग अंक के साथ ऑलराउंडर की सूची में शीर्ष स्थान पर बने हुए हैं। उनके बाद नेपाल के दीपेंद्र सिंह ऐरी और ऑस्ट्रेलिया के मार्कस स्टोइनिस का नंबर आता है।

उर्वशी रौतेला ने मचाया धमाल

बहुप्रतीक्षित एक्शन से भरपूर फिल्म जाट का धमाकेदार डांस नंबर 'टच किया' रिलीज़ हो गया है। गाना 'टच किया' में ग्लैमरस अभिनेत्री उर्वशी रौतेला के साथ खतरनाक विलेन जोड़ी रणदीप हुड्डा और विनीत कुमार सिंह नजर आ रहे हैं। यह हाई-एनर्जी गाना , जिसे मधुबंती बागची और शाहिद मल्ल्या ने गाया है, कुमार ने लिखा है और थमन एस ने कंपोज किया है।

■ गोपिचंद मालिनेनी निर्देशित फिल्म जाट में सनी देओल मुख्य भूमिका में हैं, साथ ही रणदीप हुड्डा, विनीत कुमार सिंह, सैयामी खेर और रेजिना कैसेंड्रा की भी अहम भूमिका है। इस फिल्म का निर्माण मायथ्री मूवी मेकर्स और पीपल मीडिया फैक्टरी के सहयोग से किया गया है। फिल्म के हाई-ऑक्टेन एक्शन सीक्वेंस को अनल अरासु, राम लक्ष्मण और वेंकट ने शानदार ढंग से तैयार किया है ।थमन एस का जोशीला संगीत और ऋषि पंजाबी की शानदार सिनेमैटोग्राफी फिल्म के अनुभव को और बेहतर बनाती है। नवीन नूली ने संपादन और अविनाश कोल्ला ने प्रोडक्शन डिज़ाइन किया है। फिल्म जाट 10 अप्रैल को रिलीज होगी।

होश उड़ाने आ रहा अक्षय की केसरी चैप्टर 2 का ट्रेलर

बॉलीवुड सुपरस्टार अक्षय कुमार अप्रैल में दो फिल्मों में दिखाई देंगे. साउथ एक्टर विष्णु मांचू की फिल्म 'कन्नप्पा' में नजर आने से पहले अक्षय कुमार केसरी चैप्टर 2 लेकर आ रहे हैं. हाल ही में अक्षय ने अपनी इस फिल्म का टीजर शेयर किया था जिसे फैंस ने खूब प्यार दिया था. अब फिल्म का ट्रेलर रिलीज के लिए तैयार है.केसरी चैप्टर 2 को लेकर अच्छा खासा बना हुआ है. फिल्म जल्द ही सिनेमाघरों में दस्तक देगी. जबकि अब मेकर्स ने इसके ट्रेलर की रिलीज डेट का ऐलान कर दिया है. अक्षय ने खुद भी सोशल मीडिया पर ये जानकारी शेयर की है. आइए जानते हैं कि केसरी चैप्टर 2 का ट्रेलर कब फैंस के होश उड़ाने आ रहा है. अक्षय कुमार ने फिल्म के ट्रेलर को लेकर सोशल मीडिया पर बड़ा अपडेट दिया है. इसका ट्रेलर 3 अप्रैल को लॉन्च होने वाला है. उन्होंने एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, "1650 गोलियां, 10 मिनट और 1 आदमी जिसने इन सबके खिलाफ दहाड़ लगाई।

'द लीजेंड ऑफ हनुमान' सीजन 6 का ट्रेलर जारी

'द लीजेंड ऑफ हनुमान' सीजन 6 का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर रिलीज हो गया है। 'द लीजेंड ऑफ हनुमान' सीजन 6 में रावण को आवाज़ देने वाले शरद केलकर ने कहा, हर बार जब मैं इस सीजन का ट्रेलर देखता हूं, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह ना सिर्फ पहले से अधिक भव्य और भावनात्मक रूप से गहरा है, बल्कि इसकी कहानी और भी रोमांचक और प्रेरक है। ऐसा लगता है मानो इतिहास का कोई स्वर्णिम अध्याय सजीव होकर हमारी आंखों के सामने उतर आया हो। हम सभी जानते हैं कि भगवान हनुमान ने संजीवनी बूटी लेकर लक्ष्मण की रक्षा की थी, लेकिन इस बार हम उस पूरे आध्यात्मिक और साहसिक सफर को महसूस करेंगे।

काजोल की गोद में दिखने वाली छोटी बच्ची सिनेमा में करती है राज

बॉक्स ऑफिस पर दे चुकी है 300 करोड़ की फिल्म

बॉलीवुड के कई ऐसे फेमस सेलेब्स हैं, जो बचपन से ही बड़े पर्दे पर अपनी कमाल की एक्टिंग का लोहा मनवाते हुए नजर आ रहे हैं। इस कड़ी में आज हम हिंदी सिनेमा की एक फेमस एक्ट्रेस के बारे में बात करेंगे, जो छोटे से ही फिल्म लाइन में एक्टिव हैं। उनको बी टाउन की दिग्गज अभिनेत्री काजोल (Kajol) के साथ 90 के दशक की हिट फिल्म इश्क में देखा गया था। मौजूदा समय में वह अदाकारा फैंस की फेवरेट मानी जाती हैं। सिर्फ इतना ही नहीं ये एक्ट्रेस बॉक्स ऑफिस पर एक 300 करोड़ की फिल्म भी दे चुकी हैं। आइए जानते हैं कि वह हसीना कौन है।

सेलेब्स के बचपन की फोटो हमेशा से फैंस के बीच चर्चा का विषय बनती हैं। इस कड़ी में नया नाम अब एक खूबसूरत अदाकारा का शामिल हो रहा है। दरअसल ये फोटो 1997 में आई रोमांटिक कॉमेडी फिल्म इश्क के एक सीन के दौरान की है। काजोल, अजय देवगन, जूही चावला और आमिर खान के अलावा इश्क में इस छोटी बच्ची को भी दिखाया गया है। काजोल की गोद में पिंक ड्रेस में दिखने वाली ये बच्ची बचपन से क्यूट है और आज इसे बॉलीवुड की ब्यूटी कहा जाता है।

बता दें कि ये अभिनेत्री कोई और नहीं बल्कि फातिमा सना शेख (Fatima Sana Shaikh) हैं। जी हां कॉमेडियन भारती के पॉडकास्ट के दौरान फातिमा ने इस बात का खुद खुलासा किया था कि इश्क में काजोल की गोद में दिखने वाली छोटी बच्ची वही थीं। सिर्फ इश्क ही नहीं बल्कि बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट फातिमा सना शेख शाह रुख खान की वन टू का फॉर और साउथ सुपरस्टार कमल हासन की चाची 420 जैसी कई मूवीज में भी दिखाई दे चुकी हैं। हालांकि, फातिमा को सबसे अधिक लोकप्रियता सुपरस्टार आमिर खान की ब्लॉकबस्टर फिल्म दंगल (Dangal) से मिली, जिसमें उन्होंने रेसलर गीता फोगाट का किरदार निभाया था।

420 जैसी कई मूवीज में भी दिखाई दे चुकी हैं

फातिमा के नाम 300 करोड़ की फिल्म

मौजूदा समय में फातिमा सना शेख का नाम बी टाउन की उभरती हुई अदाकाराओं में शुमार हैं। जिसमें दंगल की सफलता ने अहम भूमिका निभाई है।

बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के अनुसार फातिमा की दंगल ने बॉक्स ऑफिस पर 390 करोड़ के करीब कमाई की थी, जबकि इसका ग्लोबली कलेक्शन 2000 करोड़ से ज्यादा रहा था।

इसके अलावा फातिमा सना शेख कई फिल्मों में नजर आ चुकी हैं-

ठग्स ऑफ हिंदुस्तान

लूडो

सूरज पर मंगल भारी

थार

धक धक

मालूम हो कि आने वाले समय में फातिमा बतौर एक्ट्रेस निर्देशक अनुराग बासु की अपकमिंग मूवी मेट्रो इन दिनों... में दिखाई देंगे।

बॉबी देओल का खुलासा

मां प्रकाश कौर हमेशा देती हैं धर्मेंद्र का साथ

अभिनेता बॉबी देओल अक्सर अपने इंटरव्यूज में अपने पिता धर्मेंद्र संग अपने रिश्तों को लेकर बात करते हैं। हाल ही में बॉलीवुड हंगामा को दिए एक इंटरव्यू में एक्टर ने खुलासा किया कि उनके पिता और मां प्रकाश कौर ने ही उन्हें बनाया है वो आज जो कुछ भी हैं। बॉबी ने अपनी पत्नी तान्या देओल को भी श्रेय दिया। बॉबी ने आगे बताया कि कठिनाइयों और पर्सनल स्ट्रगल्स के बावजूद पिता ने उन्हें एक संतोषजनक जीवन जिया।

जब उनसे पूछा गया कि आपके पिता या फिर आप दोनों भाईयों ने किसने अपना जीवन पूरी तरह से जिया है, तो बॉबी ने जवाब दिया, "मुझे लगता है कि मेरे पिता। उन्होंने जिस तरह से जीना चाहा, वैसा ही जिया। मुझे लगता है कि फ्रैंक सिनात्रा का गाना 'आई डिड इट माई वे' उन पर बहुत सूट करता है। यह उनके जैसा ही है।"

89 साल की उम्र में भी, दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र दर्शकों के सामने अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए जुड़े रहते हैं। फैंस अभी भी उनके घर के बाहर पोस्टर लेकर भीड़ लगाते हैं। बॉबी ने कहा, "जब से उन्होंने अपना काम शुरू किया और इंडस्ट्री में प्रवेश किया, तब से वे लोगों से कभी इस तरह नहीं मिले जैसे एक स्टार किसी से मिलता है। वे हमेशा उनसे एक इंसान के तौर पर मिले। वे उनसे जुड़े हुए हैं। उन्होंने इतने सारे लोगों के लिए बहुत कुछ किया है। वे दिल से इसके बारे में बहुत सच्चे हैं। मुझे लगता है कि यही वजह है कि देओल्स के लिए आज भी प्यार बना हुआ है। यह सब उन्हीं की बदौलत है।"

अगले शेड्यूल के लिए अभिनेत्री नयनतारा मुंबई पहुंची

हाल ही में मुंबई एयरपोर्ट पर देखा गया

दक्षिण भारतीय फिल्मों की जानीमानी अभिनेत्री नयनतारा फिल्म टॉक्सिकः ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स के अगले शेड्यूल के लिए मुंबई पहुंच गयी हैं। अखिल भारतीय फिल्म, टॉक्सिकः ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स, सिनेमा के इतिहास की सबसे बड़ी फिल्मों में से एक बनने के लिए तैयार है। वर्तमान में फिल्मांकन चरण में, प्रोडक्शन अब अपने नवीनतम शूटिंग शेड्यूल के लिए मुंबई चला गया है। उत्साह को बढ़ाते हुए, अभिनेत्री नयनतारा भी मुंबई पहुंचकर शूटिंग में शामिल हो गईं।

नयनतारा को हाल ही में मुंबई एयरपोर्ट पर देखा गया, जिसमें वह अपनी विशिष्ट शान और सहज शैली में नजर आईं। टीम मुंबई, गोवा और बेंगलुरु सहित कई स्थानों पर बड़े पैमाने पर फिल्मांकन कर रही है, जिससे रोमांच और तमाशा की दुनिया बन रही है ।कुछ ही दिन पहले, रॉकिंग स्टार यश भी मुंबई पहुंचे। टॉक्सिकः ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स का निर्माण वेंकट के. नारायण और यश ने केवीएन प्रोडक्शंस और मॉन्स्टर माइंड क्रिएशंस के तहत संयुक्त रूप से किया है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना का नेतृत्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित फिल्म निर्माता गीतू मोहनदास कर रही हैं।1

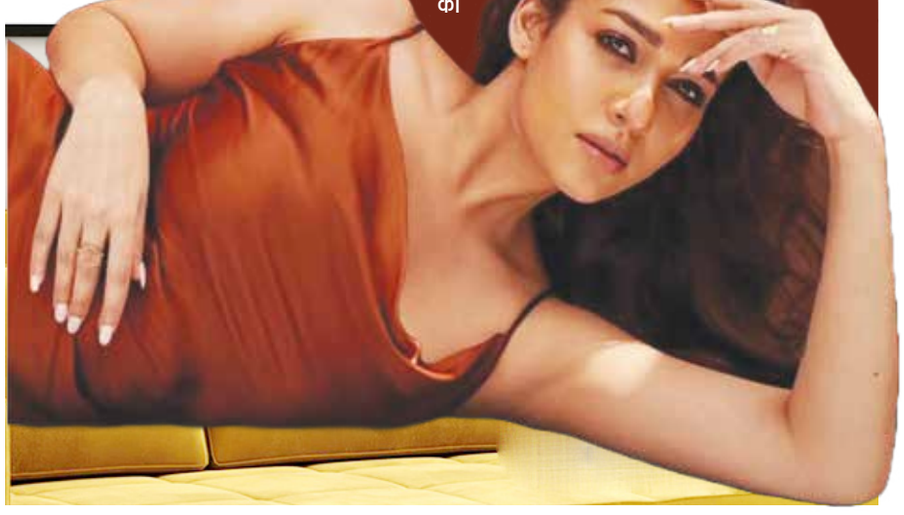

रणवीर इलाहाबादिया का 'पुनर्जन्म', अपूर्वा मखीजा ने डिलीट की सारी पोस्ट, सभी को किया अनफॉलो, क्या है माजरा?

समय रैना के शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' को लेकर काफी विवाद हुआ था। रणवीर इलाहाबादिया के विवादित कमेंट ने जमकर बवाल काटा था। इसकी गाज समय रैना, आशीष चंचलानी और अपूर्वा मखीजा पर भी गिरी और सब कुछ बदलकर रख दिया। ऐसे में अब अपूर्वा मखीजा ने बड़ा कदम उठाया है। 'द रेबेल किड' के नाम से फेमस यूट्यूबर अपूर्वा मखीजा (Apoorva Mukhija) समय रैना के शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' को लेकर हुए विवादों के बाद काफी चर्चा में रहीं। इस शो में रणवीर इलाहाबादिया ने पेरेंट्स के संबंधों को लेकर विवादित कमेंट किया था, जिसके बाद काफी बड़ा बवाल खड़ा हो गया था। उनका सोशल मीडिया पर लोगों ने काफी विरोध किया था और बाद में इस विवाद ने राजनीतिक मोड़ ले लिया था। माहौल काफी गरमा गया था। इस विवाद की गाज समय रैना, आशीष चंचलानी और अपूर्वा मखीजा पर भी गिरी थी, जिसके बाद सभी की लाइफ पूरी तरह से चेंज हो गई और काफी उथल-पुथल रही। रणवीर ने अपनी नई शुरुआत कर ली है और उनके पॉडकास्ट का पहला एपिसोड विवादों के बाद रिलीज किया गया। इसी बीच अब अपूर्वा मखीजा का ने अपनी सभी इंस्टाग्राम पोस्ट को डिलीट कर दिया है।

यूट्यूबर अपूर्वा मखीजा ने बड़ा कदम उठाते हुए 1 अप्रैल 2025 को अपने इंस्टाग्राम से अपने सारे पोस्ट डिलीट कर दिए। इसकी वजह से सभी शॉक्ड हैं। कुछ लोग इसे अप्रैल फूल डे की वजह से मजाक के तौर पर ले रहे हैं। हालांकि, यूट्यूबर की ओर से इसे लेकर ना कुछ कहा गया है और ना ही कुछ नई चीजों का ऐलान किया गया है। अपूर्वा के इंस्टाग्राम पर 3 मिलियन से ज्यादा फॉलोअर्स हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने पोस्ट को तो डिलीट किया ही है साथ ही सभी को अनफॉलो भी कर दिया है। उन्होंने ऐसा तब किया जब रणवीर अपने नए पॉडकास्ट और रीबर्थ वाली पोस्ट को लेकर चर्चा में हैं।

जल्द टीवी शोज में नजर आने वाली हैं गोविंदा की पत्नी सुनीता आहूजा, बोलीं- आई विल रॉक

मोहनलाल और पृथ्वीराज सुकुमारन की फिल्म 'L2 Empuraan' को 17 नहीं बल्कि 24 कट्स के बाद सिनेमाघरों में दोबारा से रिलीज करने की तैयारी की जा रही है। फिल्म से केंद्रीय पर्यटन राज्य मंत्री सुरेश गोपी का नाम भी हटा दिया गया है। उन्होंने गुजारिश की थी थैंक्यू पेज से उनका नाम हटा दिया जाए। फिल्म में गुजरात दंगों से लेकर कई सीन्स थे, जिस पर आपत्ति जताई गई थी। इसे लेकर काफी विवाद था और एक्टक मोहनलाल ने इसके लिए माफी भी मांगी थी और कहा था कि ऐसे सीन्स को हटा दिया जाएगा। शाहरुख खान की वाइफ और फेमस इंटीरियर डिजाइनर गौरी खान ने मुंबई के दादर वेस्ट वाला अपना आलीशान फ्लैट बेच दिया है। महाराष्ट्र के महानिरीक्षक पंजीकरण (आईजीआर) की वेबसाइट पर उपलब्ध संपत्ति पंजीकरण दस्तावेजों के अनुसार, उन्होंने इस प्रॉपर्टी को 11.61 करोड़ में बेचा है। गौरी ने इसे अगस्त 2022 में 8.5 करोड़ में खरीदा था। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर भद्दी कॉमेडी करने के बाद कॉमेडियन कुणाल कामरा की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। उन्हें मुंबई पुलिस की ओर से तीसरा समन जारी किया गया है। खार पुलिस स्टेशन में उन्हें अपना बयान दर्ज कराने के लिए समन भेजा गया है। 5 अप्रैल को कॉमेडियन को पूछताछ के लिए बुलाया गया है। अमेरिकन एक्टर और कॉमेडियन केविन हार्ट इन दिनों 'एक्टिंग माय एज टूर' को लेकर चर्चा में हैं। इसी बीच तन्मय भट्ट और जाकिर खान एक वीडियो शेयर कर जानकारी दी है कि केविन हार्ट पहली बार भारत में परफॉर्म करने वाले हैं। उनका कॉन्सर्ट दुनियाभर में चलने वाला है और वह इसी कड़ी में भारत में 30 अप्रैल को परफॉर्म करने वाले हैं। वहीं, यूट्यूबर रणवीर इलाहाबादिया पिछले कुछ दिनों से शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' में भद्दे कमेंट्स की वजह से विवादों में थे। ऐसे में अब विवादों से दूर उन्होंने अपने जीवन की नई शुरुआत की है। हाल ही में उनके पॉडकास्ट का पहला एपिसोड भी रिलीज किया गया है। इसी बीच अब खबर सामने आ रही है कि सुप्रीम कोर्ट की ओर से उनके पासपोर्ट को देने से इनकार कर दिया गया है। आपको बता दें कि विवादों के बाद कोर्ट में उनके भद्दे कमेंट की आलोचना की गई थी और अदालत की ओर से फटकार लगाई गई थी। साथ ही उन्हें पुलिस स्टेशन में अपना पासपोर्ट जमा कराने के लिए कहा गया था।